॥ छ्यय श्रीनवकार मंत्र पारम्भः ॥

णमो अरिहंताणं ॥ णमो सिद्धाणं ॥ णमो आ यरियाणं ॥ णमो उवज्जायाणं ॥ णमो लोप सबस हृषं ॥ पसो पंच णमुकारो ॥ सब पावप्पणासणो ॥ मंग

खाणं च सबेसिं॥ पड्मं इवड् मंगदां॥ इति नमस्कारं॥
॥ श्रीनवकार मंत्र छद् ॥
पडो मंत्र नवकार, सदा संकट खवारे। पडो मंः
नवकार, ताव तेजरो निवारे। पडो मंत्र नवकार, जाः
जंकार होवे चरपूरा। पडो मंत्र नवकार, काथर जः
हुवे सूरा। पडो मंत्र नवकार, हाख खापदा टारे
पडो मंत्र नवकार, दाखीड़ इर निवारे। पडो मंत्र न

वकार, मोक्ष मारगकुं नाले। पढो मंत्र नजकार, जूर ं र कुंटाले। जपीये मंत्र जिनवर तखो, दिन दिर ं रुथको चढे। नवकार मंत्र पढीयां पत्रे, प्रार्ख

्र ३५का चढ़ । नवकार सत्र पढ़ाया पृत्र, प्राथ व्यार मंत्र काहे कु पढ़े ॥ रे ॥ पिंगल पढ़ाज पारसी त्रयोज नरक सबंट । पंच पढ़ नवकार थी, सद्दा करें सात सागरनो आउखो, पढ्त पाप सव जाय। काच सगपण कटंवका, मिल १ वीठम जाय। साचो सगपण धर्मको, सो अविचल जेलो थाय। च्यारू शरणा ए सही, और न शरणो कोय जे नर नारी आदरे ते अंक्यं अमर पद होय॥१॥

ळाणंद । सातुं अक्रर ए पढो, पढो पंच चितलाय

॥ इति नवकार मंत्र छंद समाप्तम् ॥

। ॥ अय आनुपूर्वी गुणनेरी विधि ॥

र वे वहां एमो अरिहंताएं कहना।

२ वे वहां एमो सिद्धाएं कहना।

३ वे वहां एमो आयरियाएं कहना।

४ वे वहां एमो जवन्कायाएं कहना।

५ वे वहां एमी लोए सबसाहणं कहना।

२	₹.	3	ម	ય	Ę	য	₹	ช	₹	ય
?	n	হ	В	ų	42.42	₹	ย	হ	ą	ય
Ę	*	হ	ង	ų	Delicate.	ช	₹.	হ	ą	ų
হ	m	र	ម	ų	A CONTRACT	থ	ម	₹.	πγ	ય
3	ð.	~	ย	ų	Š	ક	হ	₹	લ્	ų
ಬ ಉ	20-6	3	e e	e so	200	e me n	NE VER	A men	#2+ It 4	EMEN S
?	3	ย	२	Ų	Í	হ	₹	В	₹	Ų

ช

Я

ų

ų

## ॥श्री खानुपूर्वी॥

_							3d .					_
the the the the the terminate of the thether the field of		ಪಾಹ್	Ų	ూడా	ಾರ್	9 9	ಹಚಾ	-enven	E E	277276	ಾಡುವ	•
distri-	3	इ.	<u>ت</u> ر	ય	В	É	3	१	य	₹	В	
Stack	१	₹.	, tu	ų	่ย	western inco	য	1	य	३	ਬ	1
Path at	₹	, 3	ষ্	ય	8		?	य	হ	ঽ	੪	1
2002	ď	₹	হ	Ų´	В	States to strate at the state	ય	?	হ	३	ਬ	1
etheth.	2	३	र	<b>ए</b>	В	10,570,53	য	ų	. 3	३	В	1
etrote	३	য	<b>?</b>	य	В	124.1676	પ	হ	3	3	ีย	
		Segret.		AT ED	E E	Sarci.	200	76.763	G G	CB.CD.	బాబా	P
vatre.	?	३	ય	হ	ย	STATE OF THE PARTY	য	ર્	ય	₹	8	l
interior	3	₹	ય	হ	ช	2000	na	হ	ય	3	В	
Table 3	₹	ų	Ę	হ	Я	Teather	হ	ય	3	?	ช	
de de la constante de la const	ų	!	३	হ	ช	THE PATH AT SATISTED STRATES FOR	Ų	হ	Ð,	?	ধ	
: È	( 2	ĺn		[ _		ايًا		1.				

			Q			É			۲u		
ĺ	?	२	Я	य	3	9	2	য	Ų	В	₹
ı	য	₹	8	ų	₹	4 C	হ	₹	ų	В	₹
١	₹	ង	२	ય	πį	Contractor Contractor	1	ų	ર	ย	₹
I	B	1	ম	ય	₹	ě	ч	1	२	ย	₹
l	য	ย	3	ય	ą	D-True	য	ų	?	ਬ	₹
١	B	२	₹	ય	3	2000	۲,	२	3	В	3
•	WID.	en.		מאפו י	ab-40		the state of	200	200	ATT-ATT	gr.co
			रर			ŧ			रश		
1	3	В	ų	ঽ	₹	É	য	В	ų	₹.	₹
	8	₹	य	য	₹	Ü	B	য	य	1	₹
í		ì		1	1	Ιá	I	_	1	_	_

# ॥श्री खानुपूर्वी॥

			१ <b>३</b> ·	_		Û			85		
1		3	8	य	হ	10/10	₹	३	य	ß	হ
3	3	₹.	8	¥	হ	STATE OF	m	₹	य	ধ	হ
?		В	३	ਪ	ম	1000	3	य	w	ধ	হ
5	3	3	३	ਪ	হ	Medare	य	र	m	ਬ	१
:	₹	В	₹	य	হ	To college	n	य	3	ម	হ
1	3	2	?	ય	হ	bettere!	¥	ম্	र	ย	হ
130	ಐಡ	ತ್ರಾವಾ			മേരം	2.0	200	යිය	ಎಂ	S.C.	3 C
9			***			à					
			रए			125/12/3			१६		
	₹	8	र् ए	3	হ	areas auran	m	ਬ	<b>१</b> ६	₹	হ
1	₹ 8	8		מי ומי	হ	ransuran unuman	સ સ	ষ		₹ ₹	হ
) I I I I I I I I I I I I I I I I I I I			य	<del></del>	र र र	arrana arrana an arran	מע אם ווע		14		<del> </del>
The articular and the state of	8	?	थ	३	ष	area ear earch earchean ear earch	m 23 12 2	ঽ	य	₹	হ
The state of the s	৪	<u>۲</u>	<u>ਪ</u> ਪ ਬ	וא וא	र र र र र र र	carrete contract counts to strate to the strate	स्थ स्थ स्थ स्थ	10V   27.	<u>ਪ</u> ਪ	₹ ₹	হ হ
THE VIEW OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE	8 ર પ	र ए र ए	ਪ ਪ ਬ ਬ	ומ ומ ומ	ह्य	and the state of t	12 2 12 2 Z	12 1N	ਪ ਪ ਬ ਬ	<b>? ? ?</b>	থ থ

### c ॥श्री खानुपूर्वी॥ ŧ۶ रठ ₹ ų Ų 8 ą B ą ų ł 3 ą Ę ą ų a Я ₹ ų ₹ য Ę Į ₹ ß a ų ₹ ₹ ₹ ย Z Ę Ų ł Ų Į ช Ş ₹ ี่ย ą ų ₹ Ę Ų Į Я Ų ų ł a 3 ₹ १ए Q٥ ₹ Z Ų ₹ ₹ ช Ü Į Ħ Į u ₹ ₹ ų Į ţ ห Я The state of the s ₹ Ę Ų ช Į ₹ Z ų ช ₹ Charles Carconson Į ₹ ų 2 3 ₹ B a Ų ų Ę ₹ ų Z Z u ? ម

8 | ३

॥ खघ चौबीस तीर्घकरों का नाम खिल्यते ॥ र श्रीऋषंत्रदेवजी, **१३ श्रीविम**लनायजी, २ श्रीछजितनाघजी, ेर४ श्रीखनन्तनायज्ञी, ३ श्रोतंत्रवनायजी, १५ श्रोधर्मनायजी, ४ श्रीचित्रितंद्वजी, १६ श्रीशांतिनायजी, ५ श्रीसुमतिनाघजी, १७ श्रोकुंघुनाघजी, ६ श्रीपद्मश्रज्जो. रण श्रीखरनाघजी. ३ श्रीसुपार्श्वनाघजी, रए श्रीमह्योनायजी, ० भीचन्द्रप्रज्ञी, २० श्रोमुनिसुवतजी, ए श्रीसुविधिनाघजी, ११ श्रोनमिनाघजी, **१० भीशीतसनाघ**जी. १२ श्रीरिद्रनेमिनायज्ञी, ११ श्रीश्रेगांसजी. २३ श्रवार्वनाघजी. १२ श्रोवासवूड्यजी, १४ श्रीमहाबीर स्वामीर्ज ॥ घप २० विहरमानों के नाम ॥ र धीसिमंपर स्वामी, रर श्रीवज्जवर स्वामी, २ घीषुगमंपरस्वामी, १२ घोषन्डानंदनस्य

ं १३ श्रीचंदाबाहु स्वामी,

३ श्रीबाहुस्वामी, ध श्रीसुवाहु स्वामी, १४ श्रीजुनंग स्वामी के थ श्रीसुजात स्त्रामी, १५ श्रीईश्वर-स्वामी( 🔆 ६ श्रीखरंप्रजस्वामी, १६ श्री नेमप्रजस्वामी, ८ श्रीऋपजानंद स्वामी, १७ श्रीवीरसेन स्वामी, o श्रीथनंतवीर्य स्वामी, १० श्रीमहानड स्वामी, ए श्रोस्रप्रजन स्वामी, रए श्रीदेवयस स्वामी, २० श्रीविशासपर स्वामी, २० श्रीव्यजितवोर्षे स्वामी

### ॥ खद्य ११ गणधराँके नाम ॥

១ श्रीमोरीपुत्रजी १ श्रीइन्डमृतिजी छ श्रीध्यकम्पितजी २ श्री व्यक्षित्रतिजी ३ श्रीवायुजूतिजी ए श्रीयचन्रतिनी ध श्रीविगत स्वामोजी १० श्री मेतारजजी **५ श्री**सुधर्मा स्वामीजी ११ श्रीव्रत्तासमी ६ श्रीमंत्रीपुत्रजी

🐇 ॥ श्रघ-१६ सतियों के नाम ॥ 🦠 १ श्रीत्राह्मीजी : र**ः श्रीचेलणाजी**ः २ श्रीसुन्दरीजी . (चूलाजी) ११ श्रीशिवाजी (सेवाजी) ३ श्रीकोशखाजी ं शीलवती ४ श्रीमीताजी ११ श्रीपद्मावतीजी **५ श्रीकृन्तिजी**ः **१३ श्रीमृगावती**जी ६ श्रीडोपदीजी १४ श्रीसुलसाजी ७ श्रीराजमतीजी १५ श्रीदमयंतीजी ण्यीचन्दनवासाजी १६ श्रीप्रजावतीजी ए श्रीसुनदानी

इति १६ सितयों के नाम समाप्तम् । यह १६ सितयों ख्रोर उत्तम पुरुषों को हमारी त्रिकाल वारम्वार वंदणा नमस्कार होजो ॥ ॥ ज्यारूयान के प्रारम्प्त की स्तुति॥

वीरहेमाचससे निकसी, गृह गीतम के श्रृत कृंग द्वी हैं। मोह माहाचस चेद चसी, जगकी जहता सब दूर करी हैं॥ ज्ञान प्योद्धि माय खी, वह जंग ३ श्रीवाहुस्वामी, १३ श्रीचंदाबाहु स्वामी, ४ श्रीसुवाहु स्वामी, १४ श्रीजुजंग स्वामी, ५ श्रीसुजात स्वामी, १५ श्रीईश्वर स्वामी, ६ श्रीस्वयंप्रतस्वामी, १६ श्री नेमप्रत स्वामी,

ष्ठ श्रीक्षप्रचानंद स्वामी, १७ श्रीवीरसेन स्वामी, ए श्रीखनंतवीर्य स्वामी, १० श्रीमहाज्ज स्वामी, ए श्रीसूरप्रचव स्वामी, १ए श्रीदेवयस स्वामी, १० श्रीविशावधर स्वामी, १० श्रीखजितवीर्य स्वामी

॥ श्रय ११ गणुधरोंके नाम ॥

॥ व्यय ११ गणधर्मक नाम ॥
१ श्रीइन्डजूतिजी ए श्रीमोरीपुत्रजी
१ श्री व्यक्तिजूतिजी ए श्रीव्यकम्पितजी
३ श्रीवायुजूतिजी ए श्रीव्यवजजुतिजी
४ श्रीविगत स्वामोजी १० श्री मेतारजजी
५ श्रीमुधर्मा स्वामीजी ११ श्रीवजातजी
६ श्रीमंगीपुत्रजी

ा अयः १६ सतियों के नाम ॥ र श्रीव्राह्मीजो 🗆 १० श्रीचेत्रणाजी 🦠 १ श्रीमुन्दरीजी . (चुलाजी) ११ श्रीशिवाजी (सेवाजी) ३ श्रीकौशल्याजी ४ श्रीसीताजी शीलवती **५ श्रीकृन्तिजी**ः ११ श्रीपद्मावतीजी **१३ श्रीमृगावती**जी ६ श्रीडौपरीजी १४ श्रीसुलसाजी ष श्रीराजमतीजी १५ श्रीदमयंतीजी ७ श्रीचन्दनवालाजी १६ श्रीप्रजावतीजी **৩ श्री**सुत्रद्राजी इति १६ सतियों के नाम समाप्तम् । यह १६ सतियों और उत्तम पुरुषों को हमारी त्रिकाल वारम्वार वंदणा नमस्कार होजो ॥ ॥ व्याख्यान के प्रारम्ज की स्तुति॥

वीरहेमाचलसे निकसी, ग्रुरु गौतम के श्रृत कूंफ ढली है। मोह माहाचल जेद चली, जगकी जमता सब हर करी है॥ झान पयोद्धि माय रखी, बहु जंग ३ श्रीबाहुस्वामी, 💛 १३ श्रीचंदाबाहु स्वामी, ४ श्रीसुवाह स्वामी, १४ श्रीजुनंग स्वामी,

५ श्रीसुजात स्वामी, १५ श्रीईश्वर स्वामी, । ६ श्रीखयंत्रजस्वामी, १६ श्री नेमवज स्वामी,

B श्रीऋपनानंद स्वामी, १९ श्रीवीरसेन स्वामी, ए श्रीखनंतवीर्य स्वामी, १० श्रीमहाजङ स्वामी, ए श्रोस्रप्रजव स्वामी, रए श्रीदेवयस स्वामी,

१० श्रीविशासधर स्वामी, २० श्रीख्रजितवीर्ष स्वामी

॥ व्यथ ११ गणधरोंके नाम ॥

र श्रीइन्डज़ृतिजी २ श्री अभिनृतिजी

३ श्रीवायुजूतिजी

४ श्रीविगत स्वामोजी ५ श्रीसुधर्मा स्वामीजी ध श्रीमोरीपुत्रजी

० श्रीस्रकम्पितजी

ए श्रीयचन्नज्ञतिजी र० श्री मेतारजजी ११ श्रीप्रनासजी

६ श्रीमंकीपुत्रजी

ा। श्रथ १६ सतियों के नाम ॥ र श्रीब्राह्मीजो . १० श्रीचेलणाजी २ श्रीसुन्दरीजी (चुलाजी) ११ श्रीशिवाजी (सेवाजी) ३ श्रीकोशव्याजी ध श्रीसीताजी शीलवती रश् श्रीपद्मावतीजी **५ श्रीकृन्तिजी**ः १३ श्रीमृगावतीजी ६ श्रीडौपदीजी १४ श्रीसुलसाजी ७ श्रीराजमतीजी १५ श्रीदमयंतीजी **७ श्रीचन्दनवा**लाजी

ए श्रीसुनदाजी इति १६ सतियों के नाम समाप्तम् । यह १६ सतियों खोर जत्तम पुरुषों को हमारी त्रिकाल वारम्वार वंदणा नमस्कार होजो ॥

१६ श्रीप्रजावतीजी

॥ व्याख्यान के प्रारम्भ की स्तृति॥ वीरहेमाचलसे निकसी, गुरु गौतम के श्रृत कूंम दबी है। मोह माहाचल जेद चली, जगकी जनता सब दूर करी है।। ज्ञान पयोद्धि माय रखी, वह ज़ंग- णमी खंजली निज शीप धरी है।। ज्ञानसुं नीर जरी सिलला, सुरधेनु प्रमोद सुलीर निधानी। कर्म जी व्यापि दरन्त सुधा, खघमेल हरन्त शिवा करमानी॥ जैन सिद्धान्तकी ज्योति वढी, सुरदेव स्वरूप सुरू

जन सिद्धान्तका ज्याति वढा, सुरद्व स्वरूप सुरू दायकनी । सोक व्यक्षेक प्रकाश जयो, मुनिराज व खानत है जिन वानी ॥ सोजित देव विषे मध्या, व्यरुदृन्द विषे शशी मंगलकारी । जूप समृट् विषे

वली, चक्रपति प्रगटे वल केशर जारी ॥ नागीन में भरणीन्द्र वसो, खरू है। खतुरीनमें चरनेन्द्र खर

तारी। ज्युं जिनशासन संव विषे, मुनिराज दीवे श्रुत ज्ञान जएकारी(॥ इति ज्ञुजम् ॥ ) भूति ज्ञान जएकारी(॥ इति ज्ञुजम् ॥ ) भूति ज्ञान ज्ञुज्ञान स्वत्र प्रारंभ ॥

॥ श्रय तिक्खुत्तोरी पाटी खिरूपते ॥ तिक्खुत्ते व्यापाहिणं करेनि बंदामि

णमंसामि सकारेमि सम्माणेमि कह्नाणं मंगलं ॐ,वयं चेड्यं ॥ पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥१॥ ॥ इप्रय इरिपावहिया की पाटी लिख्यते॥

इह्याकारेण संदिसह जगवन् ! इरियावहियं प-किकमामि, इहं इच्छामि, पिककिमछं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणा गमणे, पाणकमणे, वीयकमणे, हरियक्रमणे, उंसाउत्तिंग, पणग दग मही मक्रमा,सं-ताणा, संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, विइंदिया, तेइंदिया, चलरिंदिया, पंचिंदिया, अनि-हिया, वित्तया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परिया-ंविया, किलामिया, जद्दविया, ठाणाउठाणं संकामिया, द्भजीवियाज, ववरोविया, तस्स मिहामि डुकरुं ॥१॥ 🕯 ॥ छ्यथ तस्स उत्तरीनी पाटी जिरूपते ॥ तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करलेलं, विसल्ली करलेलं, पावालं कम्मालं लिग्घाय-णद्राए, ठामि काउस्सग्गं॥ अन्नत्य कससिएएं, नी-सिसएएं, खासिएएं, ठीएएं, जंजाइएएं, उद्गएएं, वायनिसमोएं जमलीए, पियमुहाए, सुहुमेहिं छंगः ू संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमोहिं दिट्टि-

क्षोगस्त जङ्गोखगरे, धम्मतित्ययरेजिए। ख

े फेग बोहिखाजं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेम

संचावेहिं, एवमाइएहिं छागारेहिं, छत्तग्गों, छि राहियो, इक्त में काउरसम्मो, जावळोरिहंताणं, जम वंताणं, णमुकारेणं न पारेमि, तावकायं ठाणेणं, मो

योणं काणेणं ख्रप्पाणं, बोसिरामि ॥१॥

॥ ब्राय जोगस्स की पार्टी छिरूपते ॥

रिहंते कित्तइस्सं, चडवीसं पि केवली ॥ र ॥ उसक

मजियं च वंदे, संजव मजिएं दएं च सुमई च॥ पठ

मप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहि च पुष्फदंतं, सीळल सिझंस वासु पुझं च॥ विमन मण्तं च जिलं, धम्मं संतिं च बदामि ॥ ३॥ कुंड

संपि जिएवरा, नित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ए॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए खोगम्स उत्तमा सिद्धा ॥ आ

ख्यरं च मिंह, वंदे मुणिसुबयं निमिजिएं च ॥वंदानि

रिट्रनेमिं पासं तह यद्भगाएं च ॥ ४ ॥ एवं भए छ नियुक्या, विद्य रयमका पहीण जस्मरणा ॥ चर्जवी

गंजीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥९॥ इति ॥ ॥ त्र्यय सामायिक खेवण की पाटो लिरूपते॥ करेमि जतं सामाइयं, सावक्कं जोगं पचक्खामि,

जावनियमं (मुहूर्ज) पच्छुवासामि, प्रविहं, तिविहेणं, न करेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स जंते, पिक्झांमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ ॥ अथ श्रीनमुत्युणं की पाटी खिरूपते ॥

॥ अथ श्रीनमुत्युणं की पाटी लिस्पते ॥

नमुत्युणं त्रिरंताणं, जगवंताणं, त्राइगराणं,
तित्ययराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिसतीहाणं, पुरिसवर पुंमरीयाणं, पुरिसवर गंधहत्यीणं,
लोग्यनमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं,
लोगपक्जोयगराणं, त्रजयदयाणं, चक्खुद्याणं, मगग दयाणं, सरणद्याणं, (जीवदयाणं) वोहिदयाणं, ध ममदयाणं, धम्मदिस्याणं, धम्मनायगाणं, धम्मसार हीणं, धम्मवर चाउरंन चक्कवद्दीणं, दिवोनाणं, सर विख्यह, ठठमाणं, जिषाणं, जावयाणं, तिलाणं, तार याणं, युद्धाणं, वोह्याणं, मुत्ताणं, मोख्याणं, सब्दूणं सबदरिसीणं, सिव मयदा मरुख मणंत मन्स्व सबावाह मपुण्रावित्ति, सिद्धिगड् नामधेगं, वाणं संपत्ताणं, नमो जिष्णाणं, जिख्यनयाणं॥ इति॥

। छाथ सामायिक पारवा की पाटी जिरूयते। नवमा सामायिक व्रतना पंच खड्यारा जाणी यद्या, न समायरियद्या, तंजहा ते खालोडं, मणडुप्प-णिहाणे, वयड्पपिहाणे, काय ड्पणिहाणे, सामा-इयरस व्यकरणयाए, सामाइयस्त व्यणबुद्रियस्त कर एयाए तस्त मिच्छामि इक्कं ॥ सम्मायिक ने विषे दश मनना, दश वचनना, बारे कायाना, ए वर्तीस दोप माहेसी कोई दोप लाग्यो होय तो मि-च्ठामि ५कमं॥ व्याहारसंज्ञा, त्रयसंज्ञा, मिहणसंज्ञा, ि. इसंका, ए चार संज्ञा माहेखी कोई संज्ञा करी डीय तो मिञ्जामि इक्त ॥ स्त्रीकथा, राजकथा, जक्त-



मनमें गुणनी (१) "नमो चरिहताएं" मनमें कहकू काउस्सम्म पारनो। पीठे "(१) द्वीगस्स" की पार्ट प्रगट कहणी। पीठे(१) "करेमिनते" की पार्टी "जा नियम" सुधी कहीने च्यामल सुहूर्च घालणा हुवे तिं घालणा, पीठे "पञ्जवासामि" से क्षेकर "च्यप्पार्ण वोसिरामि" सुधी पाठ कहणो, पीठे नीचे वैठक कावो गोमो कानो राख दोतं हाथ जोक्कर "नमु

त्युषं" की पाटी दोय बार कहणी, घुजे नमुस्युणं स्रांतमें जहां 'ठाणं संपत्ताणं' स्थावे उस स्थानण " ठाणं संपावित्रं कामस्स णमो जिणाणं जिस्रज्ञण णं" ऐसा वोद्यणा, पीठे स्थासन माये वैसीनें सामा

यिकका कास पूरा ना हुवे जहां तक ज्ञान-ध्या

करना, या शिखा हुट्या इतन याद करना, या नव घोज चाज घोकड़ा सीखना, या चितारना। इसी त रहेसे धर्म सम्बन्धी झान ध्यान करके सामाधिक

काल पूरा करना । गुरु महाराज विराजता होवे हैं।



करे तो दोष।

यिक करे तो दोष। (n) सामायिक में नियाणों करे तो दोष। ं ग्रें) सामायिक में गुम्मो, रीस, क्रोधादिक करे तो

" न जवइ तस्स मिच्छामि पुकरं "सुधी कहा

करना।

तीन वखत नवकार मंत्र गुणके सामायिक विका

॥ इति सामायिक पारने की विधि समासम्॥ ॥ इपय सामायिक के ३२ दोप खिल्यते॥ ॥ १० मन के दोप॥ (१) विना अवसर से तथा अविवेक से साप्रायि

(श) जश कीर्त्ति के छार्थे सामाधिक करे तो दोष। (३) व्यापरे साज व्यथें सामायिक करे तो दोप। (ध) गर्न (छहंकार) सहित सामायिक करे तो दोप (थ) करतो, जयसे धूजतो सामायिक करे तो दोप (६) संशय सहित फल प्रते संदेह रखकर सामा (ए) सामाँ विक में देवगुरु धर्म जपगरणकी अविनय असातना करे तो दोप गं <u>.</u> (१०) नेगारी री परे समायिक करे तो दोष। ा १० चचन के दोष ॥ (११) सामाचिक में जुर बोड़े तो दोष। ें (११) सामायिक में विना विचारी नापा वोले तो दोप। (१३) सामापिक में गाल गीत स्याल, इलादि संसार ं सम्बन्धी गालो करे तो दोप। (१४) सामायिक में घणे जोर से इसरे का मन इसे ति विसा वोचे तो दोप। । (१५) सामायिक में कञ्चह करे तो दोप। ें (१६) सामायिक में च्यार प्रकार की विकथा करे हें तो दोप। ८ (१९) सामापिक में हांसी, मश्करी, बहुा करे तो दोप। (१७) सामायिक गनुबन करके छनावजी छनावजी घगुड योंडे. पढे. गुखे नो दोष । १९(१७) नामायिक में खयोग्य वचन, खयुक्ति जापा वोंके नो दोष।

(२०) सामायिक में अवती को सत्कार, सुन्मान देवे ्(श्रवती ने श्रावो, पधारो कहे) तो दोष। 🐃 🕛 ।। १२ का शरा दोप ॥ (११) सामायिक में अजोग आसन से बेठे, जैसे वि ठास**णी मारीने, पाँव पर पाँव राखी ने,** ऐस श्रिनान का आसनसे बैठे तो दोप। (११) सामायिक में श्रहियर श्रासन वैठे तो दोप।

(२३) सामायिक में विषय सहित दृष्टी जोने तो दोप् (१४) सामायिक में सावच तथा घर का काम के तो दोप। (१५) सामायिक में विना कारण खोटो लेकर तथ 'इसरे को खाधार खेकर बेर्जे तो दोपं। (२६) सामायिक में व्यंग (शरीर) मोर्न तो टोप। (रं9) सामायिक में शरीर बार बार संकोचे या पसां नो दोप।

(२०) सामायिक में दाथ पाँचरा कड्का काढ़े (मोर्डे

तो दोप ।

(३०) सामायिक में शरीर रो मैल जतारे तो दोप। (३१) सामायिक में विना पुंज्या खाज खुणे, या विना पुंज्या हाले चाले तो दोप । (३१) सामायिक में विना करण इसरे के पास वैया-वच करावे तो दोप। ॥ इति सामायिक के वत्तीस दोप समातम् ॥ ॥ ष्र्यथ चोराशी लाख जीवायोनि पारंत्रः॥ सात खाख पृथिवीकाय, सात खाख अप्काय, सात साख तेजकाय, सात साख वाजकाय, दश साख प्रत्येक वनस्पति काय, चडदे खाख साधारण वनस्प-ति काय, ये साख वेइंडिय, ये साख तेइंडिय, ये साख चौरिं डिय, चार साख देवता, चार साख ना-रकी, चार साख निर्येच पंचें द्रिय, चउदे साख मनुष्य, एवं चौराशी साख जीवायोनि मांहे. महारे जीवं जे कोई जीव हफ्सो होय, हणायो होय, हणतां प्रत्ये

(१ए) सामायिक में निद्धा खेवे तो दोप ।

श्रानुमीयो हूर्रय, ते सर्व मने चचने कार्योप करी है जारे खाल खीवीस हजार एक सोवीसे (रेटरेश्रेर्रर अकारे तस्स मिच्छामि डुक्क ॥ इति॥

॥ द्यथ ब्यठारह पापस्यान प्रारनीः पहले पाणातिपात, इजे मृपाबाद, तीजे ब्य चादान, चौंबे मैंथुन, पांचमें परिवह, रुद्रे क्रोप, स

तमें मान, खाठमें माया, नवमें क्षोज, दशमे रार इंगारहमें द्वेप, वारमें कबह, तेरमें खज्याख्या चौदमें पेशुन्य, पत्तरहमें रित खरित, सीबहमें पर रिवाद, सत्तरहमें माया मोसो, खठारहमें मिच्यात शब्य। यह खठारह पाप स्थानक मोहि महारे जी जे कोई पाप सेब्युं होय, सेवराब्युं होय सेवता प्र खनुमोर्युं होय ते सर्व मने वचने कायाप करी तह मिहामि इक्षमें ॥ इति ॥

्रा दिनकी छ्याखोयणा ॥ अं व्याज चार प्रहर दिन में जो कोई मैं जीव वि

राध्या होय, पृथिवीकायं, ऋप्काय, तेजकाय, वाजकायं, वनस्पतिकाय, जसकाय, ये ठः काय विराध्या होय, हिंसा, जुठ, चोरी, मेथुन, परियह इन करी बतविषय छतिचार खाग्या होय, हास्य, रति, छरति, जय, शोक, इर्गेटा, कोध, मान, माया, लोन, राग, देप, मद, मत्सर, अहंकार किया होय, विकया की हो, रण पापस्थानक, रथ कर्मादान की छासेवना की हो, रस गौरव, रिद्धि गौरव,सातागौरव सेव्या होय,माया-शब्य, नियाणाशव्य, मिथ्यादर्शनशव्य किया हो, ं व्यार्तप्यान, रोडप्यान ध्याया हो,कुस्वम पुस्वमदीला र हो, सात लक्ष पृथ्वीकाय, सात लक्ष अप्काय, सात विश्व वाजकाय, सात लाख तेजकाय, दशलाख प्रतेक वाख वाजकाय, सात लाख तेजकाय, दशलाख प्रतेक वनस्पतिकाय, चवदह लाख साधार्ण वनस्पतिकाय, दो लाख वेन्ड्रो, दो लाख तेन्ड्रो, दो लाख चोरिन्ड्री, चारलाख देवता, चारलाख, नारकी, चारदान्त्र तिर्चच, पंचेन्डी, चवदह लाख मनुष्य की जात, ऐसे उध हार्य ? द्व, जीवयोनिमं जो विराधना की हो, तन्निः

तना की होय, अन्य कोई पाप, परनिन्दा की हो,

करने को अनुमोया हो, सर्व मन, वचन, काय से मिद्यामि दुक्करं। ii छाथ खामेमि सब जीवेनो पाठ पारंजः ii

खामेमि सद्य जीवे, सद्वे जीवा खमंद्र मे ।

मित्ती में सबजूपसु, वेरं मज्झ न केणई ॥ रं ॥ एवमह् यालोइय निदिय गरहिय दुगंवियं समी तिविद्देण पिनकंतो, वंदामि जिणे चन्नीसं गर्ग

गायार्थ:— में सर्व जीवों को कमाता हूँ, मेरा अपराध संव जीवों कुमा करे, मेरा तो सर्व जीवों के छपर मैत्री

जाव है, किसी के साथ वेरजाव नहीं है। इसी प्रकार थाड़ी तरह पाप की खान्नाचना कर, खात्मसाखे निंदा

कर, गुरुसाचे वृषा खोर घुगंता कर त्रिविधेश पिर-कमतो यको चीवीस जिनवरको में बंदणा करता हूँ ११।ई।

# ्रिनिकी रिक्ष कर ने स्टिनिका ॥ दयाकास्वस्तप ॥

द्या करनी किस कूं कहते हैं ? ठकाय प्रध्वी-काय जाव त्रसकाय तक की हिंसा का स्थाग करना, गंच आश्रव-पहिला जीवकी हिंसा, दूजा जूठ, तीजा

गच आश्रव-पहिला जीवकी हिसा, इजा जूंठ, ताजा वोरी, चौथा मेथुन, पांचमा परिग्रह, यह पांच आश्रवका स्थाप करेना हिसी कूं द्या कहते हैं।

स्या करणे की संकेप विधि खिखते हैं ॥
 द्या आठ पोहरकी या ज्यादा एक करण तीन

जोग से, अघवा दोय करण तीन जोग से करे।दया में कपने आदिकी पत्नेवणा करे। दयामें लीलोतीरा, स्त्रीरा,काचा पाणीरा, रातरा चार असनादिकरा, लाग करे। याने चार खंध पाले, रातका संवर करे, दिनको

सामायिक वन सके जतनी करे, ज्ञान ध्यान करे, बोख घोकमा चितारे, नया ज्ञान सिखे, व्याख्यान वाणी के वय्वत में व्याख्यान सुखे, प्रमादमें समय नगमावे, द्यामें पोरसी वियासनो खांविख एकासनों वने जैसो

छी को संगटो न करें, सचित वस्तु को संगटोनकरे<sub>।</sub>

मांहि सावय काम तथा आरंज (समारंजी)न करे।।इति। ्राप्त कर्मा क्षेत्र महास्था महासम्बद्धाः ।। ।। इन्यासम् पड़ी पूर्ण पीपध लेणे की पाटी ॥

जिस भांगे से खेवे उसी जांगे से पाले । ऋोर दय

योपध वत के विष

पाछोडं, पोसा रे

भारता तेल प्रांतामिल भूगापाइन्स प्रितामिल इंट्रेंट्रेस्ट्र

गरिहामि खप्पाणं वोसिरामि,॥

ं .े. १६५। इग्यारमा (<del>৮</del>\*

्यनिचार

इग्यारमुं पोपध वत, असर्खं पार्खं खाइमं साइमंत्र पद्यस्ताण, अवंत्रनुं पद्यस्ताण, अमुक मणि सुवर्णनु पश्चवलाण, माला वञ्चग विलेपण्नुं पश्चवलाण, सत्य मुसलादिक सावज्ञ जोगनं पश्चमलाण, जाव छहोर्त पज्जवासामि इविदं, तिविदेणं, न करेमि न कारवेशि मणसा वयसा कायसा, करते नाणुजाणह, मणस वयसा, कायसा, तस्स जंते पिक्कमामि निंदारि

पड़ी पूर्ण पोपा पारने की पाटी।



हाय तक कपड़ी राख सकते हैं.

२ अयम जगा पुंज कर अवकरणों का पिते हण करना.

३ पोर्वमें विवे विकार छपते प्रेमा यत्र ते पहचता.

४ पोपा में कृत ती त्याना पीना नहीं चाहिं हप्ताकृती नहीं स्पाना, चौविहार वास कार्य चाहिते.

ात्यः. १ योगामें कियो प्रकार का शया नहीं रसती ६ गोगामें भेवर या सोने सोटीके कोई जी की

बरण मृथ्ये त्रेमा साल देना चनीचे याने सी स्थास करोते.

३ स्टन (च्छवन या वृष्यप्राता गोषवर्षे महैं स्टनना सर्वत्रय

ेयुननी पानिय भारतीयहरू श्रीहर व्यापान विदाहर हैं इस व होत्ता पुर - ११०० व्यापान पूर्व देशी व्यापान १९७३ व्यापान व्यापान ए वंदनपूर्वक आज्ञा लेकर ग्रुरु के पास अगर ग्रुरु न होवे तो स्वतः ग्यारहवां वत का ग्रुरु का पाठ

उचार कर पोपध वांधना वेंना, तत्पश्चात् पूर्ववत् दोप 'नमोत्युणं' कहना, यहां पोपध वत वांधने का विधि पूरा हुत्था.

र्त हुआ. रण्पोपधकाल स्योंदय से ग्रुरुहोकर इसरे दिन स्योंदय होने नहां तक आठ प्रहर का पोपा होने.

११ पोपामें दिनको सोना नहीं चाहिये, ब्रार कॉम विना⁻हलचल नहीं करना चाहिये.

११ सामायिकमें वतलाये हुए कार्य ही पोपा से होसके पर इसरा कार्य नहीं करना चाहिये. १३ शामको या इसरे दिन प्रातःकाल को वमे १ श्रावक की खाङ्का लेकर प्रत्येक उपकरण खीर वस्त्रों

का पित्रवेहण करना.
१४ सुबह शाम दोनों वक्त प्रतिक्रमण करना.

र १५ पोषामें जघुनीत या वमीनीत का काम पके तो निर्वय स्थानमें जाकर परठना; परठने जाते समय "आवस्सहि" कहनाः जमीन देखन ('अणुजाणह" कह कर व शकेंड़की आज्ञा लेकर परवरी परंठ कर "तीनवार वीसिरेई; वोसिरेइ" कहना, वि

श्चंदर खाते हुए "निसीहि," शब्द कहना रात्रि है समय वहार जाने की जरुरत हो तो शीरपर बस्न है। फ़र्र जीना, पर खुल्ले मस्तक या खुल्ले शरीर नहीं जी<sup>ती</sup>

ः १६ पोपाम वनीनीतका कारण पर्के जरूरत देने स्रो गरम जलका योग दिनथका रखना 🔆 <equation-block> रण पोपाके रण या २१ दोष टाख कर ग्रुड पोण

करना. १७ चलती हुई परंपरा के अनुसार ग्यारह

पोपधत्रत ज्यादेसे ज्यादे तीन प्रहर दिन चढे वहां तः

से सकते हैं, बाद में दशवां वत हो सकता है. . १ए दशवां वत में जी बहुतसी विधि ग्यार्स

व्रत के माफिक हे पोपधमें बस्त ख्रीर *उप*कर<sup>ए</sup> मर्यादा करना, की हुई मर्यादा से अधि हैया उपकरण कहपे नहीं स्थल ओर दिशाकी है हुले से ही मयीदा वांधना ख्रीर उस मयीदा के हार नहीं जाना

े...श्रु पोपा में प्रहर रात्रि जाने के वाद उंचे खरसे ॥ यहुत जोरसे नहीं चोजनाः

११ पोपो लेनेके पहिले चोवीसत्यो करना, पन तेवणा करनेके बाद चोवीसत्यो करनो, लघुनीतिसें यायकर चोवीसत्यो करनो, निझासे उठकर चोवी-सत्यो करनो, खोर पोषो पारनेकी वक्तजी चोवीस-त्यो करनो।

विशेष श्री गुरुमहाराजसे धारजो.

## संखेपणा ।

च्यहचंते च्यपिक्वम मरणांतिय संबेहणा क्सणा वाराहणा पोपपसाला पुंजीने, ज्वार पासवण सृमिका मिनेक्वेते, गमणागमणे पिकक्षमिने, दर्जादिक संघारो संघारीने, दर्जादिक संघारा पुरुहीने, पूर्व तथा

इत्तर दिशी पत्रकाटिक खासन बसीने, करपछ सुं-



तला, माणं चोरा, माणं दंसा, माणं मसगा, माणं तहियं, पित्तियं, कप्फियं, संजीमं, सन्निवाहियं वहारोगायंका, परिसहोवसग्गा फासा, फुसन्ति वं पियणं चरमे हिं, कस्सास निस्सासेहिं वोसिरामि चेकट्टु। एम शरीर वोसराविने, कालं ऋणवकंखमाणे वेहरामि, एहवी सद्हणा परूपणा तो है फर्सणाए हरीये तेवारे सिद्धा एहवा अपितम मरणांतिय, संबे हणा, जुसणा, श्राराहणा, पंच श्रहयारा, पयाला जाणीयद्या, न समायरियद्या तंजहा,ते व्याखोऊं, इह बोगासंसव्पर्रगे पग्लोगासंसप्पर्रगे, जीवियासंसप्पर्रगे मरणासंसप्पर्टगे. काम जोगासंसप्पर्टगे, तस्स मिह्नामि 5ुककं ॥ २० ॥ इति ॥

ाणुएणं मणामं, धिझं, दिसासीयं, समयं, अणुमयं हुमयं, नंमकरंम समाणं, रयण करंमगजूयं, माण रियं, माणं जन्हं, माणं खूहा, माणं पिवासा, माण

॥ 'पोपेका १७ दोप खिरूयते॥

खुदे व्यादमी की ( व्यसामायिकवंत की )वैवाः रम करे तो दोष १। पोषा निमित्ते सरस खाहारकी तो दोप २। संयोग मिलावे तो दोप ३। केश नह मुबाँरे तो दोप ४ । पहिसे दिन वस्त्र धोबाबे तो दोप प्राचीरकी शुश्रुपा करे तो दोप ६। व्याचरण पहिरे तो दोप ७। मेख जनारे तो दोप छ। निद्रा क्षेत्रे ती दोष ए। बिना पुंजे म्बाज खुणे तो दोष १०। विकया कर नो दोप ११। पारकी निंदा करे तो दोप ११! द्यनेरी मंमारकी चरचा करे तो दोष १३। जय करे तो दोष १४ । यंग उपांग स्त्रीना निरम्वे तो दोष १५। मंसार को नातो कर तो दोप १६। खुखे मुख बोक्षेती दोषं १७। संसारकी बात करे तो दोष १० ॥ इति॥ /'चनक्रकां क्रीहर असंबर पद्यक्तमाकी पार्ती ॥ <u> इत्य</u> देव काव, तार, स्थिरता प्रसाणे, पा राहत्ता राहका का राम की श्रीता है। १०७४ के मार्गास्ताराणाणा



न्य पया घोकादि । ए सयण-शब्यादि का प्रमाण । १० विवेषण-विवेषण का प्रमाण जैसे नेत्राजनादि। ११ प्रेंज-बहाचर्य का धारण करना खब्रहाचर्य्य का स्याग करना । रथ दिसी-दिशाळॉका प्रमाण। र३ न्हाण-

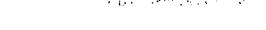
विना प्रमाण न महण करे ॥

मस्दिक्ति खयानं गेमिनमि ॥

There is continued in second

स्तान का प्रमाण यथा एकवार द्विवार इत्यादिक। ए चत्तेसु-सर्व वस्तु के वजन की मर्यादा अर्थात

जावार्थ-सूत्रमें यह वर्णन है कि एहस्यी नि सम्प्रति यथाशक्ति तृष्णा का निरोध करता हुआ विना प्रमाण कोई नी वस्तु घहण न करे ॥ ॥ चवदे नियम पद्मक्खणेरी पाटी ॥ दशमा देसावगासियं छवनोगं परिनोगं जितनी दिसि (भोमका) मोकबी राखी है तेह मांहे जे क ब्यादिक री मुजादा कीनी वे ते उपरांत धारणा मुजव <del>पत्रक्षा</del>ण एकविहं तिविहं न करु मनसा वयमा कायमा नम्म जंने मिक्सामि निंसमि



. ३ साहपोरिस को पश्चववाण ॥ : जगगए सूरे साहुपोरसि पचक्वामि चरुवि

पि व्याहारं व्यसणं पाणं खाइमं साइमं व्यवस्या जोगेणं र सहसागारेणं श पच्छन्नकाक्षेणं ३ दिसा म हेणं ४ साहवयणेणं ५ सबसमाहि विचागारेणं

वोतिरामि ॥ इति ॥ ३ ॥

४ पुरिमष्ट को पश्चवलाण ॥ **रुगए सुरे पुरिमहं पश्चक्लामि च**र्राहर्ष

थाहारं थसणं पाणं खाइमं साइमं खन्नत्यणा <sup>द</sup> गेणं १ सहसागारेणं १ पच्छन्नकाञ्चेणं ३ दिसा मोहे

४ साहुत्रयणेणं ५ मइत्तरा गारेणं ६ सबसमाहि त्तियागरेखं ३ वॉसिसमि ॥ इति ॥ ४ ॥

 थ यथ एकामना विवासना को पश्चवहाल ॥ ठगगए सूरे एगासणं वियासणं वश्वक्वासिचः

बिहं पि खाहारं खमणं पाणं स्वाइमं साइमं खंबे स्यना जोगंन र महमागारणं २ सागारिश्रागारेणं रै द्भा दरणयमारेण । गुरुश्रदनुद्राणेणं ५ पादिद्रावणिय



ए खय तिविद्वार उपवात को वश्चक्लाण ॥

ण्यय चरुविहार उपवासको पश्चक्लाण ॥ 🥠 जगाए सूरे अजत्तहुं पश्चम्खामि चन्नविहं<sup>ि</sup>

ब्याहारं श्रसणं पाणं खाइमं साइमं श्रन्नत्यणा जोगेणं

१ सहसागारेणं २ पारिट्ठाविषयागारेणं ३ महत्तरा

गारेणं ४ सबसमाहिवत्तियागारेणं ५ वोसिरामि।

जगाए सुरे अजन्द्रे पश्वस्त्रामि तिविहं <sup>वि</sup> ब्याहारं ब्यसणं खाइमं साइमं ब्यह्मत्यणा जोगेणं र सहसागारेणं २.पारिहावणियागारेणं ३ महत्तरागारेणं

४ सबसमाहिवतियागारेखं ५ पाणस्त खेवेण या

ळालेवेण वा, ळाच्छेण वा, बहुक्षेवेण वा, ससित्येण वा, व्यसित्धेण वा, वोसिरामि ॥ इति ॥ ए ॥

१० व्यय चरम पद्मक्ष्याण ॥

दिवसचिममं प्रवस्वामि चन्नविहं पि खाहारं द्यमणं पाणं म्वाइमं साइमं खन्नत्यणा नोगेणं **१** स

्रागारेणं २ महनगगारेणं ३ सबसमाहि वर्तिः

·यागारेखं ४ वोसिरामि ॥ इति ॥ र**०** ॥ ं ११ अय अनियह को पश्चवाण ॥ जगए सरे गंतिसहियं मुद्रिसहियं पचक्वा-मि चर्राहिहं पि बाहारं बसणं पाणं खाइमं साइमं ध्यप्तरवर्षा जोगेषं १ सहसागारेषं १ महत्तरागारेषं ३ सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ११ ॥ १२ व्यथ निविगई को पचकवाण ॥ जगगए सूरे निविगङ्यं पद्यक्वामि चछविहं पि ंधाहारं खत्तणं पाणं खाइमं लाइमं खन्नत्वणा जोगे-रिषं १ सहसागारेषं १ खेवालेवेषं-३-गिहरवसंसद्देषं इअ उक्तिवनविवेगेएं ए प्रमुखमुक्तिवलं ६ पारिहाव-हेर्रीष्ट्यागारेषं ६ महत्तरागारेषं ७ सहसमाहिव[त्तया-गारेखं ए बोसिसमि ॥ इति ॥ १२ ॥

ा छारा पांचपदारी बंदणा ॥ पित्रं पद्धीलिंग्जिली ने बीम नीर्यकाली. विकास दिसारिक के महिल्ली मान काले वीस विहरमानजी माहाविदेह खेत्र विचरे है, एक हजार व्यान सक्तपना धरणहार, वे तीस व्यतिशय, पेंतीस वाणी करी विराजमान, वोस इन्द्रना वंदणीक, व्यतारे दोप यकी रहित, वारेश करी सहित, व्यतन्तो झान, व्यतन्तो दर्शन, व्यतन्त्र चारित्र, व्यतन्तो वस, व्यतन्तो सुस, दिव्यवि जामएकस, स्फटिक सिंहासण, व्यशोकष्टक, कुस पृष्टि, देवहुन्हुजि, नत्र धरे, चंवर विंजे, जघन्य

ष्टि, दबदुन्दु। त, जब घर, चबर विज, जधन्य देये क्रोफ़ केवली, क्रेड़ हान केवल दर्शनना घरणहार, सर्व ऊट्य क्रेड़ क जावना जाणणहार ॥ सबैया ॥ नम्रुं देव ब्यस्टिं करमाको कीयो ब्यन्त, हुवा सो केवलवन्त, कर्

जएनारी है। खतीसे चोतीसधार, पेंतीसवाणी छुनें समजावे नरनार, पर उपकारी हैं॥ शरीर सुन्दरक सुग्ज सो कलकार, गुण हे खनन्त सार, दोप परिहा है। कहन निलोक ऋषि, मन बच काया करी, हीं

२ बारंबार, बॅदला इमारी है ॥ १॥ ऐसा खरिह



खांमें तलालीन, अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, ज्ञा समकित, निरावाद खटल खबगाहणा, खमूर्ती नन्तवीर्य्य व्यावयुषे करी सहित ॥ संवेया ॥ संव करम टाञ्ज, वस करलीयो काल, मुगतिमें रह्यां मा व्यातमा को तारी है। देखत सकल जाव, हुवाहे ज राव, सदा ही खायक जाव, जये व्यविकारी है॥ चल घटल रूप, खांच नहीं जवकूप, घतुप सर उप, पेसे सिद्धधारी है। कहत तिखीक ऋषि, बता ए वास भन्न, सदा ही क्रगंते मूर, वन्द्णा हमारी ॥१॥ ऐसा सिष्ठ तगवंत्रजी महाराज? व्यापकी व्य नय व्यमातना कीर्थी होय तो (देविम संबंधि) हा ्रांनी. मान मोनी, काया मंकोनी, वारंवार श्राप

सोग नहीं, फुःख नहीं, दालिफ नहीं, कर्म-न

काया नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, चाकर न ठाकर नहीं, जूख नहीं, तुपा नहीं, जोतमें जोत

राजमान, सकल कारज सिक्ष करीने चबदे प्र

पनरे नेदे छनन्ता सिद्ध जगवन्त हुवा, श्चनन्त

खमानं हुं, मत्यएण वन्दामि, नमस्कार करूं हुं रेण्ण्य यार "तिखोत्तो" जावत जयेजवे सरणो हो जो"।

## इति बीजो पद समाप्तम् ॥

(३) तीजे पद व्याचारजजी वत्तीस गुणेकरी विराजमान, पांच महावत पाते, पांच छाचार पाते, गंच इन्ह्री जीते, चार कपाय टाले, नववाम शुद्ध ब्रह्मचर्चना पावणहार, पांच सुमिते समता तीन गुप्ते गुता, ब्यान संपदा सहित ॥ सर्वेया ॥ गुणहे न्त्रीस पूर, धरत धरम जार, मारत करम ऋर, सुमति वि-चारी है। शुद्ध सो ब्याचारवन्त, सुन्दर है रूपकन्त, जणीया सवी सिडान्त. वाचणी सुप्यारी है ॥ छ॰ धिय मधुर देख. कोई नहा क्षोपे केख, सकझ जीवांका सेष, कीरन ध्रपारी है। कहन निजोक ऋषि, हि-तरारी देन सीय, ऐसे धाचारज नाकु, बन्द्रणा ह-मारी है ॥१॥ ऐसा छाचारज स्वायपद्यी जिल्ल परचामी, परम पृत्य, कस्पनीक, खचित वस्तुका महाराज ? व्यापकी व्यविनय व्यसातना (देवसिर्स घंषी) कीषी होय तो हाथ जोनी मान मोनी काण संकोकी वारंवार व्यापको खमावुं वुं, मस्यएण वन्द्रामि, नमस्कार करूं वुं १००० वार "तिखुत्तो" जावत परे

ब्रहणहार, सचित्त का त्यागी, वेरागी, महाग्रंणी, ए एका व्यनुरागी, सोजागी ऐहवा श्री व्याचीरजजी

न्नवे सरणो हो जो । इति वीत्रो पर ममाप्तम ॥

(४) चोयो पट उपाध्यायजी पचीस गुणे करी

सहित ठे,ते पचीस गुण केहचा ठे? इगियारा व्यंगना जणनहार श्री व्याचारंगजी, सुयगकांगजी, ठाणांग

जी, समयायांगजी, जगवनीजी, ङाताधर्मकयाजी, द्वयामकदमांगजी, अन्तगमदमाजी, अनुनरोबाइजी,

प्रज्ञनयारुग्गजी, विपायस्यजी। ए ज्याग खंगनी खर्ष पात्र सम्पूर्ण जाणे, खने (१४ पूर्व) कृताद पूर्व

द्ययं पात मन्यूण जाण, ध्यन (१४ पुत्र) क्रापाद् पूत्र क्रियार्थ।यपुत्रे, व।यप्रवादपुत्रे, ख्रान्तिनाम्बिद्यवादपूर्वे,

ज्ञानेप्रवादपूर्व, सत्यप्रवादपूर्व, च्यात्मप्रवाद, कर्मप्रवाद, विद्याप्रवादं, पञ्चखाणप्रवाद्, प्राणप्रवादं, स्ववंध्यप्रवादः क्रियाविशालपूर्व, स्रोकविन्द्रसारपूर्व, इंग्यारा अंग चऊदेपूर्व ए मूख १५ गुणे करी विराजमान ( १२ उपांग नणे ते ) उद्यवाइ, राय पसेणी, जि वाजिगम, पन्नवणा, जंबूदीप पन्नती चंदपन्नती, सुरज पन्नती, नीरयावितया, कप्पविमंसीया, पुष्फिचुितया वन्हि दिशा (४ मूल सूत्र) जत्तराध्ययन, दसर्वेका लिक, नंदीसूत्र, अनुयोग द्वार (४ वेदमंय) दशाश्रु ्रातंस्कंप, बृहत्कटप, व्यवहार, निशिय वत्तीसमो छा त्यक । आद्देइ अनेक अन्य के न्याय जाणनार नातनय निश्चय व्यवहार, चार प्रमाण, आदि स्वमत ाथा **अन्यमतका जाण, मनुष्य, देवता कोई** पण जेने वेवाद में ठखवाने समर्थ नहीं, जिन नहीं पिण जिन तरीखा, केवली नहीं पण केवली मरीग्वा ॥ सबैया। पढ़त इग्यारा खंग, करमांसुं करे जंग, पाग्वंमी के मान जंग, करण हुसियारी है। चवदा पूरव धार

एका अनुरागी, सोजागी ऐष्टवा श्री खांचारज

जवे सरणो हो जो।

बहणहार, सचित्त का त्यागी, वेरागी, महायुंणी,

वंधी) कीधी होय तो हाय जोकी मान मोकी का संकोमी वारंवार व्यापको खमाबुं वुं, मत्यएण बन्दा नमस्कार करूं हुं १००० वार "तिखुत्तो" जावत र

इति सीमो पद समाप्तप्र॥

ं (४) चोयो पद जपाध्यायजी पचीस गुणे क सहित ठे, ते पचीस गुण केहवा ठे? इगियारा खंग त्रणनद्दार श्री व्याचारंगजी, सुयगमांगजी, ठाणां जी, समवायांगजी, नगवतीजी, क्राताधर्मकथाज र्यपासकद्सांगजी, अन्तगमद्माजी, अनुनरोबाइज **प्रदन**ट्याकरणजी, विपाकसूत्रजी । ए इग्यारा खंग . पांच सम्पूर्ण जाणे, व्यने (१४ पूर्व) उत्पाद प्र ्, वोर्यप्रवादपूर्व, व्यस्तिनास्तिप्रवादपू

महाराज ? व्यापकी व्यविनय व्यसातना (देवसि

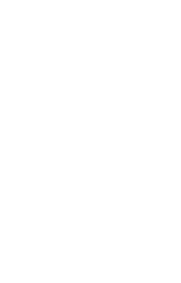




विन्हि दिशा (४ मूल स्त्र) ऊत्तराध्ययन, दसवैका-बिक, नंदीस्त्र, अनुयोग द्वार (४ वेद्यंय) द्शाश्च-क्षितस्केष, बहुत्केडप, व्यवहार, निशिष वत्तीसमी आ-त्वरपक । ब्राददेइ अनेक यन्य के न्याय जाणनार, सातनय निश्चय व्यवहार, चार प्रमाण, आदि स्वमत तथा अन्यमतका जाण, मनुष्य, देवता कोई पण जेने विवाद में ठखवाने समर्थ नहीं, जिन नहीं पिण जिन र्भरीसा. केवसी नहीं पण केवसी सरीया ॥ संवैया॥ ्र्वहत इंग्यारा छंग, करमांसुं करे जंग, पार्वकी को हिंमान जंग, करण हुतियारी है। चवदा पूरव धार,

85.

विद्याप्रवाद, पञ्चलाणप्रवाद, प्राणप्रवाद, अवेध्यप्रवाद, क्रियं विद्यालपूर्व, लोकविन्द्रसारपूर्व, इंग्यारा खंग, क्लेंद्रपूर्व ए मूल १५ गुणे करी विराजमान, (११ उपांग जणे ते ) उत्ववाइ, राय पसेणी, जिन्वाचिगम, पन्नवणा, जंबूदीप पन्नती चंदपन्नती, सुरजंपन्नती, नीरयाविद्या, कप्यविमंसीया, पुष्फिचुलिया,



प्राददेइने जघन्य तो दोय हजार कोक साधु साधवी, क्लुष्टा नव हजार क्रोम साधु साधवी, अढाइ द्रीप ह्मरे खेत्र में जयवन्ता विचरे है, ते साधजी केहवा हे ? पांच महात्रत का पालणहार, पांच इन्डी का जीतणहार, च्यार कपायना टालणहार, जाव सचे, कर्ण सच्चे, जोग सच्चे, कमावन्त, वैराग्यवन्त, मनः समाधारणिया, वयः समाधारणिया, काय समाधार-षिया, नाण सम्पन्ना, दंसण सम्पन्ना, चारित्र सम्पन्ना, वेदंखी समा छहिया सनिया, मरणान्ति समा छ-हिया सनिया, एहवा सत्तावीश गुणे करी सहित, वारे जेदे तपका करणहार, सतरे जेदे संजमना पासणहार, तेचीस ञ्राशातनाका टाखनहार, वयाखीस दोप टाखीने छहार पाणीका लेवणहार, सेंतालीस दोप टालीने नोगणहार, वावन छणाचारके टा-खनहार, तेमीया आवे नहीं, नेतीया जीमे नहीं, सिचित्रका त्यागी. अचित्र का जांगी, वावीस प-्रिसाके जीनणहार, अनेक खब्बिका धरणहार, 🔭



क्रूत्र सिद्धान्त ज्यारे मुख वसे, चवदे पृरव सारोए॥

ं हुउ ठत्तीक्षे ए । ट्याच्यायञ्जीने म्हारी बंद्घा, हुप्त 🗲 दो चहनिश दोसो ए ॥ नित्यः ॥ ए ॥ द्वादशांगी ं सूत्र प्रते, खान क्रेंग्रे खरू क्रमावे ए । ग्रुप प्रवीस करी शोजता, ज्यारी सेवा किया सुन्वपावे ए॥ निल्ल ॥६॥ गुउ सत्ताइन माधना, बीबरे हे खबारो ए । च्याने हो जो महारी बंद्या. खट्टोचर मो बारो ए ॥ निल्रः ॥ ९ ॥ एकमो स्त्रात गृष कह्या. नवकरः

्र वाडीन पूरा ए । एकाब्रचिन समरीए. ब्रान्तुर हे

ं दीतो ए ॥ निस्नः ॥ ४ ॥ द्याचारत तीने पदे, दीपे

निस्धाशा बारे हुखे करी दीपता, पहुंखे पद जगदीसो ्र । देव बाराबुं एहवा, जीता रागने रीसोए ॥ नि-दः ॥ ३ ॥ जात ग्रुप सिद्धा तदा, खतिशय हे इक-तीतो ए । दोय पदांता चेडा किया, ग्रुप हुळा पूरा

-निस करं साधुदीने वंद्या ॥ ए खाँकनी ॥ र ॥ निस करं सामुद्रीने वंद्रण आयी इत्प टमेदो ए। सक्त कर कर नरतालों, मिट जाने कुन्त खेरों ए॥





नमुं, श्री थादीश्वरजीरा पायाए । शासन शुद्ध <sup>प्रक</sup>

र्त्ताय ने, मोद्दा नगर सिधाया ए ॥ नित्यः ॥ ए ।। प्रथम जिनेश्वर सुत नमुं, एकसो हुवा पूरा ए । इष नव मुक्ति सिधावीया, करणी कर हुवा शूरा ए 🛚 निरयण ॥ रण ॥ चीरासी गणधर हुव्या, खटिध तण पंकारो ए । सहस चीरासी शिष्य हुव्या, खीघो सं जम जारो ए ॥ नित्यः ॥ ११ ॥ तीन सास्र शिष्यणी हुई, ज्यामे सहस चालीस शिवपुर पामीए । तिष्में

॥ १२ ॥ कपिल ब्राह्मण चिन्तवे, सोनी खेठं दोय मामाए । कोन खनव मुं धापी नहीं, तृष्णारा यहा तमामा ए ॥ नित्य० ॥ १३ ॥ जो हवे इच्छा यारी मांग खे, बोखे गय नरेको ए। ममता पाठी मुकी,

हुई बाई मोटकी, ज्यारो तो नाम बाह्मी ए ॥ निस्य

े 🤏 जिस्सा केसी ए ॥ नित्यव ॥ १४ ॥ पाँचसे

a प्रतियोधीया. कथो जिनेश्वर एमो ए । कर्मसः

मुक्ति गया, पाम्या पद्वी विमो ग् ॥ नित्यः ॥

खजो तुमे त्रूपो ए ॥ नित्य**० ॥१७॥ हेतु कारण क**ह्य घणां, न्यारा न्यारा नेदो ए। जत्तर दिनो अच्छीतरे नहीं छाएयो मनमें खेदो ए ॥ निख्या। राष्ट्र सुए राजी हवा, धन धन आपरी वाणी ए । अनेइ आप ं उत्तम हुवा, स्त्रागे उत्तम निर्वाणी ए॥ नित्य०॥१ए॥ । वीर करें गौतम जणी, सांजलजो तुमे साधोए। पांर् ; इंडी पायके, सत करो प्रमादो ए ॥ नित्य० ॥ १० । बहुश्रूती साधा जाणी, होइजो म्हारो नमस्कारो ए ज्यांरा गुण कह्या घणां. सोले जपमा श्रीकारो ए ॥नित्यः ॥ ११ ॥ यज्ञने पाने जट्या गौचरी, वोख्या ब्राह्मए तमकी ए. देवना तीम आया पीर्वे, वानी घणारं , धमको ए ॥ नित्य० ॥ २३ ॥ मरप्या ब्राह्मण निष समे, जाएं ऋषं।सर रहा ए । विनति करं। प्रति खा

॥ १५ ॥ नमीराय हुआ मोटका, प्रत्येक वुद्ध श्रीकार्र ए । ठोमी घणी ऋद्धि साहेवी, एक सहस आठ नारी ए ॥ नित्यव ॥ १६ ॥ शकेन्छ तिहां आविया, कर्र ब्राह्मणनो रूपो ए । दश प्रश्न तिहां पुठीया, सांच जातरो कारण को नहीं, करणीरा फल सारो प। ही केशी मोटा मुनि, पहोता मुक्ति मकारो ए॥ नित्य

॥ २५ ॥ चित्त उपदेश दियो खायने, बहादत्त चकवर्त व्यागे ए। पहेंसा बंध पिए पिनगयो, पीर्ट कार्र कीसी सागे ए ॥ नित्यः ॥ २६ ॥ हाथी कादामें कः रह्यो, ज्यूं थे मुकने जाणो ए। चित्त उत्कृष्टी कर्र्ण थादरी, पहोता है निर्वाणो ए ॥ नित्य ॥ १९ इपुकार राजा हुव्या, घर कमलावती नारो ए । ज पुरोहित जसा जारजा, तेना दोष कुमारो ए॥ नित्य ॥२०॥ वर्ज ही खनुकमे निसम्बा, खीषो संजम जारं ए । करम स्वपात्री मक्ति गया, चत्रदमा खघ्ययन वि स्तामे प ॥ नित्यः ॥२७॥ मंत्रती व्याहिने नीमस्य वाये। मृगपर वाणो ए । गद्रताखी गुरु देखने, मर्ता

् ही संकाणों ए ॥ तिरयः ॥ ३० ॥ स्वसःयो छ ुपि स्वामी माहरो, हुं इल छात्रसर में चुको ए अ करो हो महामुनि, ह छापरी बालाग तृषे



गुरु पासे खनिरामोए ॥ नित्य ॥ ३७ ॥ घर ठोमीने नीसरथा, एक इ निर्मेख खणगारोए । सिंह तणी पे बीचरता, धन ठवकायारा प्रतिपाझोए ॥ नित्य ॥ ॥ ४० ॥ खत्री राजरिपी चर्चा करी, तारचा प्रणाना नारीए । कर्म खपाइ मुक्ते गया, ज्यांरी हुं वलीहारी ॥ नित्य ॥ ४१ ॥ खनेक चक्रवर्ती नीसरथा ठोषी राज जंकारोए । चोसट सहस खंतेठरी, दोय दोष

वारंगणा खारोए ॥ नित्य ॥ ॥ श्र ॥ जरतेसरजी ब्या ददे, दस चकवर्ती सिरदारोए । सुधो संज्ञम पालने पहुंता मुक्त मकारोए ॥ नित्य ॥ ४३ ॥ इण सरपिर्ण मांती हवा. ब्याव राम निरवाणोए । वलजडा दीह

माँही हुवा, व्याठ राम निरवाषोष । वसजड दीर्व व्यादरी, ब्रह्मखोके सुर जाषोष ॥ निरव० ॥ ४४ / करकंकुजी व्याददे, गुडी समकित पामीष । राय <sup>ह</sup>

करकंकुजी ब्याददे, गुद्धी समकित पामीए। राय <sup>ह</sup> ाइ हुवा मोटका, सोलह देशना स्वामीए॥ तिर्य

ाइ हुवा साटका, साछह दशना स्वासीए ॥ ।तस्य ँ । ४५ ॥ दसारणजड वीर बांदवा, किथी जुलसाइ बी रीए । रथ मिखगास्या वाजखा, साथे खीथी पां<sup>वर</sup>



निवर समता खाणने, राग द्वेष दोय चेदेषः॥ ति ॥ ५५ ॥ साधे ऋणसाधे हरप सोग नहीं, इत्यांवि घणा जारीए । कर्म खपाइ मुक्ते गया, ज्यांरी हुँ खिद्दारीए ॥ नित्यण ॥**५६॥ से**णिक रयवामी निसंहें दिठा खनाथी मुनिरायए। रूप देखीने इचरजे थे पुँठे सेणिक वायए ॥ नित्य० ॥ ५७ ॥ घर ठोकी निसरया, यें क्युं खीधो संजम जारोए। देह थांरी

छुमास हे, जोगबीए जसे सुख जोगोए ॥ नित्र ॥ ५० ॥ यसता मुनिवर इम कहे, सांजस राजा बात

रका करे जैतो तुं नहीं, तुंठे आप अनायोए॥निह ॥ थए ॥ इए जुगमें कोइ केहनो नहाँ, जावसीर कर दोठोए । तिए कारए संजम खीयो, उत्तर दी मीठोए ॥ नित्य० ॥ ६० ॥ संमन खठारे चोसठे, प खोदी गांम चोमासोए। पूज जेमखजीरा पाटवी, ऋ रायचन्द्रजी जली हुलामीए ॥ नित्य० ॥ ६१ ॥

।; इति लघु साथु बन्द्रना समाप्तम ॥

## काजस्तगारा १ए दोप ।

गोने उपर पग राखे र, काचा छाची पाठी नोलावे २, उठंगण खेवे ३, मायो नमाय उनो रहे थ, दोनुं हाथ उंचा राखे ८, घुंघटो काढे ६, पगरे न्जपर पग राखे ७, वांको छामो रहे ७, साधुनी वरो-(वर रहे ए, गानीनी ओघणनी परे रहे रण, खनो

विंको रहे ११, रजोहरण ऊंचो राखे १२, एक खासण निरहे १३, आंख एक ठाम न राखे १४, माघो हलाने <sup>९</sup>१५, कुकुकार करे १६, कील चलाचे १७, व्यालस मोड़े

<sup>ति</sup>रेष, सुन्य चित्त करे रए॥ নি

सं

इये जगणीस दोप काउस्सगामें बज्यी। में .

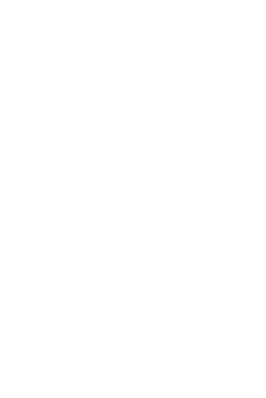
## वीस असमाधिया दोष ॥

1.5 द्वद्व करतो चाले तो १, विना पूंजे चाले तो र, पूंजे कहां पग धरे कहां तो ३. मर्यादासुं अधिका

पाट पाटला शय्या जांगवे तो ४. गुरुके वर्गोके सामी

बोले तो ६, यहुश्रुतिजीकी घात चिंतवे तो ५, एक विज्ञान को तो ५, पीठ पूर्व ग्रुप्य को तो ७, वार वार कोध करे तो ७, पीठ पूर्व ग्रुप्य को का अवग्रुप्यवाद योले तो ए, निश्चे कारी जाणा को तो १०, नवो कलह करे तो ११, क्षाए हुवे का सुकुं वार वार जधे (फिर फिर उदीरे) तो ११ श्रुप्यकाले सज्जाय करे तो १३, सचित्त रजा सुकुं वार अकाले सज्जाय करे तो १३, सचित्त रजसुँ खर<sup>ङ</sup> होय विना धूंजे ठाउँ वेठे चल व्यन व्याहरपार जाय तो १४, पहर रात्री उपरांत गाढे शब्दे घोले हैं १५, वारवार च्यार तीर्थमें कल्लह करे, गच्छ मांह जेद उत्पन्न करे तो १६, रे तुं बोले तो १७, ठवक . यके जीवांकुं असमाधि उपजावे तो १७, सवेरेड आहार खावे सामतांइ जोगवे तो १७, एपणा क्रमतुं व्याहार खांचे सामतांइ जोगवे तो रेए, एपणा कुमत ब्याहार जोगवे तो २०॥

वीम बोखे करी जीव नीर्थंकर गोत्र कर्म बांधे। ैरहंतजीरा गुण माम करे तो जीव कर्मरी कोक खपा



कर्मरी कोर्प खपाने उत्कृष्टी जानना खाने तो तीर्येष्ट्र गोत्र वांधे रे । दोय वेखा त्र्यावसग्ग करतो धको जी कर्मरी कोन खपावे जक्रष्टी जावना आवे तोःतीर्पर्स गोत्र वांधे ११ । वत पचक्लाण चोला पालतो हुई जीव कर्मरी कोम खपावे, उस्कृष्टी जावना खावेजी तीर्थेकर गोत्रे बांधे १२ । धर्मध्यान शक्रध्यान धर्म वतो थको जीव कर्मरी कोम खपावे, उरक्रप्टी नावनी खावे तो तीर्थंकर गोत्र वांधे **१३ । वारे नेदे तपस्य** करतो थको जीव कर्मरी कोम खपाने, उत्क्रप्री जीव ना आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे १४। सुपात्रने दान देवतो थको जीव कर्मरी कोम खपावे, उत्स्रष्टी जावन ब्यावे तो तीर्धकर गोत्र बांधे १५। वैयावद्य थको जीव कर्मरी कोम खपावे, उत्कृष्टी जावना तो तीर्थंकर गोत्र वांधे १६। सर्व जीवोने सुख 🗸

यको जीव कर्मरी कोम खपावे. जल्कप्री । आवे तो तीर्थंकर गोत्र वांधे १९। आपूर्वज्ञान

े यको जीव कर्मरी कोम खपावे, उत्कृष्टी जावः

ना छावे तो तीर्घकर गोत्र वांधे रह। स्त्रनी निक करतो यको जीव कर्मरी कोन खपावे, उत्कृष्टी जाव-ना छावे तो तीर्घकर गोत्र वांधे रेए। तीर्घकरनो

सार्ग दीपावतो धको जीवकर्मरी कोन खपावे, उत्कृष्टी जीवना आवे तो तीर्धकर गोत्र बांधे २०॥

इकवीस सवला दोष (सवल कर्म).

इक्ष्मात सम्या दान (सम्या कम्).

हस्तकर्म करे तो सबझो दोप र, मैधुन सेवे तो १, रात्री जोजन जोगवे तो ३, आधाकर्मी आ-हार जोगवे तो ४, राजिंपन आहार जोगवे तो ४,

'हार जागव ता ४, राजापक आहार जागव ता ४, ंखदेशिक ४, कीय १, पामीचे ३, ऋठिजे ४, ऋषिसंटेय ः४. अज्जोयरे ६, ए जदगमनरा ठव दोष आहार जो-

्गवे तो ६, वारवार पद्मक्षाण खेवे ठोमे तो ७. ठव महीना मांही नयो टोखो वदखे तो ७, एक मासमें

, ३ नदीके पाणीरो लेप लगावे तो ७. एक मानमें ३ , माया स्थानक सेवे तो ४०, सब्झातरनो आहार जो- जाणपुरु मृपाबाद बोखे तो १३, जाणपुरु खद्तादा क्षेवे तो १४, सचित्तं छपरे कठे बैठे तो १५, सि<sup>वित</sup> सनिग्ध माटी उपर ऊठे पैठे हाले चाले तो १६, इन्ह जाला सहित पाट पाटलाजोगवे तो १७, मूल १ की १ खंध ३ त्वचा ४ शाखा ५ पखव (प्रवाडां) ६ छूः

9 फल o बीज ए हरा पत्र to ए दश प्रकारनी हरी काय जोगवे तो १०, एक सालमें दस नदीरो क्षेप ह

गावे तो १७, एक वर्ष मध्ये दश माया स्थानक सें तो २०, सचित्र सेती हाथ पग खरमया होय जिस हायसं खाहार पाणी वेहरावे साधु सुव ता सवर् दोप लागे २१॥

२१ श्रावकना इकवीस गण.

व्यक्तप्र १. जशवंन २, सोम्य प्रकृति ३. स्रोह प्रिय ४. व्याकरो स्वताव नहीं ५, पापने करे ६, श्र

🖦 वंत ७. सळसक ०, सज्जावंत ए, द्यावंत १९ <sup>्रो</sup>हेयस्थ ११, गंजीर १२, सोस्यद्दष्टि १३, ग्रुणसागी ४, धर्मकची रूप, साचो पक्ष करे र६, शुद्ध विचारी 9, वृद्धोंकी रीत चाले रेण, विनयवंत रेए, किया ण माने २७, परहितकारी २१ ॥ प्रकारान्तरं ११ श्रावकके इकवीस-गुण. ं नवतत्वका स्वरूप जाणे १,धर्म करणीमें सहाय सहायता) वंठे नहीं २, धर्मयकी चलाया किसीकी क्षे नहीं ३, जिनधर्ममें शंकादि आणे नहीं ४, जे उत्ररो अर्घ ज्ञान धारे तिएरो निर्एय करनेमें प्रमाद हुरे नहीं ५, श्रावकरा हान खोर हानरी मींजी ध-मु रंगायमान रहे ६, म्हारो खानलो खस्थिर ने, जेनधर्म सार हे इसी चिंतवणा करे 9, श्रावकजी क्षटिकरत जैसा निर्मखा होच, कूम कपट राखे नहीं **ः, श्रावक घरका द्वार सवा प्रहर दिन च**ढे तांई रान सार उघाना राखे ए. श्रावक एक मातमें ठव गेसा करे १०. श्रावक राजाके खंते उर जंकार, शाह-रुगको दुकानमें जावे तो अप्रतीत ऊपजे ऐसे कार्य करे नहीं ११. जिया वन पचक्काण निर्मता पाले



त्र्याची हुने १७, त्राठ कर्मरा जाण हुने १७, ठती शि पोसेमें निज्ञा न खेने १७, इडधर्मी होने २०, छूघ पाण जैसो न्याय करे ११ ।

११ अध इकवीस बोल टोटो पमनेरा. १ प्रणने ग्रुणनेरी ब्याबसकरे तो ज्ञानरी टीः पने २ सामु साधवी होयने स्नान करे तो सम्यक्त टोटो पने ३ दोयबार ग्रह पर खाबस्यक न करे र वत पचकाणरो टोटो पने ४ व्याहार पाणीरो छोट्टा होने तो तपस्यारी टोटो पन ५ विना उपयोग, बार यणासं चाले तो जीव द्यारो टोटो पने ६ घन योव रुपरो मद्करे तो बाठी बारोक्स (निरोग) देर टोटो पने ९ बनानो दिनय न करे तो जिन आहु। टोटो पने ए कोध क्षेत्र करे नथा मिल्लो ट्यें नो हेन निवायने टोटो परे ए पर्वा . धर्म जागरणा न करे तो 🛒 ्रानगे टोटो परे श कीर्चिना साया कपटाई दगावादी

पर्ने ११ चिंता उचाद 🖫



अगर्वी हुवे १७, आठ कर्मरा जाण हुवे १०, उती शक्ति पोसेमें निंडा न क्षेवे १ए, दृढधर्मी होवे १०, दूध पाणी जैसो न्याय करे ११ ।

११ अय इकवीस वांख टाटो परुनेरा.

र जलने ग्रुणनेरो आलसकरे तो कानरो टोटो पने २ साधु साधवी होयने स्नान करे तो सम्यक्तरो टोटो पने ३ दोयवार ग्रुख पद आवश्यक न करे तो

वत पचलाणरो टोटो पने ४ आहार पाणीरो लोलुपी होंचे तो तपस्यारो टोटो पने ५ विना उपयोग, अज चणालुं चाले तो जीच द्यारो टोटो पने ६ धन योचन रुपरो मदकरे तो आठी आरोज़ (निरोग) देहरी टोटो पने ९ वनानो विनय न करे तो जिन आज्ञानो

टोटो पने ए कोथ क्किश करे तथा मिट्यो कबह उधेरे तो हेन मिलापरो टोटो पने ए पन्नती रातरी धर्म जागरणा न करे तो धर्म ध्यानसे टोटो पने १० माया कपटाई दगावाजी करे तो जहा की तिंनो टोटो पने ११ चिता उचाट सोग, नंकब्प विकट्प मनम सबे

मांहो मांही हेत मिखाप न राखेतो जैनमार्गरो टोटे

पड़े १० वर्त पचनलाएमें दोप लगाने, व्यालीने नहीं ुनिन्दे नहीं, प्रायिश्वत्त खेवे नहीं, तपस्या करे नहीं ू संखेपणा करे नहीं तो मोक्त मार्गनो टोटो पने १।

व्यपने १६ साधु साधवी श्रावक श्राविका च्यार तीर

चॅतो व्यक्त, बुद्धिको टोटो पने १२ साधु साधवी यार

हकरे, राग रागणी सुणे तो शीसवत-ब्रह्मचर्यरो टोटे

े श्री खग्हिंनजी ग नया खग्हिंन जाप्या धर्मग तथ तीर्थरा अवर्णवाद बोले तो सत्य धर्म पामर्णक

े-्रौ पर्ने १ए तपस्या, छाचार, जावनाका चोर हो

.... मद्रगुरुरो वचन नहीं माने तो छांची गतिर

े टोटो पने २० साधु साधर्व। गुरु, गुरुणी नी ब्याङ्गा छ

षे नो छराधकपणारो टोटो पने २१ श्री जगवानरा पन उपगंत तकी उठायने कहे तो शुद्ध मार्गरो ोटो पर्के ।

२१ पानन्तर पोपेरा दोप.

र पोपाके निमित्त पोपेके पहर्ल दिन हजामत करावे, क्य धुलावे, रंगावे झीर शरीरकी शुध्रुपा करे सो दोप। २ पोपाके द्यमले दिन विषय सेवे सो दोप

र पापाः धमख दिन दिवस्य सव सा दाप इ द्यानीण होपे इन प्रकार द्यपिक द्याहार जतर े पारणेमें (धारणेमें) करे सो दोप

४ विषय विकार दटे ऐसा मोदक पुष्ट, सरस छाहार एतर पारऐमें परे सो दोप।

थ पोपाके प्रस्व तथा उपकरण दसदर पुंजे प्रसिद्धेहैं - नहीं माठी रीते कोरे माठी रीते पुंजे मो दोष।

६ उद्यागिदिक है किया प्रशिष्टतम् विवे दिना पर-है, पीसी जागा पूजे पण जागा परते साती सीमे सीदे, काला सोते पूछे साती केन पात सी

दाप ।



१४ शरीरका मैख जतारे या पुंजे विना खाज खुणे निष्ठा लेवे सो दोप।

रथ विकथा या पर निंदा करे सो दोष। र६ कछह या मङ्करी करे सो दोष।

१९ अन्तीको आदर देवे और आसनका आमंत्रण करेसो दोष।

रण जापा समिति रखे विना चोले, खुले मुंढे वोले से। दोप।

रए दो घनी व्यतीत होनेके पेइतर स्त्रीके छासन पर

(जिस जगह स्त्री चैठी हो उस जगहपर ) पुरूप चौर पुरूप के च्यासन पर स्त्री चैठे सो दोप। २० पुरूप स्त्री को च्योर स्त्री पुरूप को विषय दृष्टि हे

२० पुरुप स्त्री को खोर स्त्री पुरुप को विषय दृष्टि है देखें सो दोष।

११ व्यपनी मालकीयती ( व्यपना रक्त्याहुया ) पोपा के उपकरण के निवाय व्यन्य चीजें अवतीकी आज्ञा सिये विना क्षेत्रं या अवती (खुसे आदमी) के पास कोई जो चीज मंगवात्रे मो दोष। श्रावकके २१ सक्त्य. १ ' श्रद्धप इच्छा 'योज़ी इच्छा-विषय स्प्या <sup>हरू</sup> रूपाटिकका विषय कमी करे, विषयमें असंत स

रूपाटिकका विषय कमी करे, विषयमें छालेत हर न होवे छुख वृत्ति रहे ।

'१ 'श्रहपारंत 'न्वकायका श्रारंत यदावे 'नहीं, नर्थः दंभ सेवन करे नहीं, जितना श्रारंत <sup>घटड</sup> में हो जतना घटानेका जयम करे ।

३ ' खब्पपरिग्रह्।' धनकी तृष्णा थोमी, कुकर्म ह व्यापारकी इच्छा नहीं, जितना प्रात हुना है उतनेही पर संतोप रक्खे, मर्यादा संकोचे।

४ 'धुरीक्षे' यहाचर्यवंत, तथा ख्राचार गोचार प्रे - नीय रक्के । थ 'सुष्ट्रि' यत प्रलाख्यान शुरू निरतीचार क

थ 'सुष्टिनि न्त्रत प्रत्याख्यान शुद्ध निरतीचार चंद परिणामसे पासे ।

, ६ 'धर्मिष्ट'-नित्यनियम प्रमाणे धर्म किया करे। ड 'धर्म वृत्ति'मन वचन कायाके योग सदा

उ. यन शांत भने वचन कायाक याग स पार्गमें प्रदृतता रहे। o ' कटप उपविहारी '-जो जो श्रावकके कटप (श्रा-स चार) है उसमें उम्र विहार करनेवाले अर्थात उ-तः पसर्ग उत्पन्न हुये जी स्थिर परिणाम रक्खे। ए 'महासंवेग विहारी '-सदा निवृत्ति (निदोंप) मा-िं गीमें तल्लीन रहे। ह o ' उदासी ' संसारके कार्यमें सदा उदासीन एति युक्त रहे। र्कं १ 'वेराग्य वंत'-सदा आरंज परिग्रहसे निवर्तने व की अजिलापा स्वले। । १ 'एकांत आर्च '-निष्कपटी-सरल-वाद्याञ्यंतर एक <sup>्र्र</sup> सरीखे रंहे ।

३ 'सम्यग मार्गी'-सम्यक् क्ञान दर्शन चरिता च-रित्ते में सदा प्रवर्ते। ध 'सु साधु -धर्म मागम नित्व वृद्धि करने आतम साधन करे, परिणामने अवन सर्वधा यंथ करदी

रे, फक संसार व्यवहार साधने इव्यमे हिंसा

श्चत्य शिष्यादिनी श्चागल कहे पत्नी वका श्चागल कहे तो श्राशातना। (१५) श्वशनादि लावीने प्रथम श्रांग

शिष्पादिने वतावे पत्नी चड़ाने वतावे ते आशातना।
(१६) अशनादि चहोरी (वेहरी) लावीने प्रथम अन्य
शिष्पने आमंत्रण करे पत्नी वमा ने आमंत्रण करे पत्नी आशातना। (१७) वमा साथे अथवा अन्य साध् साथे अलादि चहोरी लावी बमाने के क्र साध्रे पुत्रथा विना पोतानो जेना उपर प्रेम ते तेओने योह थोड़ें वहेंची आने ते आशातना। (१०) वमा साथ

जीयतां त्यां सार्व सार्व शाक, पत्र, रस सहित मंनों हा जीमतां त्यां सार्व सार्व शाक, पत्र, रस सहित मंनों हा जतावत्वची जमें (जीमें) तो व्याशातना। (१९९) वमान चोलाव्या जतां सांजलीने मोंन रहे ते व्याशातना ं १०) वमाना वोलाव्या जतां पोताना व्यासने रही ह े, परन्तु काम वतलावसे तेवा जब ची बमा पार्व जाय नहीं ते व्याशानना। (११) वमाना वोलाव्य ची व्यापे ने कहे के शंकहों जो? एवं मोटा सार्व छविनय ची कहे ते, छाझातना । (२२) पना कहे हे ह्या कार्य तमे करो, तमोने खान परे स्वारे हिन य बगाप्रति कहे के तमेज करों तमोने जान प्राप्ती ने छाशातना । (१३) दिष्य यमा प्रत्ये फनोर, पर्वतः नापा वापरे ते छाज्ञानना। (२४) शिष्य पगाने,जेम का राष्ट्र वापरे तेया शब्दों तेयीज रीते पापरे ते घाशातना । (१५) वमा धर्म व्याख्यान घ्यापता होय त्यारे सजामां जाई वांझे के तमा कहां हो ने कयां ठे ? एम कहे ते **ञाशातना । (२६) वना धर्म ट्या**-ख्या कहेतां शिष्य कहे के तमा जुली गया हो ते खाशानना । (१९) वमा धर्म व्याख्या व्यापतां (शप्य ते व्याख्यान सारुं न जाएँ। ख़ुद्दा न रहे ते व्याशातना। (१०) वना धर्म व्याख्या छापतां सत्तामां जेद थाय तेम श्रवाज करी दोड़ी उठ के बखत थई गयो है, आ-हागदि खेवा जवाने ने वर्गेग्ट, कही तंग कर ते छा-गानना । (१९) वहा धम व्याख्या खापनां श्रोताखो-नां मनने नाखुर्श। उत्पन्न करं ने खाशातना । (३०)

श्चन्य शिप्यादिनी श्चागस कहे पत्री वका श्चागञ्ज करे

तो आशातना । (१५) अशनादि लाबीने प्रयम अत्य शिष्यादिने यतावे पत्नी बड़ानें बतावे ते खाशातना। (१६) अशनादि वहोरी (वेहरी) लावीने प्रथम अन्य शिष्यने व्यामंत्रण करे पत्री बका ने व्यामंत्रण करे ते श्चाशातना । (१७) वका साथे खथवा खन्य साधु साथे खन्नादि वहोरी लावी वकाने के वृद्ध साधूने प्रवधा विना पोतानो जेना उपर प्रेम वे तेखोने योई योगुं वहेंची व्यावे ते व्याशातना । (१७) वम् साथै जीमतां त्यां सारुं सारुं शाक, पत्र, रस सहित संनोइ, **उता**यसयी जमे (जीमे) तो व्याशातना।(१७) वमाना धोखाव्या ठतां सांबद्धीने मीन रहे ने खाशातना। (२०) बंगाना बोसाव्या वनां पोनाना व्यासने रही हा कहे, परन्तु काम वनसावसे नेवा तय यो वसा पासे जाय नहीं ते व्यासातना । (२१) वमाना वोखाव्या थी थावे ने कहे के शुंकहों जो? एवं मोटा साथे

क्रविनय पी कट्टे ते, धारातना । (११) वना कहे के आ फार्य तमे करी, तमीने जान यसे त्यारे िन ध्य बनाप्रति कहे के तमेज करो तमीने खान घड़ी ते सामातना । (२३) शिष्य चना प्रत्ये कडोर, एरिस नापा नापरं ते खाहातना। (२४) हिन्य यमाने, जेम दना शब्द वापरे तेवा शब्दों तेवीज रीते वापरे ते चाहातना । (२५) वना धर्म ब्याख्यान चापता होय त्यारे सनामां जाई यांचे के तमा कहा हो ते कयां हे ? एस कहे ते खाशातना । (१६) वका धर्म व्या-ख्या कहेतां शिष्य कहे के तमी जूडी नगरा हो ते ब्राह्मतना । (१९) वका धर्म व्याख्या व्यापतां शिव्य ते व्याल्यान साहं न जायी खुश न रहे ते व्याशातना। (१०) बना धर्म व्याख्या छापतां सत्तामां जेट थाय तेम घित्राज करी दोड़ी उठे के बखत घई गयो है. खा-हागदि खेवा जवानं हे वर्गेन्ह, कही चंग करे ते खा-गानना । (१९) बना धर्म ब्याच्या खापनां श्रोता छो। गं मनने नाख्रा। उत्पन्न करे ने खाशानना । ३०)

व्याशातना । (१४) व्यशनादि वेहरीः खोवीने श्चन्य शिष्यादिनी श्चागल कहे पठी वका श्रीगार्स

तो व्याशातना । (१५) व्यशनादि हानीने प्रयम व्यन शिष्यादिने बतावे पत्नी वडाने बतावे ते खाशातनी

(१६) खशनादि वहोरी (वेहरी) खात्रीने प्रथम सन्

शिष्यने आमंत्रण करे पत्नी वका ने आमंत्रण करे

श्राशातना । (१७) वमा साथे श्रयवा श्रन्य सा साथे अज्ञादि वहोरी लावी वकाने के वृद्ध साप् पुरुषा विना पोतानो जेना उपर प्रेम हे तेखोने थी योद्धं पहेंची आने ते आशातना । (१०) विकासी जीमतां त्यां सारुं सारुं शाक, पत्र, रस सहित मेंनीह

उतावखयी जमे (जीमे) तो आशातना। (१ए) वर्षाते घोखाव्या वतां सांजलीने मौन रहे ते आशातना

ंण) वकाना बोलाव्या ठतां पोताना खासने रही ह ्रे, परन्तु काम वतलावसे नेवा जय थी वसा पार जाय नहीं ने खाशानना । (११) वदाना चोखाव्य थी आवे ने कहें के शुंकहो ठो? एवुं मोटा सार्थ



शिष्य पोते व्याख्यान शरु करे ते व्याशातना । (श वकानी शय्या∸पथारीने पगे करी घते, हार्षे के

आस्फालन करे ते आज्ञातना। (३१) वनानी श्रंत पंचारी उपर कनो रहे, घेसे, सूचे ते खाशाती (३३) वमाथी उच खासने के वरावर खासने वेस उत्ता रहेवुं. सूबुं वंगैरह करे ते आशातना। यह दीप टालकर वंद्षा करणी॥ ॥ श्रय ३६ वोल परम कल्याणका ॥ 🕆 र तपस्या करीने नीयाणो न करेतो जी<sup>ह</sup> परम कट्याण होत्रे, किणनी परे तामली तापस परे। २ समकित निर्मख पासे नो जीवरो परम द्दोवे, किणनी परे श्रेणिक राजानी परे। ३ म कायानो योग शुज प्रवर्तावे तो जीवरो पर कस्याण होते, किणनी परं गजनुकमासनी परे। **उ**त्ती शक्ति कमा करे तो जीवरो परम कट्याण हो

किश्वनी परे परदेशी राजानी परे । ५ पांच महानत निर्मला पाले तो जीवरो परम कट्याण होवे, किणनी परे गोतमस्वामीनी परे । ६ कायरपणो ठोके शूरपणो आदरे तो जीवरो परम कह्याण होवे, किणनी परे सेलक राजऋषिश्वरनी परे। । पांच इंडियोने वश करे तो जीवरो परम कल्याण होवे, किलनी परे हरिकेशी सुनिराजनी परे। ए भाषा कपटाई ठोमे तो जीवरो पर्म कटयाण होवे, किणनी परे मिल्लनायजीना पूर्वजवना ठए मित्रनी परे। ए खरे धर्मनी खास्ता राखे तो जीवरो परम कल्याण होते, किएनी परे वर्ष नामे नटनी (वर्ष-नागका मंत्रीनी)परे। १० चर्चा वार्ता करीने सादहणा ्रशुद्ध करे तो जीवरो परम कल्याण होते, किणनी परे के सीमुनि, गोतमस्वामीनी परे । ११ छुखी देखीने जगनके जीवोंपर करुणा करेतो जीवरो परम कड्याण होवे, किणनी परे मेघकुमाररे पाठले हाथीरे जवनी परे। ११ खरे बचनरी छाशना राखे तो जीवरो परम क छाण होवे, किणनी परे छाणंदजी कामदेव श्रावकर्नी परे। १३ श्रदत्तादान त्यांगे तो जीवरों प्रम कृद्याण किणनीपरे अवक परिवाजकर्के सातसे 💥 🚉 १४ शुद्ध मने शील पाले तो जीवरो परम होवे, किणनी परे सुदर्शन क्षेत्रनो परे एत्रपूरी... होमीने समता खादरे तो जीवरो परम कड्याण हैं। किएनी परे कपील बाह्मण (केवलीकपील सुन्नि परे । १६ सपात्रने दान देवे तो जीवरो पर्न होते. किणनी परे रेवतीजी गायापतण परें। १७ चलीये चित्तने स्थिर करें हो वरो परम कल्याण होवे, किणनी परे परे। रठ उरहृष्टो तप करे तो जीवरो परम होवे, किणनी परे धन्नाजी व्यलगारनी परे। वैयावच करे तो जीवरी परम कल्याण होवें. पर पंचकजी मुनिनी पर । २० व्यनित्य जायना 🗒 तो जीवरी परम कट्याण होते, किणनी परे ीनं परे। ११ उत्कृष्टी कमा करे तो ्म कस्याण होते. किणनी परे द्यर्जुनमाजीनी 🧦 · 22 जिन धर्मरी खाशना राखे तो जीवरो परम कराउँ ष्टप्ण महाराजनी पर। १६ उरहाष्ट्रो ध्यितमह करे तो जीवरो परम कव्याण होवे, किणनो परे टंटण मुनिरा-जनी परे। १९ दात्र मित्र उपर सिरावा ताव राखे तो जीवरो परम कव्याण होवे, किणनी परे उदाइ राजानी परे। १० खनचरी हेतु जाणीन दया पासे तो जीवरो परम कव्याण होवे, किणनी परे धर्महची ध्यणगारनी परे। १७ कष्ट पड्या दीक्षमें हद रहे तो जीवरो परम कव्याण होवे, किणनी पर चंदनवाला. नथा उनकी मातानी पर। ३० राग खाया हाय खोह न करे तो खारमारो परम कव्याण होवे. किणनी पर खनाथी

जीनी परे । ३१ खान्नवम सवर निपजावे तो खाल्मारो परम कल्याण होवे. किण्नी परे संयति राजानी परे ।

24

तीर्घन शाता उपजाये को जीवने परम कल्याण होये, किणनी पर तीने देवलोकरे इंडरे पानले नवनी परे। २४ जल्ले विनय करे तो जीवरो परम कल्याण होये, किणनी परे चाहुबलजीनी परे। २५ छल्लेष्टि धर्मनी दलाकी करे तो जीवरो परम कल्याण होये, किणनी परे ३२ परिसद्द व्याया 'समजाव वर्ते तो व्यारमीरी परम कट्याण होवे, किणनी परे मेतार्यजीनी परे रेश असट जावसे दान देवे तो जीवका परम कर्टगाएँ होवे, दिणनी परे सुवाहका विद्या जब शोमिककेपरी रेध चलायमान मनने रोके तो जीवका परम कर्ड्यां होते, किणनी परे प्रसन्नचंद मुनिनी परे॥ ३५ बती गिर करके नी चेते तो जीवका परम कटवाण होते किणनी परे अरणिक मुनिनी परे।। ३६ आपर

किणनी परे खंधक मुनिनी परे ॥

३४ श्वसङ्कायरो सर्वेयो. तारो दुटे रातिदिशा, श्वकाले मेह गाजे,बीर

श्राया धीरज राखे तो जीवरो परम कट्याण हो<sup>है</sup>

क्मके खपार, खीर जुमी कंपा जारी है। वासचर्ड ्र व्याकारो व्यगनकाय, काली घोली धुंध, व्यी ्रियान न्यारी है। हाझ, मांम, खोही, राध, वैक् मसाण यस, चंड, सूर्य प्रहण, खीर राज्य मृख्युटार्व

है। पानकमें मरवा पड़्या पंचेंड्री कक्षेत्रर, ए बी



परम कट्याण होवे, किण्मी परे मेतार्यजीनी पे देहे असट जायसे दान देवे तो जीवका परम कट्ये होवे, किण्मी परे सुवाहुका पिछसा जब शोमिककेषें ३४ चसायमान मनने रोके तो जीवका परम कच्ये होवे, किण्मी परे प्रसन्नचंद मुनिनी परे॥ ३५ वर्ष गिर करके जी चेते तो जीवका परम कट्याण हो किण्मी परे ट्यरणिक मुनिनी परे॥ ३६ ट्याप ट्याया धीरज रासे तो जीवरो परम कट्याण हो किण्मी परे संघक मुनिनी परे॥

~>\*\*\* ३४ व्यसःकायरो सर्वेयो.

२४ व्यसःकायरो सर्वयो. सारो दुटे गतिदिशा, व्यकाले मेह गाजे,वी

कमके व्यपार, खोर तुमी कंपा नारी है। बाह्यवर्ट क्राचन, व्याकाशे व्यगनकाय, काली घोली धुंध, खैं

्रांचन, व्याकाश व्यानकाय, काला घोली धुंध, व्य ्रांचान न्यारी है। हाम, मांम, खोही, राध, वैर् मसाण वर्ष, चंड, सर्व प्रवण, कीर सुन्य प्रवास

मसाण बसे, चंड, मूर्य बहण, खोर राज्य मृत्युटर्रि हैं। पानकमें मरधा पड़्यां पंचेंडी कसेवर, ए बी



वहां तकको (४ प्रहर ) द्यसन्काय । उ 'जरकांत्रे' कहता श्राकाशमें मनुष्य पन्नु पिशाचादिक के न्त्रि दिस्ते वहांतक श्रसन्काय । उ 'सुम्मीए' कहता कांधी

पूर्र पने वहांतक व्यसन्जाय ए 'महिये' कहता है। भूंबर (सेगरबा) परे बहांतक ख्रासन्काय । १० 'क्रभार्ष कहता व्याकाशमें भूखका गोटा (दोटा) चढ़ा हुन दिग्ये वहांतक श्रसःकाय। १९ 'मंस' कहता मांत ह ष्टिमं याचे वहां तक व्यसक्ताय। १२ 'सोणी' कहती रक (खोही) दृष्टिमें खाने नहांतक खसज्जाय। है 'थरी' वहता थिय (हमी) दृष्टि में थाये वहांता श्यसन्काय । २४ 'टघार' वहता जिष्टा दृष्टिमें यो बहांतक व्यसःकाय । १५ 'सुसाव' कहता इमशानी बारी तरफ २००, २०० हाय व्यसक्ताय । १६ शा मरणे' कहता राजाके मृत्युकी इसरो राजा बेसे की ू.. इमनाख रहे. बहानक व्यमकताय । १७ 'शयदुग<sup>य</sup> दहना गनायांका युद्ध होवे वहांनक श्र**स**क्काय। <sup>१</sup> 'चंदवरामें' बदना चडवहण होय तो जवन्य ए ह रहुष्ट १२ प्रहर, खमास होनेसे १२ प्रहर, योना महण होनेसे कमी काल समझना । १७ 'सुरोवरागे' कहता सूर्य्य यहण होय तो १२ प्रहर । २० 'जबसंतो' कहता पंचें क्षियका कलेवर निर्जीव देह पड़ा होवे तो चारो

तरफ १००-१०० हाथ असज्जाय। २१ आश्विन सुदी पूर्णीमा असञ्जाय। २२ कार्तिक वदि प्रतिपदा (प्रथमा) श्रसन्काय। १३ कार्तिक सुदी पूर्णिमा श्रमन्काय। १६ मृंगशोर्प वदि प्रतिपद्। व्यसङ्काय।१५चेत्र सुदी पूर्णीम ञ्चसन्जाय। २६ वैसाख वदि प्रतिपदा च्यसन्जाय। २६ व्यापाढ सुद्रो पूर्णीमा व्यसक्ताय । २० श्रावण वि प्रतिपदा असन्काय । १ए नाइ सुदी पूर्णीमा अस क्कांय। ३० खादिवन वदि प्रतिपदा, ये १० दिन खोर रात सम्पूर्ण व्यसन्काय पालना। ३१ प्रनात। ३१ दे प्रहर ( मध्यान ) । ३३ शाम । ३४ मध्य रात्री । र ध वक्त शेषकी ( वेहजी ) ३१-३१-३३-३४ वी, एकें। सुहर्त असङ्काय । ये ३४ असङ्काय टालकर सूह

जणना ॥ इति ॥





(१९) साग विहं के खीडोत्रीका पता हरा साग। (१०) माहुर विहं के॰ वेलरा फल ট 💯 💯 (१६) जीमण विहं के॰ जो वस्तु जीमणेसे स्त्रावे र सकी विधि. गिन्ती। ·(२०) पाणी विहं के० पाणी । (११) मुखनास विहं के॰ सुपारी, खोंग इखायची, र

गेरइ मुख साफ करनेकी वस्तु । (२२) वाह्नि विहं (पन्नो) के॰ पगमे पेरणेकी जी नस [चोज] पगरखी प्रमुख ।

(२३) बाहण बिहं के॰ सवारी घोका, गाकी, ठंट वगेरह ।

(२४) सयण विहं के॰ सुंखेकी सेजा (ग्रय्या) वितंग थादि । √ए) सचित्त बिहं के∘ सचित्त वस्तु खाणे छाश्री।

(२६) दच्य विहं के० पूर्व कही जीके सिवाय प्रसग

ड्य रहा सो।



मृगका सींग चमना इत्यादिकका व्यापार श्र

वक न करे।

(७) सबस्वाधिउके के॰ सास नीझ, साजी, सीए सोहागा, मेनसील इत्यादिकको व्यापार नको (७) रसवाधिउके के॰ रस, मदिरा, घी, मधु (सहत इत्यादिकको व्यापार श्रावक न करे। (७) विषवाधिउके के॰ विष (जहरका ख्रफीम, एं सीपो, हरताल, गांजा) को व्यापार श्रावक न करे।

 (रें) केसवाणिउके के० चंवर, केश प्रमुखको व्याणा श्रावक न करे।
 (२१) जंतिपित्तणया कम्मे के० तिल्ल, सरसु, श्रावती घाणीमें पिल्लायकर तेल निकलायकर वेचनेका

घाणीमें पिखायकर तेख निकक्षायकर वेचनेका व्यापार करे नहीं नथा घाएया, कछ्यांको व्या पार न करे।

पार न करे।
(११) निह्नंच्छण कम्मे केल्टोघमा, घामा, खादि खती
कराय कर वेचलको ज्यापार न करे।

- (१३) दविग दावणया कम्मे के॰ वनमें, खेतमें आग खगावे नहीं, खेतकी वाम फ़्र्कावे नहीं।
- (१४) सरदह तलाव परिसोसण्या कम्मे के० सरवर, कुण्ड, तलाव को पाणी सुकावे नहीं, एसा व्या-पार करे नहीं।
- (१५) असइ जल पोसल्या कम्मे के हिंसक जीव श्वान, विद्वी, तीतर, क्रुक्तमाने आपका आजी-वकाके वास्ते पाले नहीं तथा वैश्यादिकने न पोपे तथा उनको क्रुशील आणाचारको पदसो आप न लेवे, हिंसाकार्क पापकार्क काममें लोजरे वस पडकर ज्यापार नहीं करे।
  - (७) खात्रमा व्रतमें श्रावकजी खनर्थादएमका त्याग करे ।
  - (ए) नवमा वतमें श्रावकजी शुद्ध सामायिक करे — (समायिकको नियम राखे)।
  - (१०) दसमा व्रतमें देसावगासिक पोपा करे, संवर करे. चवदे नियम चनारे।

## ,॥ चडदे∗नियमके नाम्॥३*५७*३ (७

(१) सचित-याने कचा पाणी, कचा दाना, कबी हरी ( विवासी ) वर्गेरह संचित् ( जीनपुर्क) र्थनेक वस्तु समकता जिसकी गिणती तथ वजन साथ मर्यादा अपनी इंड्रा अनुसारकी (१) इच्य-याने जितनी वस्तु श्रेपने मुहमें खेनें

छावे सो उनकी गिणती रखकर मंगीदा करे। (३) विगय-याने इथ, दही, घृत, तेख, उर्फ (मीरे) की गिनती तथा यजन साथ मर्यादा करें। (४) पन्नी-याने जुते, तक्षिये, मौजे, समाउ इत्यादिक पैरमें पहरंनेको मर्यादा करना याने शिलतीरी

रखकर जपरायेंतका [उससे ज्यादाका] त्याग करें संगटेकी जयणा ( संगटेरो दोप नहीं ) रे (५) तंम्बोल-याने लोंग, सुपारी, इसायची, पाने,

जायफल, जावंत्री वगेरे मुखवासकी मर्यादाकरे। (६) वरथ-बस्त पहरने, खोडनेकी मर्यादा गिणतीतें

- ) कुनुम-याने कृत, छत्तर, तेत इत्यादिक जो सुघनेमे छावे उसकी मर्योदा करे।
- ह) बाहन-याने गाडी, रथ, वग्घी, तांगा, एका, वेजी, हाबी, घोना, पालखी, न्याना, रेलगामी, टेक्सी (मोटर) रिखला, घाइसीकल, मोटर लाइकल, कुगी, न्याव, वोट, हवाइ जहाज व
- साइकझ, कुगा, न्याव, बाट, ह्वाइ जहाज व-गेरह (तिरतो, फिरतो, चरतो उनतो) सव प्रकारकी सवारीकी मर्यादा करें।
- ए) सयण-याने गादी, तिक्या, गलेचा, छप्परिक् लंग, मांचा, खुरसी, मकान वॅगेरे जो वेठनेके तथा सोनेके लिये काम आवे उसकी मर्यादा करे।
- विलेपण-याने केसर, कुंकुं, चन्दन, तिल, पीठी, लेप, सावण, सुरमो वगैरह शरीरके विलेपन कर् रनेकी मर्यादा करे।
- ে दिशी–याने पूर्व. पश्चिम. दक्षिण. उत्तर. उर्वी नीची यह ठव दिशोमें जाणेकी मर्यादा करें।

(११) व्यवज्ञ-याने कुरील (खी सेवन) की रात मर्यादा करे दिनका त्याग करें। (१३) नाहावण-याने स्नान, मंझन करनेकी मर्ग करें। (१४) जत्तेसु-याने व्याहार, पाणी करनेकी मर्यादाकी

॥ उपकायके ध्यारम्त्रकी मर्यादा करे ॥ (१) पृथ्वीकाय-याने मुरक, मही, खकी, गेरु, हिर<sup>ह्न</sup> निमक व्येरह सचित्त पृथ्वीकायके ध्यार<sup>हा</sup>

मर्यादा करे (२) व्यप्पकाय-याने सब जातके सचित (क<sup>डा</sup> पाणी पीने तथा वर्तनेकी मर्यादा करे तथा<sup>६</sup> र्डाइकी मर्यादा करे।

(३) नेवकाय-याने व्यक्तिका व्यारम्त चुसी, चहुँ चिमाम मेशनी ) हुका, चीमो, चीवम, चुँ चम्पन्की मचीदा करे या स्थाम करें। (४) बाउकाय-याने प्रचीम, पंचामे, कपकेत, व लेमे पना चमारसे हवा लेनेकी मर्योदा की

- (थ) वनस्पतिकाय—याने हरी, विजोत्री, फूब, फब, पाजी, साग, तरकारी, टाज, जन वेगेरह सचित्त वनस्पतिकायकी मर्यादा करे या त्याग करे।
  - (६) त्रसकाय-याने वेन्डी, तेन्डी, चेंरेन्डी, पश्चेन्डी वंगेरह हालता चालता प्राणीने जाणकर मारने-का पचक्ताण करे।
    - ॥ तीन प्रकारके व्यापारकी नर्यादा ॥
    - (१) छस्ती-पाने शल, त्रुरी, कटारी, चक्कु, हाल, तल्लवार, यन्द्रक कतरणी (केंची) वगरह ला-तिका शलोंकी मर्यादा करे गिणतीले उपरापें-तका त्याग को।
  - (२) सम्मी-पाने कलन, फांडन्ट्रेन पेन, पेनसल, का-गल, पल, खन, वही वर्षेग्ह जिल्लेके मामानकी मर्पादा को।
    - (३ कम्मी-बाने करमाणीका काम क्वेन, बराचा, कुंक,बाबकी बॅगस्ट की मुर्बादा दा स्वास करे।

ये सब मिसकर २३ तेवीस बोल हुये इन व सोंकी मर्यादा श्रावक श्रांत्रिकाश्चोंको नित्य प्रति ( मेशा ) सुबह करना चाहिये, श्चीर पिठा शाम याद करसेना चाहिये कमलागे सो निर्करा हां ऐसा करनेसे सब दिनमे राज जितना पाप सम

पंसा करनेसे सब दिनमे राष्ट्र जितना पाप सर्ग हैं, ब्यार मेरु जितना पाप टल जाता है, पेती। यादा करनेसे महा फलकी (लाजकी) प्राप्ति हों

हें, नरक, तिर्यंच की गित टल जाती है छोर हैं नि प्राप्त होती हैं। (११) इत्यारमे बतमें श्रायकजी प्रनि पूर्ण पोपी हैं (११) बारमा बतमें श्रायकजी मुजतो दान देवे ग

े. पर इच्य की व्ययोग्य इन्छा करना न चाहिए २. किसी जी प्राणी का बुग न चिनवना.

- ३. कोई जी असत्य वात सत्य तरीके आदरना नहीं.
- किसी त्री शल्स [आदमी] को दिख में रंज [पुःख]
   होवे ऐसा कटु यचन कहना नहीं.
- थ. अपने पर इतवार [नरोसा] होने, सलाह पुने तव कीसी को खोटी सलाह देना नहीं.
- ६. पर निन्दा करनी नहीं.
- विना प्रयोजन गपां [गप्प्यां] मारकर समय फनुख गमाना नहीं.
- ए. चेगर [चीना] दी हुई चीज खोजसे या श्रन्यायसे प्रदेश करणी नहीं.
- ए. किसी जी जीव की हिंग्सा करणी नहा.
- पगर्ड स्त्री के साथ अयोग्य बरनाव से चलना नहीं पाने अयोग्य बरनाव रखणा नहीं.
- ं मनको स्थिर स्वता च हिए.
- . १. पांचा इन्डिया को बन से रखा।
- 12 --- --- --- --- ---
- इर स्रुत (प्रकार) से मन्य बोखना चाहिए.

. ध. व्यापरो इसरे व्यपराध कियो हुवे तो व्यतः करण्ड

माफी देखी, खौर खाप इसरेरी खपराघ कीर हुवे तो खंतःकरणसु माफी मांगणी.

१५. दिन प्रति शक्तीव्यनुसार कुठ दान करनी.

१६. द्या का कोई श्रव्हा कार्य सब ऊपर करना. रण. देव गुरु धर्म की चक्ति करना खीर वर्नी विनय करना.

१०. मन वचन काया से शुद्धता रखनी. १९ ज्ञान सीखने में प्रत्येक दिन थोकी पन टी निकास सेणी.

२०. जगत के सत्र जीव का कल्याण हो ऐसी नावना प्रति दिन नावणी.

हिनशिका। (१) देव व्यक्तिंत, गृह निष्यंय खाँर केवसी प

म्यो दया धर्म, यह नीनों धर्म के व्यवहारिक तार्व

क, जीवलो, मतलो, ए सब कर्म से प्राप्त होते हैं, इस ------

वादत धेर्य्यदान हुर्प सोच न करे।

(१५) (प्रक्ष) चूडला क्या?( ठत्तर) अपला क्या हुवा उपकार को (आप किसी पर उपकार

किया होय तो उसको याद मत कर इसो जाए की कोई निमित कारण सुं उपकार होंगे का था। (प्र<sup>क्र</sup>)

च्चीर हड़ला क्या? (ठहर ) इन्त (कोई इन्त देवें -तो इसी जाल के म्हारो पाप कर्म को उदय हैं कोई जब में में इन्त दिया हैं, किसी का दोप नहीं, बी-, ब्या कर्म घोष्यों दुटसी) कटसी (सम जाद सुं सहन कर)।

हुद्दा ।

सुत दिया सुन्न होत हैं. इन्त दिया सुन्न होय। अप हुए न और को. आपए हुए न कोय॥१॥

्रे (१६) मीठो बोडे. प्रशंतिकारी बचन जिनय नम्रता स्वे सम्पत्त स्वे,पराचा खबगुर नहीं ंन देवे. सामडेरी सरडी खरापे. याने सा



ज, जीवणो, मरणो, ए सव कर्म से प्राप्त होवे हैं, इस वावत धैर्य्यवान हुए सोच न करे।

(१५) (प्रश्न) जूलणा क्या ? ( उत्तर ) व्यपणा किया हुवा उपकार को (व्याप किसी पर उपकार

किया होय तो उसकी याद मत कर इसो जाए की किया होय तो उसकी याद मत कर इसो जाए की कोई निमित कारए सुं उपकार होएे का था। (प्रश्न) और उजणा क्या? (उत्तर) इन्ल (कोई इन्ल देवे तो इसी जाए के म्हारो पाप कर्म को उदय है कोई जब में में इन्ल दिया है, किसी का दोप नहीं, वांध्या कर्म जोग्यां बृटसी) कटसी (सम जाव सुं सहन कर)।

द्हा।

सुख दिया सुख होत हैं. पुःख दिया पुःख होय। आप हणे न ओर को. आपण हणे न कीय ॥१॥ (१६) मीठो बोले, (प्रीतिकारी वचन) विनय

करे, (नम्रता रखे) सम्पत रखे, पराया अवगुण नहीं बोले, दान देवे, सामलेरी मरजी अराधे, (याने सा- मखेरी मरजी माफिक चले ) सामलेरी यंग चे

जाणे, ए अमुख्य वशीकरण मंत्र है।

निन्दा नहीं करना।

पराये कपर मत माझ।

कार कर।

(१९) पाप की निन्दा करना, परंतु पापी व निंदा नहीं करना, स्वात्मा (ञ्चापरी ञ्चारमा)<sup>दं</sup> निन्दा करना, परन्तु परात्मा ( इसरेरे खात्मा)

(रा) "मेरा सो सद्या" इस इन को ने (त्याग कर) "सद्या सो मेरा" इस न्याय को र्स

(१ए) व्यार्तध्यान, रूड्यान, ठोक, परायेरा श्र वगुण ढाक, स्वात्मारा खवगुण काढ, खापरा खवगुण

> युहा. निज आत्म को दमन कर. परव्यातम को चीन । परमात्म का जजन कर, जो तुं हैं परवीन ॥

(१०) सर्व जीवों से मित्रता, गुणाधिक पर प्र-मोदता, जुलिया पर करुणा और टुप्टों पर मध्यस्थ-ता सो सन्नाव है।

इति हितशिक्षा समाप्तम्॥

## महानुजाव वंदना।

-----

धन्य श्री ऋपजदेवजी, अनंत वल रा धणी, काया ने कांपसी, धन वा पुरुषां ने वरसी तप चौिक-हार कियो, हे जीव, ठमठरीरो उपवास तो तूंही चौ-विहार कर, घारे कायारी गरज सरसे, च्यार हजार साधुरे परिवार सुं दिका लीधी, दश हजार साधुरे परिवार सुं ठ दिनांगे संघागे सुं मुक्ति पहुंता बांने महारी वंदणा नमस्कार होय जो ॥१॥

धन्य श्री महावीर स्वामी. अनंत वलरा धाएी, काया ने कांपसी. धन जसम पुरुषां ने, वारे माम तेरे पक्ष चीविहार किया. ठ मानी चीविहार किया. पं-



**लागी, मेघकुमार**जी मन में रातरा चिंतवना करी, सदाइ तो हुं छावतो जगवानरे समीपे जव ज-गवान मेघजी मेघजी कहकर वतलावता, आज कीणी मने मेघलो कहकर वतलायो नहीं, में कांड् नगवान रो खायो नहीं, पीयो नहीं, खीयो नहीं, दीयो नहीं. छोघो पातरा मुंहपत्ति देइने परनाते म्हारे घरे जासुं. मेघकुमारजी जगवान रे समोसरण में छाया, जव जगवान मेघकुमारजी ने वतलावे, खावो मेघ, खावो मेघ, रात तो तुम्हे प्रःखे प्रःखे काढी. एक रात्रि व महिना जीसी काढी, जगवान पुरवले जवरो बृतान्त वतायो. हाथीरे जब में सीसियेरी दया पाली, श्रेणिक राजारे रिक्षि पर बेटा थया. हे मेघकुमार ! निर्येचरे जब में इतनी बेदना सहं!. तिण्युं या बेदना तो की-तीक है. मेघकुमारजी मन मे चित्रवता करीके ब्याज पीत दोय नेत्र की सार करसुं. छीर शरीर की सुश्रुपा नहीं करं. इसी हासा करीने विजय विभाने गया. वांने म्हारी बंदणा नमस्वार होयजो ॥ ३ ॥

हायजोम मानमोम पुज्य जगवान समीप खाइने जर यान ने पूठधों कि खहो जगवान काली खादि कुमारी कोणक श्रीर चेनाराजा री सनाई में गया है, जीला है हार्यो, जगवान पीठी फ़ुरमाइ (खही फ़ुमठी चंरडेरी माखपरे कमखाइने हेवे पनीया) दसुंद कवरांने चेनेराज मार्या दसुंद राएयां सुणीने कह्यो, छहो जगवान म्हाने

काली व्यार्था रलावली तप व्यंगीकार कर्यो, उनी सुकाली आर्या कनकावली तप अंगीकार कियाँ तीजी महाकाली लघुसिंघ तप कियो, चौथी किन्ही ्रियार्या महासेन सिंघ तप कियो, पांचमी सुकिन्ही व्यार्याने सातमीस दसमी जिद्यनी पिनमा तप कियो वर्वी महा किन्हा त्यार्याने खपु सर्वतोजड <sup>हर</sup> कियो, सातमी वीर किन्हा गृद्ध सर्वतोजङ तप क रीने विचरी, व्यावमी राम किन्हा महोत्तर स<sup>प क</sup> रीने विचरी, नवसी पीछसेण किन्हा मुक्तावसी त्र

्रसंसाररे व्यक्षीते पत्नीतेसुं काडो, दसुंइ राण्यांने संज्ञा देइने चंदनवाडाने सोंपी, चंदनवाडानी आहा सेर्ने

करीने विचरी, दसमी महासेण किन्हा आंविल चुरू माण तप करीने विचरी, इसी इसी तपस्या करीने मुक्ति पहुंत्यां, वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥१३॥ ॥ इति॥

छाय समाधि मरण वालों की एट नावना

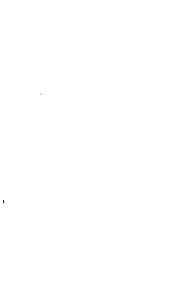
छिय समापि मरण वाला का इट जावना लिख्यते ।

रे. ब्रहे।! देखिए इस पुजल पर्याय का स्वरूप केंसा विचित्र हैं, ब्रनंत पुजल परमाणु इकट्ठा हो-किर यह शरीर वशाहे, ब्रोर देखते ही देखते वि-रिखाने लगा. देखिये! यह केंसी विचित्रता है।

रिलाने लगा, देखिये! यह कैसी विचित्रता है। १. यहो! जिनेन्द्र प्रजु! त्यापके वचन सत्य

हिं कि अधुव अशासयंमि. यह शरीर अधुव (अस्थिर) अशास्त्रता है (अनित्य है). नो इतने दिन इस की पर्याय का पक्षटा होता था. उस का पूर्ण पणे झान

ैं म नहीं रखना था. छब इस देह की यह रचना देख ूँ खापके बाक्यों का पूर्ण विश्वास हुवा ।



तो क्या, रहते छोर जाते मेरा स्वजाव तो एकसा ही हैं, छोर एकसा ही रहेगा, फिर शरीर के विनाश से चिन्ता का क्या कारण ।

६. हे जिनेन्छ! इतने दिन में जानता था कि यह शरीर मेरा हैं, परन्तु अब मुके सत्य जापण हुवा कि यह शरीर किसी का न हुवा और न होगा, जो मेरा होता तो मेरे हुक्म में क्यों नहीं चवता, यह प्रत्यक्ष रोग, जरा और मृत्यु अवस्था को क्यों

प्राप्त होता है।

9. छरे जोले जीव! इस द्वारीर को माता, पिता, पुत्र चनावे: जाई, जिंगनी, जात बनावे: पुत्र, पुत्री, तात बनावे: जाई, जी जर्जार बनावे, नूं तेरा जाणे, यह एक द्वारीर इतने का कैसे होवे? जो होवे तो कोई इसका विनाश होते रख खेवे. इस लिये शरीर खाँग कुदुस्य कोई जी तेरा नहीं हैं. तूं सर्व से जिल्ला विदायमा द्वारी हैं।

ं ए. यह सम्पत तो जैसे छन्द्र जाल की माया,



में मेवा नरा है, वो जिधर हाथ माले, उधर मजाही (मेवाही) हाथ लगे, तैसे मेरे दोनुं हाथ में लझ है, व्यर्थात् जीता हं तो व्रत नियम तप संजमादि शुज जपयोग की खाराधना करता हूं छोर मर गया तो स्वर्ग मोक् सुख का जोगता होऊंगा, विदेह क्षेत्र में विहरमान तीर्घकर के, केवली जगवान के, मुनि मः हाराज के, महासतीयों के द्रीन करुंगा, देशना सुणुंगा, प्रश्नोत्तर कर निःसंशय होउंगा, तत्ववेता होकर राग द्रेष के क्षय करने समर्थ होउंगा, फिर मनुष्य जन्म को प्राप्त होकर दीका यहण कर, प्रष्कर तप कर घनघाति कर्म्म का नाश कर केवल ज्ञान प्राप्त कर

रश. जैसे किसी के पहले रहने का घर जूना (पुराना) पमने जैसा होता है, तब वह रहने की बहुत इब्य खर्च कर इसरा मकान बनाता है, खाँर त्रेया होने पर तुरंत खित हुए खाँर खित उत्सव है साथ उस में प्रवेश करता है. तसे ही हे जीव ' नेरी वह

**अ**क्तय सुख पाउंगा ।

होगी, तो व्यव इस व्यस्थि, मांस, रक्त, केस, व्यारि मखोन पदार्थों से जरी हुई क्षणजंमूर निकम्मी देर पर क्यों ममत्व करता है ? कुंपकी बुटी के मह्<sup>ब</sup> मिला।

ु १३. जिसे कोई वेद्य (वाणिया) शीत, ताप हुपा, तुपा व्यने ह छुःव सहन कर माल का संपर्ह करता है, व्योग नाव व्याने की राह देखता है, वे तेजी होय तो माल वेवकर नका कर्र, व्योर जब नाव

१२०

करके गलगई, शिथिल पमगई, जरा ख्रोर कांव ने तेरी सत्ता इरली, ख्रोर तेने पहली धर्म्मक्रियां की है, इस सिये तुके ख्रवस्य देवादिक खत्तम गति में महा दिव्य मनोहर िग्रत रूप बनाने वाली नि विंग्न सुख देने वालो, वेकिय ही (इरोर) प्रार

व्याता है तब व्यति कष्ट में संबद्द किये साल पर किचित समस्य नहीं करता, व्यारक्षीयलाव उपात्रेत करता है, तिसे ही है जीव' तेने ता व्यारम्य व्यीर



नेक पुःख दिया, अब मृत्यु नामे मेरे परम मित्रकी मेरे ऊपर परम ऋपा हुई हैं, जिस से यह जेव<sup>हाने</sup> से बुना मेरे को स्वर्ग मोझ स्थान देवेगा। १६. समाधि मरण विना स्वर्ग, मोक् देने व इसरा छुनिया में कोई जी समर्थ नहीं है। १९. जैसे जोग जूमि के मतुष्य जुगक्षि<sup>ये है</sup>

पराधीनता इत्यादि वंदीखाना (काराग्रह) जैसा य

कहप रक्ष का स्वजाव है कि उस के नीचे वैठ शुजी शुज जेंसी वांच्या करे वैसे फल की प्राप्ति होती हैं तेसे खपनी इच्छा पूरनेवाला कल्पवृक्त समान गर मृत्यु प्राप्त हुवा है, श्रेव इम की ठायां में बैठ कर

इच्छित सुख पुरने वाले कटप वृक्ष होते हैं।

कुजो अगुन इत्हा विषय कवाबादिक धारण करे<sup>षि</sup> र तो नग्क तीर्यचादिक अगुनगति ब्राप्त होगी <sup>और</sup>

सम, समवेग, त्याग, बन, नियम, सत्य, शीव, क्मा,

संतोप समाधि नाव का सेवन करोगे तो स्वर्ग सुक्ष

के जोका हो, एक जब से मोक् प्राप सरीये।

रठ. जरजरित छश्चि छपवित्रदेह से हुनाक देव जैसा दिव्य रूप, मरण ही दे सकता हैं।

रण. जैंसे मुनिराजध्यनेक नय. उपनय, प्रत्यक्ष परोक्ष दृष्टान्तों से दारीर का स्वरूप पताकर ममत इर कराते हैं. तैसे यह मेरे पदन में रोग पदा हुव हैं: सो मेरे को प्रत्यक्ष प्रमाण से उपदेश करता हैं कि है पुरुष! तूं इस शरीर पर क्यों ममत्व करत हैं? यह देह तेरी नहीं हैं. यह तो मेरे पति (काल की जक्ष्य हैं।

२०. जहां तक इस शरीर में किसी प्रकार व्या न होय. वहां तक इस उपर से ममत्व न उतरे खी विशेष १ इस का पोषण कर पुष्ट करे युं पोषते ही जब रोग प्राप्त होता है खीर खनेक उपचार कर रोग नहीं मिटना है तब इस देह उपर से स्वज विक ही प्रेम कम हो जाता है. इस जिये मुनुस् पर. रे जीव! इस रोंग को देख कर जों तूं प्र चराता होय, सश्मुच जो रोग तुके खराव लगता होय, इस डुख से कंटाला व्याता होय तो वाह्यश्री पिधेंगें का सेवन ठोम, क्योंकि यह रोग कर्माधीन

जपकारी मेरे तो रोग ही हुवा है।

१२४ से जी ज्यादा उपदेशक, देह से ममत्व ठोकाने वार्जा

नहीं हैं, कदापि खोपधी उपचार से एकदा रोग मिट गया तो क्या हुवा, मिटा रोग तो संख्याता खसंख्याता काल में पीठा प्राप्त हो जाता है, इस खिये जिनेन्द्रकरों सर्व रोग खोर सर्व चिकित्सा के झाता महावेच की करमाई हुई समाधि मरण रूप महा खोपधी का सेवन के जिस से सर्व खाधि, व्याधि, उपाधि का तारा हो, खजरामर खनंत खक्षय खट्यायाध मोई

है, खीर खीपिघों में कुठ कर्म्स को इटाने की शकी

२२. जो वेदना का छठाव ज्यादा होय तो छाण नन में ज्यादा खुशी होय कि जैसे तीब ताप से सु र्षा सीव निर्मल होता है, तैसे इस तीब वेदना से,

उख मिले।



स्वर्ग मोक्ष के खतीन्डिय सुख मुनि महाराज पार महात्रत, इन्डिय दमनादि, खनेक जप तप संग करके प्राप्त करते हैं, वो सुख प्राप्त करने का यह मूह रूप अति उत्तम मोका ( अवसर ) आया है, सो अ जरा समजाव धारण कर जिस से स्वर्ग मोक, सु<sup>ह</sup> जोका होवे । २७. रे जीव! तेने इतने दिन जो ज्ञानादिक

का अज्यास किया है, सो इस समाधि मरण में <sup>सम</sup> परिणाम रखने के खिये हैं सो अब याद कर। १०. जिस यस्त्र को वापरते बहुत दिन हो जाता है, जिस से विशेष परिचय होता है, उस से स्वजा

से ही मोह कमी होता है, तैसे ही इस शरीर से जाए। इति श्री २८ शृद्ध भावना समाप्तम् ।

व्यथः नावना क्षिरूयते ।

(१) पेली नावना-समदृष्टी पुरुष आपके बेतन ने असंख्याना परदेशी जाएँ।

The second secon



ष्टि. रे तं ऋघोर पाप रा क्रणहार, रे तुं कुदृष्टि, ापिष्ट जीव! प्रायः तो घारे अनंतानुवंधियो कोध, रनंतानुवंधियो मान, अनंतानुवंधिया माया. अने रोजरी चोकनी, वापना घारे खिप नहीं, गुणठाणी गरे पद्मद्यो नहीं, धिरजगुण घारे आयो नहीं, त-णारूपी दाह घारे मिटी नहीं, त्याकुस व्याकुसता शरे मिटी नहीं, द्रियाववाला कल्लोल उठले. यं गरे तृष्णा रूपीया कल्लोल उठल रह्या ठे,तं तो किया हरे है सो सून्य मन सुं करे है, धीर्य गुणसुं करीश ने घारे खेखे खागसी, जुन्यपणे करी जो किया, सो ो ठारपर खीपणे सरीखी है, रे चेतन! ऋनंतकाय, अनक्, शीखरूत, जरदो, मातली, अमस नांग त-माखुरा सींस खेखेके जांड्या. रे चेतन. वापना घारो हवे बूटणों होसी. हे चेनन नुं पुत्रव रे वास्ते कित-ीएक आहुत ब्याकुलनाई कर रह्यों हे. खोहो! म्हारे गरस पत्थर, म्हारं नवनिधान, म्हारे रसकुंपो, म्हारे रसायण, म्हारं चित्रावेस. म्हारं स्रमृत गुटका वा

री, चौथे खारे राजीव, तूं पंचमकालको जरत केन्नर की मलो, कितिएक बात, ए चेतन कर्म खजीब बस्तु, चेतन! तूं जीव वस्तु, रे चेतन! जीवसुं जीवतो सर परचो करें, विश अजीवसुं क्युं करे, विश तूं निर्वेष कर्म महा सबल, रे चेतन! कर्म तो चबदे पूर्वप रियां ने जठाय पटक्या, इन्यारमें गुणठाणेरा जीव जक जावन केवलीजी; कमल प्रजाचार्यजी, महाविदेह र मानवियाने भिगाय दिया, तूं पंचम कालरो जीव हि

तिएक वात व्याठ कर्मी एक सो व्यठावन प्रकृति प्र किमकर जीत्यो जाय, मोह कर्म्म लारे लाग्यो, प्रश किमकर जीत्या जाय, संग खगे आय हमारी विनती ! चारित्र री फोजां मांहीं रही, सदवोध सें याज्ञा मांहीं रही, सदागम सुं परचय राख,

. 🚜 धारणकर, तृष्णा रूपणी दाहने पूर्वी मार्र

ज्यूं थारे व्यात्मारी गरज सरे, धन हे साधु मुनिराज, पांचे सुमते सुमता, तीने गुत्ते गुप्ता, ठकायना पीहर,

्सात माहाजयना टाखणहार, व्याव सदना जीपक,









150

नहीं आज्ञा गुरुदेव की, अचल कीधी ठरमांहि। ञ्चापतणा ञ्चाधार है, यह परमाद्र नाय ॥ ३॥ केवल करुणा मुरत हो, दीन वन्धु दीनानाघ। पापी परम अनाघ हुं, यहो प्रजुजी हाय॥४॥ अनंत काल से आयकीयो, विना जान जगवान। सेव्या नहीं संत चरण को,मुक्युं नहीं ऋजिमान॥५॥ संत चरण अखर विना, साधन कियो अनेक। पारन उस से पामीयो, जग्यो न झंस विवेक ॥६॥ सव साधन वंधन जये, रह्या न कोइ छपाय। सतसाधन समज्यो नहीं, तब वंधन किया जाय ॥॥॥ प्रज प्रज से सागी नहीं, पनयो न सतगुरु पाय । दिना नहीं निज दोप तब, तिरु में कौन जपाय ॥०॥ अपमाधम अधिको अधिक, सक्ख जगतमें हुं। यह निश्चय द्याचा वनुं. साधन करमे सुं ॥ ए॥ पनी पनी नुज पद पंकजे. फिर फिर सांगु एह । सङ्गुरु सन्यस्वरूप तज्ञ. यह इंडना करा देह ॥१०।

## ॥ स्त्रय वारह जावना ॥

॥ दोहा ॥ पहेली खनित्य जावना;-

राजा राणा वत्रपति, हाथिन के व्यसवार। मरना सबको एक दिन, छपनी छपनी बार 🕸 इसरी व्यशरण जावना;-

दल वल देई देवता, मात पिता परिवार। मरती विरियां जीवको, कोई न राखन हार ॥शा

तीसरी संसार जावना:-दाम विना निर्धन डुःग्वी, तृष्णावश धनवान।

कहुँ न सुख संसारमें, सत्र जग देख्यो ठान ॥३॥ चोथी एकत्व जावना;-व्याप व्यकेसा व्यवनरे, मरे व्यकेसा होय। र्यों कवहुँ या जीवको, साथी सगा न कोय ॥॥ पांचर्म। पर पंख तावना;--जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कीय।

घर संपति पर प्रकट ये,पर हें परिजन सोय॥॥॥

(44

देंपे चाम चादर मही, हाम पींजरा देह । तितर या सम जगतमें, खोर नहीं घिन गेह ॥६॥

॥ सोरठा ॥

ं ठट्टी अशचि नावना:-

सातमी आश्रव जावना;-गोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा ।

र्क्स चोर चहुँ छोर, सब खुटे नहीं दिशता ॥॥॥

व्यानमी संवर चावना;– वत गुरु देव जगाय, मोह नींद जव जपशमे।

तव कुठ वने उपाय, कर्म चोर छावत रुके ॥॥॥

॥ दोहा ॥

नवमी निर्ज्ञरा जावना:-

हान दीप नपनेख जर, घर शोधें जम होर ।

या विधि विन निकले नहीं. पेंठे पूरव चोर ॥

पंच महात्रत संचरण, समिति पंच प्रकार।

प्रवल पंच इन्डिय विजय, धार निर्जरा सार ॥ए॥

दसमी खोक संग्राण जानना;-चोदर राजु जतंग नज, खोक पुरुप संग्रान । तामें जीव व्यनादिते, जमत है बिन झान <sup>॥</sup>

रग्यारमी बोधवीज जावना;-धन तन कंचन राजसुख, सबहि सुक्षज कर जन

अर्थन राजसुख, सबाह सुक्षज करण अर्थन हे संसारमें, एक यथारथ ज्ञान ॥११॥

॥ यारमी धर्म जावना ॥

जाचे सुरगह दूस सुख, चितत चिन्ता रेत।

विन जाचे विन चित्रये, धर्म सकत सुन्न देन्। ।। ॥ दोहा ॥

ण राहा ॥ श्वनित्य श्वरारण संसार है, एकस्य प्रयंद्य जाते ! श्वरुपि श्वाश्रय संवरा, निर्जरा लोक युगान हां!

ाहुर जातर स्वरा, (नजरा क्षाक प्रथान क बोध इर्वज धर्म ये, बारह जायना ज्ञान । इनका जाप जो सदा, क्यों न खर्रे निर्वाण॥श्री

ः १ कारम् साम्बन्धः समान्त्रम् ॥















২–দূৱ:-

ज्वं यचन मुख पर मत खाव∙ि ःः

🔭 साच वचन पर राखहु जाव 🕪 📜 🞷

मालिक की व्याद्या विना कीय। 📈

चीज गहैं सो चीरी होय॥ ताते खाङा जिन मत गहो।

चोरी से नित मरते रहो ॥ ध−कुशी**तः**---

परदारा के नेह न खगो। इससे तुम इर ही तें जगो॥

धन एहादि में मूर्जी हरो।

इमका व्यति संप्रह मत करो ॥

॥ चार कषाय का सर्वेषा जिल्लाते ॥ -

प्रथम कपाय बदा, परुषो है जगत जीव, श्री केरी चोककी में, उमर गमाई है। क्रोध है <sup>प्रत</sup> वीक, मान है वज्र घंन, मुन्धों न मुड़त जाकी, ऐसी करनाई है ॥ माया है वांस की जन, खोन है किरमची रंग, घोषों न घोवत जाकी, ऐसी ठवि ठाई है। मिर जावे नरक घोर, ताक्कं नहीं खीर ठीर, ऐसी छुष्ट जीव जेने, समकित न पाई है ॥१॥ जासुं

आगे चोकनी को, नाम है अप्रवास्थान, जामे जीव वर्ष एक, केरी स्थिति पाई है। कोध मान माथा बोच, जामे जीव रह्यों खोज, आदि केरी चोकनी

ष्ठं. अति इसकाई हैं ॥ क्रोध है तासाव की सीक, मान दांत केरो घंज, माया मींडा सींग सम, एवी इंख दाई है। सोज है मोरी केरो रंग, ताको नहीं

इंख दाई है। खोज है मोरी करो रंग, ताको नहीं होन जंग, मरीने तिर्देच होय. इती न खाई है ॥२॥ अत्यान्यानी चोककी म. बम्यों है चेनन राय. जीव

जिहां चार मास. केरी स्थिति पाई है। क्रोब है बाबु की खीक, मान बेंन केरो थंत. बिन्नी से कनु किम झानी बनखाई हैं॥ माया बेंन केरो मृत. समय हैं ही नहीं कृत, धर्म सेती राखे हित. श्रावक बींने प्राप्टेड

र्म करो तमे प्राणिया, धर्मधकी खुल होय॥ र्म करंता जीवनें, दुखिया न दीना कोय ॥४॥ 🕟 ीय द्या पासी सरी, पासी हे हव काय ॥ स्ता घरनो प्राहुणो, मीठा जोजन खाय ॥५॥ ीव द्या पाली नहीं, पाली नहीं ठव काय ॥ र्ना परनो पाहुलो, जिम खाच्चो तिम जाय ॥६॥ ल पट्नो हे वजार में, रह्या गरद क्षपटाय ॥ पुरुष जाणे कांकरी, चतुर क्षियो जनाय ॥॥॥ शेटा केर याजार में, खांवा पेम खजूर ॥ बटे तो चाखे प्रेम रस, पने तो चकनाचूर ॥ण॥ ए सिगामण सांची फही, सर्वी ने हितकार ॥ र्ध्देक द्या फरुला राखनो, नमे सांजस्यानो सारा।ए॥ परें। मार्ग पीतरागनों, सुक्तम जेना चेद् ॥ मेंता पहुँने माथ हो। सनमा गायी उमेर ॥१०॥ िमार्या गिगला सन्। निखय सम्बन्धा सन्॥ दिसामे रह हो उसका बहुरास पन पन रहे हैं। दील संदात प्रस्त । १३ तर २ ५ ५ 👬 हैमा लोला करवर । उन्देशक हर







## ॥ दश पञ्चक्खाण स्तवन लिरूयते ॥ (न्याल्देना देशी)

दश पद्मस्ताणे जीवमोजी, कांइ पांमे सुख अपार करतां एक नवकारसी जी, सो वरस नरक निवार॥

तप समो नाँहें जगतमें जी, सुख तणो दातार ॥नः॥१॥ बीजुं पोरसी वर्ष सहसनो जी, कांई साढ पोरसी दश हजार पुरिमढ लक्ष एक वर्षनोजी, एकासणे दश

बक्षार ॥ त० ॥ १ ॥ नीवी तोके कोक वरसनोजी, कांई दश कोक एकबठांण सो कोक एकबक्द दहेजी, खांविब सहसकोक जांण ॥ त० ॥ ३ ॥ सहस दश

कोन जपवासमें जी, कांई वन तणो तपधार सक्त कोटी

वर्ष खपावहीजी, अठम कोटी दश खक्तटार ॥ तण्या क्षेत्र ।। तण्या क्षेत्र ।। तण्या कोटो दश खक्तटार ॥ तण्या ।। कोटाकोटी वर्षनोजी, कांई दशम जस्म करें

कर्म। मुनि राम कहे तपकी जियेजी, पामस्यो शिव शर्म (आश्रम)॥ न०॥ ॥ १। १ति॥

॥ चोबीस तीर्घकरोका स्तवन ॥

॥ चावास नायकराका स्तवन ॥ वनिता नगरी, साजिराच राजा, मोरादेवी साणी



जिण माता जनम्या शीतलनाथ स्वामी ॥२०॥ सिं-इपुर नगरी विष्णुसेन राजा, विष्णु देवी राणी। जिण माता जनम्या श्रेयांस स्वामी ॥११॥ चंपापुर नगरी, वसुसेन राजा, जयादेवी राणी। जिण्माता जनम्या

राजा, श्यामादेवी राणी। जिल माता जनम्या वि-मजनाय स्वामी ॥१३॥ खजोध्यानगरी, सिंहसेन राजा, सुजसा देवी राणी। जिल माता जनम्या खलंतनाय स्वामी ॥१४॥ रज्ञपुरी नगरी, जानुराजा, सुजता देवी राणी। जिल माता जनम्या धर्मनाथ स्वामी ॥१५॥

वासंपुच्य स्वामी ॥१२॥ कंपिखपुर नगरी, कृतीचार्णी

गजपुर नगरी विश्वतेन राजा, श्रविरादेवी राणी। जिए माता जनम्या, शांतिनाथ खामी॥१६॥ इ-न्तिनापुर नगर शुर राजा, श्रीदेवी राणी। जिए माता जनम्या कृंग्रुं नाथ म्वामी॥१७॥ गजपुर नगर सुद्र्याण राजा, देवी राणी। जिल माता जनम्या

्सुद्र्याण् राजा. टेवी रागी । जिल् माता जनस्या = व्यरमाय स्वामी ॥ १० ॥ महिजा नगरी कृतराजा = प्रजावती संखी । जिल् माता जनस्या, मुझीनाय



जित संजय छितिनंदन, छिति छानंद करना ॥ सुमिति प्रस् सुपार्श्व चंडप्रज्ञ, दात रहुं घरणा ॥ घरण नित्य चंड मेरी जान घरण नित्य चंड ॥ उसुं कटे कर्म का पंदा, तुम तजो जगनका धंदा, दीठा होय नयन

अमि तो ठरणा रे ॥ दीठा० ॥ पांचपद० ॥ २ ॥ सु-विधि शीतल श्रेयांस वासुपृज्य, हृद्य मांहे धरणा॥ विमल अनंत धर्मनाय झांतिजी, दास रहं चरणा ॥ जिनंद मोहे तारो, मेरी जान जिनंद मोहे तारो ॥ संसार खंगे मोहे खारो, वैराग्य खंगे मोहे प्यारो, में सदा दास चरणारो, नाथजी खब कृपा करणा रे ॥ नाथः ॥ पांच पदः ॥ ३ ॥ कुंचु च्यर मिह्न मुनिसु-वतजी, प्रजु तारण तरणा ॥ निम नेम पार्श्व महा-वीरजी, पाप परा हरणा ॥ तरे जब प्राणी, मेरी जान तरे जब प्राणी ॥ मंसार समुद्र जाणी, सुणो स्त्र सिद्धांतकी बार्खाः पाप कर्ममें अब तो मरणारे ॥ पाप० ॥ पांचपद्०॥ ४ ॥ इन्याराजी गण्धर बीस विहरमान, वाद्यासुं सिटं सरणा ॥ अनंत चोव संक्षिं नित नित



मत मुको विसार। विष इलाइल खादरयो जी, ईश्वर न तर्ज नार ॥ हो जिंग ॥ १६ ॥ उत्तम ग्रुणकारी होवे जी, स्वार्घ विना हे सुजाए। किसान सींचे सर-वर्ष्ट जी, मेह न मांगे माँए ॥ हो जिंग ॥ १९ ॥ तु-फने ग्रुं कहिये घणो जी, तुम सब वातां जो जांए। सुजने घायजो साहेवा जी, जबोजब घांरी खाए॥

हो जि॰ ॥ र७ ॥ तुम जपकारी ग्रुणनिलो जी, तूं सेवग प्रतिपाल । तूं समरथ सुख ! पुरवा जी, करो म्हारी सार ॥ हो जि० ॥ रए॥ नाजिराय कुल चंदलो जी, मस्देवीनाजी नंद, कहे जिनहरख निवाज जो जी, दोजो परमानन्द ॥ हो जिनजी मुक पापी ने जी: तार ॥ २० ॥ समाप्तम् ॥ ॥ पांच गतिरो स्तवन ॥ आरंज करता रे जीव शंके नहीं, धन मिल तृष्णा श्रपार घात करे हे पंचेन्डी जीवरी, करे मद मांमनो

श्राहार ॥ चार प्रकारे जीव जावे नरक में ॥१॥ माया

क्षपट शुढ माया करे, येथे छुंगजी वेष कृषा तोष् कृषा नापा करे, ए तिर्यश्च गतिना सेनाण। प प्रकारे जीय जाये तिर्यश्चम ॥ र ॥ जिल्ल पिर्ण सरस स्वनावयी, विनय तला गुण होय। द्या प्र तो दिखमें ने घणी, मस्तर नहीं मन मांय चार प्रव जीय जाये मनुष्यमें ॥ ३॥ सराग संजम सराग र करे, श्रावकरा यत वार । वास तपस्वी थ्यकाम निक्ष तिणमुं सदे सुग थ्ययनार । चार प्रकारे जीर ज

श्रद्धादि सेंग्रा संवर शके नया कर्म व्यावता, त पूर्व कर्म स्वपाय ॥ चार प्रकार जीव जावे मोहर्मे ह ॥ इति ॥

े देवता ॥४॥ इतन सुं जालेरे जीव व्यजीवने, समि

॥ श्री महावीर स्वामीको छंट सिरुयते ॥ श्री महावीरठाःसन पूर्णी, जिनस्त्रितृबनस्वामी व्यार करण कमश्रीतन जिन परास, प्रणमुझीरनीरी . । यिति नगर। जिनः मात्रः खक्कण ख्यपोहरी

वरण त्राठखो कुंवर पदे तपस्या परिमार्ष्टा ॥ चारित्र तप प्रजु गुण जाएंचे, ठदमस्य केवलनाण ॥ तिर्य गण्धर केवंखी जिनशासन परिमाण ॥ र ॥ देवलोक दसमें चीस सागर, पूरण स्थित पाया ॥ कुंमञ्जुर नगरी चोवीस, श्री जिनवर आया ॥ पिता सिद्धारय पुत्र, मात त्रसङादे नंदा ॥ ज्यांरी कूक्ते व्यवतस्था, स्वामी बीर जिलंदा ॥ ज्यांरे चरण लंठण ठे सिंघ-नोए, खबगेहणा कर सात ॥ तनु कंचन सम सोजती, ते प्रणमुं जगनाय ॥ १ ॥ सुमेरु निरिपर इन्ड च्री-सन, मिल मोहोठच कीनो ॥ अनंतवली अरिहंत जाणी, नाम प्रजुनी दीनो ॥ घोहोत्तर वरतनो छा-उखो, पाया सुखकारी ॥ नीस वरस प्रजु कुंवर पदे, रहा श्वनिष्रद्धारी ॥ ज्यांरी सान विना सुर गति गयाए. पिते खीना संजमनार ॥ तपम्या किनी नि-रमञ्जी, प्रजु साम्। यह प्रस्य मजण ॥ ३॥ नव ची-मामो नप कियाम. प्रजुणक उमामी।। पाच दिन उदो छतिबह, वह माम योमामी ॥ एक एक मामी



॥ एक बदा गुणतन सहँस श्रावक, नीन खानधा-

दिका ॥ श्रिभिक श्रठारे सहेंस, इग्यारे गण्धरमी माला॥ गोतमस्वामी वडा शिष्य, सती पन्दनवाला ॥ ज्यांरे केवब्रह्मनी सात सोए, प्रज पहुंता निरायण ॥ शा-सन वरते स्वामीनो, एकवीस सहसस पर्प प्रमाण ॥ ॥ ॥ पूरव तीनसो धार, तेरासो व्यवधिद्दानी ॥मन पर्यव पांचसो जाण, सातसो वे वसनाणी ॥ वे छि य लन्धिना धार, सातसो मुनिव, कहिया। बादी प्यार सो जाए, के जिल्ल जिल्ल चरचा छिट्ये ॥ एकाएक . चारित्र लीयो ए, प्रजु एकाएक निरवाण ॥ चोसठ वरस लग चालीयो. दर्शन केवल नाण ॥ ७ ॥ वास नर वस दृपन, वृपन दस एक जिस हैवर॥ वारा हैवर महिष, महिष पांचसो एक गैवर ॥ पांचसो गजहरी एक, महम दोय हरी एक अष्टापद्॥ दम सम्ब छाष्ट्रापद एक बस्रदेव, दोय बसर्देव एक बाद्देव दोय वास्टेव एक चक्री जद् ॥ कोक् चको एक सुर वह्योए, कोक मुर्ग एक इन्छ, इन्छ अ-

























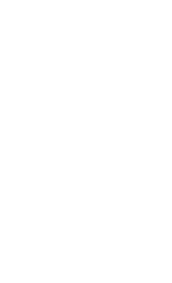


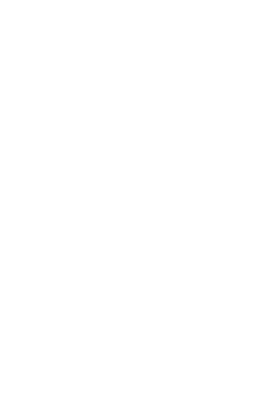




















्र क्षी, गोल १ से ह ताइतथा बील १०

। स्वी अस्वी रोजी। बोल ७-१५-१७-२०

१२ - १६ - २ ध से स्वी.

ोजस्या बीस (८- ११-१३-१८-१९)

२२- २३-२५ बोच्यरूषी.



a per o	च । चउदस् तेवीस् छप चउ तिर्विह छप् वर्षा समग्रीवीसेपरि	द्रस नव अट्ट चडी द्री वि चर्व ॥ ३ ॥ पाए महत्त्वयो पर्य व ती प्रमात भंग । ४ ॥ मिन्छा नियान क श्रापा भरमा का श्रापा भरमा का द्राडय भर्म के के सिसा न्याम का उस्ताम न्याम का द्राह्य कर के माम न्याम का द्राह्य कर के माम न्याम का द्राह्य कर के माम न्याम का द्राह्य कर के स्रामा न्याम कर स्रामा निर्माण
	इंद्रियविसय (५२४ विस्व भेग	सङ्ग संगार्थात्यः नाम्नि -वन्ति वंद



च । चउदस् तेवीस् दस् नव श्रद्ध चउर्व दय चउ तिविह दय दो वि चेव ॥ ३॥ गार

वया समगोवासयांगं महत्वया विशेष त मुणिंदस्त । एगोण्यद्गास् भंगः वय चरि

खेयव्या श्रास्ति श्राणुकमा मेया ॥ ४ ॥ मिन्छ।—पिणाल स्व

गुटु--गति चार तत्त्र-भत्ता नर्ग जाडु-जाति पांच थाया—<sup>मर्रमा भा</sup>ः काय---एकाय

दिग्रय अंदर्भ ने श्रेम इद्रिय-शन्त्रिय वांच होस्सा-करण छ पड्डाय—गर्गाति छ

दिद्धि—इरि मीम पासी--- बाब दश उमागा-धान बार नगा-सरीर पांच

द्व्य-दगर् जीम --जीव प्रवरह ग्रामि—गणि हो

उदयोग-रायंग बाह गिहत्य्वयाणि-म<sup>च्च म</sup> राम्य -- वर्ष बल्ह

द्वारा गुष्टाय वरदर

यगिगाठवय---<sup>अरक्त स्व</sup>

भट्ट संगा वर्गन्तवन इंडियरिमय १५०० । १४०

पारिस <sub>-</sub>बर्गत वंद Pit er



पश्चीस बोजको धोकड़ा । च । चउदस् तेवीस् ,दस् ,नयः झट्ट चउती द्रयं चउ तिसिंह द्रयं दी वि ,चव ॥ ३॥ यास वयां रसमगौबीसयांग् महत्वयी पिसे व तर्ग मुणिंदरस । एगोगापन्नास भंगः पद्य चरिषे र्णेयव्या श्रारिसं श्राणुकम्म भैया ॥ ४ ॥ बहुदुः —गति चार मिन्छ। जाङ्क--अति गांव कृत्य----धराय दगड्य- अवस्वत्र হুব্রিয়---মন্তির বাদ संस्था-क्ष्या छ पञ्चय—ग्गंति छ হিট্টি —<sup>চুহি নীন</sup> पाग्रा---मन दम माग् —गरीर गांच ट्रय--- इम र्ड सारा -- अस स्वरूप गामि--गाँग द द्वयोग - मर्गन बाल निदृश्यवयाणि <sup>अप</sup> इम्स सम्बद्धाः सहस्र इंडियर्चिमय क्लिक किल र्याग्न <sub>न्दरिय</sub> दव Per er

ध पेहलेबोले गति <mark>च्यार</mark> क्रिक्टी स्वकटा २ हुजे बोले जात पांच 🛵 🎁 🖅 🕬 **२ तीजे बोले काय छव**्। १ र्च 🖟 🖂 🕫 🕫 ४ चोथे बोले इन्द्रिय पांच 1 🚊 🚉 🖂 🧸 ५ पांचमें वोले पर्याय (पर्याप्ति) छव ।का 🚁 ६ छठे बोले प्राण-दश । 🐪 🧺 😁 🥱 **७ सातमें बोले शरीर पांच ।** ीः संस्कृतन ें आटमें बोले योग (जोग) पन्नरह । 🕬 📑 ६ नवमें बोले उपयोग बारह 🗽 📑 १० दश्में बोले कर्म आठ। ११ इम्यारमें बोले गुणठाणा १४ (गुणस्यान चवदे )।

१२ वारमें बोले पांच इन्द्रियांकी नेवीस विषय। १३ नेरमें बोले मिष्यात्व दश श्रोर पनरह. कुल पर्चास।

१९ चउदमें वाले नव नत्वकी जासपसी। (छोटी नवतत्वका १२५ वोल. वड़ी नव-

<sup>।प्रचीस</sup> बोसको थोकड़ी। तत्वका भेदानभेद ध्यां)भीर होते कि १५ पन्नरहमें वोले आत्मां आठन होते हैं १६ सोलमें बोले दंडकाचोबीस मिर्म की ।

१७ सतरमें बोले लेश्या छव हि विश्वित १८ श्रठारमें घोले हिए तीना जिहे हिले १९ उगर्गाशमें बोले ध्यान च्यार (<sup>कि रूप)</sup> २० वीशमें वोले पट् (छवं ) हर्व्यकातीस 🗽

२१ एकवीशमें बोले साशि दोय-जीव गर्र थनीय सशि । जाह हैंगई विकार २२ बाबीशर्मे बोले श्रावकरा बार्रह बर्ते । <sup>इ.स</sup> <sup>न्द्</sup>र तेबीशमें घोले पाँच महात्रन साधुजीका।

२४ चोबीशमें बोले गुणपचास भागाको जाणप रेंप पचीशमें घोले चारित्र पांच (पांच प्रकार) ॥ विस्तार सहित ॥

१ पहिले याने गति ४. गति किसकों कहते हैं। गति नामा नामकर्मकं उदयसे जीवकी पर्या विशेषको गति कहते हैं। गतिके कितने ः भेदहें १ च्यार हैं: नरकगति, तियेवगति, में **मन्प्यगति, देवग्रति ।** वर्ष केंद्र केंद्र कार रें दुने बोले जाति भ जाति किसको कहते हैं ? ः अव्यभिचारी सदशतासे एक रूप करनेवाले ्विशेषको जाति कहते हैं। अर्थात वहःसदश े घर्मवाले पदाधों को की अहरा करता रहे । ं जातिके कितने भेंद है ? पांच हैं: एकेन्द्रिय, वेन्द्रियः तेन्द्रियः चउरेन्द्रियः पंचेन्द्रियः। र तीजे बोले काय र काय किसको कहते हैं ? ंत्रित, स्थावर नाम कर्मके उदयसे स्थात्माके ं प्रदेश प्रचयको काय कहते हैं। कायके ं कितने भद है ? इव हैं—गोत्र-एप्वीकाय, ं अपकाय, तंउकाय: वायुकायः वनस्पतिकाय, त्रसकाय । नाम-इन्द्रीथावरकाय, वंवीधावर-कायः सिमितिधावर कायः पयावचथावर कायः जंघम काय ।

२१ पकवीशमें योले त्याशा होवंड केंबियारि अजीव गशि । ११ क्षेष्ट कींब मेंकि २२ वाबीशमें वोले आवकरा वारह बर्ते १९०१ १३ तेवीशमें वोले पांच महावर्त साँधुकींका ।

) २४ चोवीशमें बोले गुणपचास भागाकी जाणपण २५'पचीशमें बोले चारित्र पांच (पांच किस्सा

॥ विस्तार सहित ॥ क्षेत्र ।। जे गति २, गति किसको कहते हैं।

पिंहले बोले गित २. गित किसकों कहते हैं!
 गित नामा नामकर्मके उदयसेजीवकी पर्याव

क्षार है सम्बद्धिकाय सम्बद्धाः । है हम ें अप्रि. भालको "अगनि." वौजलीकी स्थितिः विसरी अप्ति अल्कापात आददैंडने सात जाव जात है. एक अग्निरे चीएक ( पतंग ) े में असंस्थात जीव ओभगवंत फरमाया है. ेएक प्रजापतकी नेसराय असंख्यात अप्र-े जापत है, तेउकायरो वर्ण सफेद है, ख-भाव उप्ण (गरम) है. संठाण सुईके भारे माफक है, सुइरी तरह अग्निरी भाल नीचेसे मोटी उपरसे पतली, उसका कुल तीन ें लीख कीड़ है।

वाउ काय

उड्णीचा वाय. मंडणीचा वाय. घण वाय. तण वाय. पृग्व वाय. पश्चिम वाय श्राट देडने तीन लाख जान हैं. एक फउंकमांह (फुंक्में) असंख्याता जीव श्री भगवान फरमाया हैं. एक प्रजापतकी नेसराय असंख्याता श्रप्रजा-

## पश्चीस बीलको थीकड़ी।

विश्वको गनि पान काम विश्वक विवन मिटो, होंगली हड़ताल भोड़ल, भाठो, हींग वह ब्याद देइने सात लाखीजात हैं । ऐक कांकरें ्रिंड्यसंख्याता जीवे श्रीभगवंत फेरमाया है. पृथी माकायरो वर्ण पीलो। है स्वभाव केंटोर है। संटाए एपमसुरकी दालरे प्राकार है, ऐस्वीकायका के । ३१२ जाल कोड़ः है है एक परजापतकी नेसाय म् असंख्याता अपरजापत हैं किनो होती नेन्य्यः नेन्विय<del>ः प्राक्रीपद्धाः</del> यंचनिव्यः। ्र विरंसाद-रापाणी, स्रोसरो-पाणी, गंड़ाराँ-पाणी ं समुद्ररा-पाणी धवररो-पाणी, कवा<sup>ःवावदी</sup> पाणी, ब्याट् देइने सात लाख जात हैं निर् पाणीरी बुंटमें असंख्याना जीव श्रीभगे<sup>ई</sup> फरमाया है. एक पर्याप्तकी नेश्राय श्र<mark>सं</mark>ख्या<sup>त</sup> भ्रपरजापन हे. श्रपकायरी वर्ण लाल हैं हैं भाव दीलो है. संटाण पाणीके पर्पाट मा<sup>स्त्र</sup> है, उसका कल ७ लाख कोड़ है।

क्षण हैं गण**तेउकाय**-एड्राइट **में** तर <sup>े</sup> अप्रि. भारतो " अगेनि. वोजलीकी श्रिप्तिः <sup>।</sup> बांसरी अग्नि उल्कापात आददेंडने सात लाख जात है. एक अग्निरे चीएक ( पतंग ) ेमें असंस्यात जीव श्रोभगवंत फरमाया है. िएक प्रजापतकी नेसराय असंख्यात अप-ं जापत हैं, तेउकायरी वर्ण सफेद हैं, ख-भाव उपए (गरम) है. संठाए सुइके भारे माफक है, सुइरी तरह अग्निरी भाल नीचेते मोटी उपरसे पतली, उसका कुल तीन ें सीम कीड़ है। षाउ काय उड़ाणीया वाय. मंहाणीया वाय. पर्य वाय. नम बाच परव बाच परिक्षम बाच धाड रेडने र्मान लाख जान हैं. एवं पाउव माहे पंचर्में।

धर्मस्याता जीव धी भगवान पतमाया है एक प्रवापतकी नेपनाय धमन्याना धप्रवा

## पर्वास बोलको धोकड़ों (

े वा, मकोड़ा, कानखुतुरा भाद देइने दोव िजाल जात है, उसका कुल = लाल कोई है। ३ चौरेन्द्रिय-एक काया, दुजा मुख, तीजो नाक

े चौधी आंख ये च्यार इन्द्रीयां होने उसकी चौरित्रय कहिये जैसे माखी डांस, मच्छा

ें भमरा: टीडी, पतंग्या, (पतंगीहा) कतारी भाद ंदेइने दोय साख जात है। उसका कुल <sup>गहा</sup>नव लाख कोड़ है।

र्थ पंचे नदी-एक काय, दूजो मुख, तीजी नाइ. चोधी थांख, पांचमो कान ये पांच इन्द्रियां होंचे उसको पद्यं न्द्री कहिये। ्र, दनकाय एक महत्त्तेमें एक जीव उत्तृष्टा किनना भव करे १ पृथ्वीकाय, अध्यकाय-ते उकाय वाउकाय एक महत्तमें उत्कृष्टा

१२८२४ भव करे बादर बनस्पतिकाय एक

महर्त्तमें उत्क्रप्टा ३२००० भवकरे सुद्तम वनस्पतिकाय एक महर्त्तमें उत्कृष्टी िह्ये ५३६ भवकरे ती एतए हर । मील वेन्द्रिय एक मुहूर्त्तमें उत्कृष्टा देव भव करे ृतिन्द्रो एक मुहुत्तेमें व्याप्तिक गाउ धर्चोस्द्री पार. ए अस १७० ए० ए · असन्नी पश्चे न्द्रिय एक मुहत्तेमें २४ " " " शिसकी क्षा ए एक ए एक एक एक एक रे चौथे वोले इन्द्रिय ५ इन्द्रिय किसको कहते हैं ? ि श्रीत्माके लिङ्गको (चिन्हक) इन्द्रिय कहते हैं। िइन्द्रियके कितने भेद हैं ? पांच हैं-शोतेन्द्रिय चनुइन्द्रिय, वाणइन्द्रिय, रसइन्द्रिय, स्पर्श-े इन्द्रिय (फरसर्डान्द्रय) इनके नाम —गोचरी. श्रगोचरी, दुमोही. चरपरो, श्रचरपरी । ५ पांचमें बोले पर्याय हव पर्याय किसको कहने हैं १ गुएके विकारको पर्याय कहते हैं। पर्यायके किनने भेट हैं 🖰 छव है आहार पर्याय. शरीर पर्याय. इन्द्रिय पर्याय. र्वासी-श्वास पर्यायः भाषा पर्यायः वचनपर्यायः मन



्रियेश्वेद्द भवकरे तीन विकास हाता । साहत वेन्द्रिय एक मुहुर्तमें उत्कृष्टा दे भव करे ्तेन्द्रो एक मुहत्त्ते का ६० १० वर्ष ्चोरेट्स प्राप्त प्राप्त एक एट !! ि असन्नी पञ्चे न्द्रिय एक सुहत्त्वेमें २४ <sup>गाः । ग</sup> िसंबो ः १०५ मः मेर्डे १ ७, १५० ग र विधे बोर्ते इन्द्रिय ५ इन्द्रिय किसको कहते हैं ? े जात्माके लिङ्गको (चिन्हक) इन्द्रिय कहते हैं। े इन्द्रियके कितने भेद हैं ? पाँच हैं—श्रोतेन्द्रिय चज्डन्द्रियः प्राण्डन्द्रियः स्तइन्द्रियः स्पर्श-इन्द्रिय (फरमहन्द्रिय इनके नाम --गोचरी. अगोचरी, द्मोही, चरपरो, अचरपरी। ५ पांचमें केने पर्याय हव पर्याय किसको बहुने हैं १ गुएके विकारको पर्याय कहते हैं। पर्यायके किनने भेड हैं ? इब हैं साहार पर्यायः हारोर पर्यायः इन्द्रिय पर्यायः स्वासी र्वास पर्यायः भाषा पर्याय वचनपर्याय सन



चिक्तिय शरीर किसको कहते हैं १ जो छोटे. ें बड़े. एक, अनेक आदि नाना प्रकारके शरी-्रको करे. देव और नार्रक्योंके शरीरको विकिय शरीर कहते हैं: अथवा सड़े नहीं. पड़े नहीं. विनास पामे नहीं. विगड़े नहीं, मरनेके ं बाद कपूरकी तरह विखर जाय उसको बैक्य-ं शरीर कहने हैं। े बाहारिक शरीर किमको कहते हैं। इंट्री े गुणस्थानवर्गी मुनिके तत्वीमें कोई श्रहा े होनेपर केवली या श्रुत केवलीके निकट जानेके लिये मन्तइमेंसे जो एक हाथका पुतला निक-लता है. ( कोई लब्धि धार्ग मुनिगन स्त्र-माद करीने ज्ञान भग्या प्रमाद करीने ज्ञान विमरजन हो गया बोई दिचलए बत्र पुरुष आयने प्रस्त प्रसं उस बखत मुनिगजको उपयोग कान्या नहीं जब सापरे श्रीर मांयम् एक हाथने पतलो निकल्यो उस पतलेका भंभीरक,गर्भाष्ट्रीदारिकमिश्रीनर् स्वैक्यिक <sup>१२</sup> ग्णाञ्चेकियक मिश्र, ११३ श्रीहारक, १४ आहारक

मिश्र, १६ मार्माणे १७५ उन्ह रह संह

-होनवर्मे वोले उपयोगः १२--पार्चः झांनः तीन गीं अल्वान, देयार देर्शनः १ (मंतिज्ञान, दं श्रुत-

-प्रज्ञान, इ.स्प्रविध्यान, १४ मनः । पर्यवर्तान, १ ण्यं केवलज्ञान, ६७मतिस्रज्ञानं, ७७श्रुतस्रं<sup>हातं,</sup>

ाम विभंगज्ञान (कुळवधिज्ञान)) हा चुनुःदाः <sup>रात</sup>ः संगो, १९० अचन्नु दरसग्रं ३१ , अवधिःदर

ं म्स्सर्प्यक्ष्य केवल दरसंग् । 📁 मार्गनान

ा किसको कहते हैं. १८६ के रागः है पादिक र परिगामोंके निमित्तते कांण वर्गणा हुन

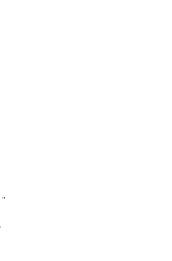
् पुद्दगलस्कंघ जीवके साथ बंधको प्राप्त हो<sup>ते</sup> हैं. उनका कर्म कहते हैं.।

ात्र्यायु, ६ नाम, ७. गोत्र, 🗢 अंतराय कि <sup>कर्म</sup>

'१० दसमें वोलें कर्म श्राठ, :--१ ज्ञांनावर्णीय,२

दर्शनावर्णीय, इंचेदनीय. 😕 मोहतीय. 🥞





















्यर अविनय निष्यात्व-जिनेश्वर तथाः ग्रहका विचन उत्थापे, ग्रेणवन्तः, ज्ञानवन्तः, तप्रस्तीः, वेरागी इत्यादि उत्तम पुरुपोते, कृतवीप्रणो करे, छिद्र देखता रहे, निन्दादि अविनय करेसी सिष्यात्व कर्ताः हार्यक्षः १ प्रश्निका काम करेसी मिष्यात्व ।

ेश श्रीकरो। मिन्याल-जिसे प्रतिक्रमणादिक किया न माने सो मिन्याल जिसे असलका विवेक न होनेसे संसारिक कार्य कम्मोंका पंपन रूप जैसाका तसा रहनेसे और सत्य सानका अभावसे अञ्चानको थापे

त्तय सामका अभावत अज्ञानका वाप सो मिप्यात्व । जैसे यशुक्थ को धर्म समभे । १४ चक्दमें धीले नक्तत्को जास पर्सा ।

नदतत्वका नाम १ जीवनत्व.२ अजीव





30

सो महतालींस प्रकृतिमें हो शुर्म होने रेड शातावेदनीयंकीःएकः श्रीयुपाकी है

व्यक्ती पुराने कातान हमार-प्रेपेष्ट्र नेन्ये नाम अहा १२ इस प्राप्ततात्व विस्तृ होर्रेष है

पापतत्व किसकों कहिये ग्रंभाग बाँपन दिसीं, मोगवतां होहिसीं, झशुमः)योगसे

द्वन्हे रूमारदिः पाषकाः मातः । मेको ऋरे, उसको प्रापनस्य कृष्टियेत सार्व क्र

मकारे पश्चितिकार एक साह तिर्देष्ठे उत्तर<sup>े</sup> निनर्वात्रमातिपातस्त्वतः क्रांगाके गर्क

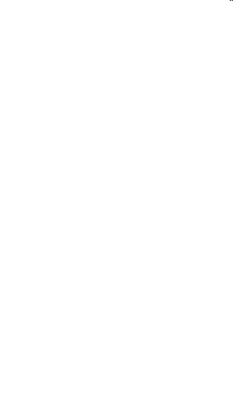
हिंगा हरें। र्षे स्थाबाद- बासस्य ( कंट्र-) मोले 🛭 ३ सटचाटान -धार्णाटधी वस्त्रभेरे (

र मेयन हरूम ( सूर्वाप्त ) संबंध

। परिषदः *-दृश्य (* धन् )शस्त्र,समन्त्र



























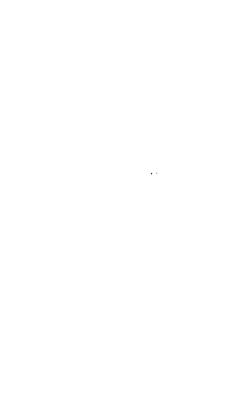




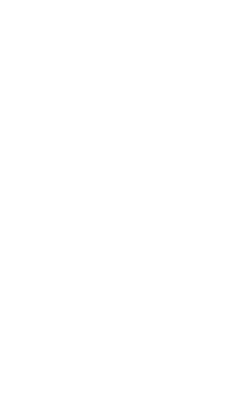








































प्यासि बोलका योकड्ग , ८६ सिटियाडैन-प्रत्याल

भ्रह्मीकाश द्रव्य किसको कहते हैं हु<sup>एड</sup>़ जो जीवादिक पांच द्रव्योंकी टेहरेनिके वि<sup>क्</sup> जगह दे। १५ काल पांच को कर पर्व

आकारा के कितने सेट हैं कि पोन एक्सी । क्याकाराध्यक ही आवरड देवर हैं १ विकास क्याकारा पहां पर है १ वर्ग के अलग में

ि ध्रोकाश सर्व व्यापी हैं।

ह<sup>र</sup>कालड़व्य किसको कहते हैं १९

जो जीवादिव डव्योंके परिशसनमें सहकारी

जा जावादिय इंट्याक पारणमनम सहकार हो. उसको कालद्रस्य कहते हैं । जेसे कें हारके चाकके घमने के लिये लोटे की कीली

म्हारके चाकके घृमने के लिये लोहे की कीली वकालद्रव्यके कितने मेद हैं ?



Fã



[सेठियाजैन स्थात पश्चीस योलका योकडा 🕽 <sub>ाटात</sub>इग्यारा द्वारका नाम—१ प्रणामी, २ जीव,

३ मुत्ता ( मृर्ति ), ४ सपएसा ( सर्वे वदेशी),५ एगा (एक), ६ खित्ते (चित्र), ७ क्रियुः, ह

णिज्ञ्चं ( निख ), ६ कारण, १० कर्ता<u>,</u> गई इपर पनेसा ( सब गति

व कहेता एक ता

माएहाँ। मुत्ती कहेता एक पुद्रल वाकी पांच द्रव्य अमूर्तिक है।

( ४ ) सपएसे कहेना पांच द्रव्य तो संप्रदेशी है। और एक काल द्रव्य अप्रदेशी है।

(५)एगे कहता धर्मास्ति, अधर्मास्ति

भाकाशारित ये तीन द्रव्य तो एक एक है, और जीव, पुरुगल, काल ये तीन द्रव्य अनेक हैं याने भनन्ता है।

ें(६) वित्तं कहेता आकाशास्तिकाय तो पेत्री है, वाकी पांच इट्य अचेत्री है।

् (७) क्रिया कहेता निश्चयमें छव ही द्रव्य सिक्तिय (याने क्रिया करके सिहत ) है. अपनी अपनी क्रिया करे, व्यवहारमें जीव और पुदुगल क्रिय हैं (क्रिया करें) च्यार द्रव्य अक्रिय हैं।

्य (क्ले) पिएव्यं कहेता निश्चयमें छन ही द्रव्य नित्य, व्यवहारमें जीव और पुद्दगत्ते दोय द्रव्य

अनित्यःवाकी च्यारं द्रह्य नित्यं।
(६) कारण कहेता जीवके पांच ही द्रह्य कारण

हैं. जीव पांचों के अकारण हैं ( जीव द्रव्य अकारण, वाकी पांच द्रव्य कारण) वा पांच द्रव्य अकारण, एक जीव द्रव्य कारण भी संभवें हैं।



उसको थलचर कहिये इनका च्यार भेद<sup>्य</sup> १ एक खुरा—घोड़ा, गंधा खचर इत्यादिकी २ दाय खुरा—उट, गाय, भेंस, बलद, बकरा

्र हरण, ससीया. इत्यादिका । वर्ष स्थ त्र गर्ण्डीपद - ( गर्ण्डी प्रया )-हाथी, गिंडा इत्यादिक।

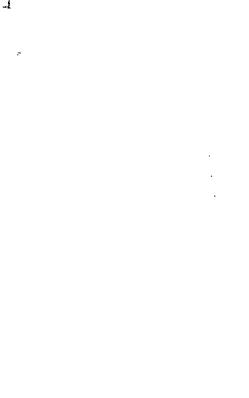
ेश-श्वान पद (संग्रुपया ) (जो पंजे नखनाला ्होने ) जैसे-न्याय, कृतां, बीली, शियाल. ्जरख, रींझ, बंदर, सिंह, चीता, इत्यादिई-

्राजरत, रींछ, बंदर, सिंह, चीता, इत्यादि इ-नका कुल १० लाख कोड है। उन्हें जाने उरपरि केने कहीं ये १ जो पेटसे चाले खंसको उरपरि सर्प कहिजे. जैसे--सर्प, अजगर, इस-शालीयो—(दाय घड़ीमें ४० कोस (गउ) लांबो हुवे, चक्रवर्तीकी राजधानी नोचे. अधवा नगरके खाल हेंठं उपजे. उसकी भस्म नामा दाह हुवे तो ४० गउ को माटी खायजावे. जमीन धोधी होजार, चक्रवर्ती की संन्या थोथी जमीन में













पत्रीस बोलका योकहा ] १०२ [सेडियाजेक स्वास्त्र छप्पन अन्तरद्वीपके मनुष्य, छप्पन अन्तर

द्वीपमें हैं। अब छप्पन अन्तर द्वीप कहते हैं-जम्बूद्वीपके भरत चेत्र की मर्यादाको करण्हार चुल हिमवंत नामे पर्वतःहै, पीलो सुवर्णम<sup>ण है</sup> सो जोजन को ऊँचो, पद्यीस जाजन को ज<sup>मीन</sup> में उंडो, एक हजार वावन जोजन, वारह कं<sup>ताकी</sup> पहीलो ( चवड़ो ) है, २४६३२ जोजन लम्बो है इसको वांह ५३५० जोजन श्रोर पनरह कला<sup>ई।</sup> है, इसको जीवा २४६३२ जीजन पुणुकला की है इसकी धनुष्य पीठीका २५२३० जोजन औ च्यार कजाकी है, उसके पूर्व पश्चिमके छेड़े दाँ<sup>व</sup> दोय डाढा निकली हुई हैं, एक एक डाढा चोरी सीसे चोरासीसे जोजन भार्की लम्बी है, <sup>एक</sup> एक डाढा उपर सान सान अन्तरद्वीप हैं, वे किस तरहसे हैं ? जम्बूडीपकी जगतीसे ३०० जोजन जावे तय ३०० जाजनको सम्बो चीड़ी पहेलां अन्तरद्वीप आवे १. वहांसे ४०० जोजन जा



, .



१०६ [सेटियाजीन-सम्बासन पश्चीस बोलका धोकज्ञा ]

देवताके १६= (एकसो खठाण्वे) भेद १० भुवनपति, १५ परमाधामो,<u>।</u>१६ वाण्<sub>यन्तर</sub>

१० तिर्यक्ज भिका, १० ज्योतिया, ३ कित् विषी, १२ देवलोक, ६ नव लोकांतिक, ६ नवर्षे वेयक, ५ श्रनुत्तर विमाण से ६६ जातिका पर्याप्ता अपर्याप्ता ये १६८ भेद

हुए। १॰ भुवनपति ( इनका नाम संातमा<sup>ःगातस</sup> जागना )

१५ परमाधामीका नाम—१ श्रम्वे, २ श्रम्यासे ३ शामें (में). ४ सवले, ५ स्द्र, ६ महास्ट, ७

काले, ⊏ महाकाले, ६ अम्पिपत्र, १० धतुपपरी ११ कुम्म, १२ बाल्, १३ वेयरण्, १४ सर

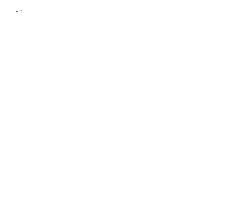
वरं, १५ महाचापे।

१६ यागच्यन्तरका नाम

१ पिशाच, २ मृतः

३ मन. ४ गनम, ४ किझर, ६ किंपुरु<sup>य</sup>, ७

महारग, = गन्धर्व, : ध्यागापद्गी, १० पाण



🦳 ५ पांच अनुत्तर विमाणका नाम--

१ विजयः २ विजयंतः ३ जयंतः २ छप-जितः सर्वार्ध सिद्ध ।

## अजीव राशिका ५६० भेद ॥

गमा धम्मानाता, तिय तिय भेषा तहेव छाहाय। १एचउ सुविद्द्वे. विते काले यभाव गुणे ॥१॥ मजीव छारूपीका ३० झोर छजीवरूपीका ५३० रे कुल ५६० भेदा।

धनीव धरुपोका २० भेद<del>-</del>

- (३) धर्मास्तिकायका खंध, देश, प्रदेश ये तीन ।
- 🤇 🗦 ) सपर्मान्तिकाय का खंप, देश, प्रदेश ।
- 🤒) घाकाशास्त्रिकाच का खब, देश, प्रदेश ।
- <sup>(१</sup>१) कालद्रव्यका गर भद ।

५ प्रमापनकाय का याच भेदन हाय

भेषप्र, १ काल. ४ भावः । १११ः ।



. ر ×ردغ ं १=४ स्फर्श=—खरखरो, सुंवालो; भारी, <sup>हलको</sup>; शीत, उप्णः चीकणो, लुखा, एक एक का भेद २३×==१=४।

विशेष विश्तार से ५३० भेद रूपीका ॥

पांच वर्ण. दोय गन्ध. पांच रस. झाठ स्पर्श

पांच संठाए ये पश्चीस घोलमें जितने जितने योज पांचे वो पिननेसे सर्व मिल कर ५३० भेट होते हैं। पांच वर्ए १ कालों, २ नीलों, ३ गतों, १ पीलों, ५ घोलों, एक एक वर्णमें वीस वीस भेद पांचे टाप गन्ध, पांच रम, जाठ रहरू पांच संठाल, ये वास पना सा

टीय गन्ध । भुगन्ध । दुगाय एक एक गध्में नेदीन नेदीन वाल पाद पाद दर्श, पाद पयीम बालका योकमा ] ११२ (सेटिपातन क्रण

रस, श्राठ स्फर्श, पांच संठाण, ये तेवीस दु ई यांनीस जाएाना ।

पांच रस—१ तीको २ कड़वा ३ कपपण ४ खाटो, मीठो, एक एक रसमें वीस वीसभे लाथ, पांच वर्ण, दोच गंथ, आठ सम्ह्री, पां संठाण ये वीस पंचा सो।

आठ स्फरा—१ खरदरो, २ सुंवालो, ३ हल को, ४ भारी, ५ ठंढो, ६ उनो, ७ लुवो, इ चोपड्या, एक एक स्फर्शमें तेवीस तेवीस भेद लाधे, पांच वर्ण, दोय गन्ध, पांच रस, इव स्फर्श, पांच संठाए ये तेवीस अट्टा एक सी चोरासी : जहां कादराकी पूछा हो तो खरदरी और संवाली ये दीय वर्जगा: इसी तरह हत काकी पुछा होय तो: हलका और भारी ये दीय वज्रामाः इसी तरह ठंढाकी पुछा होत्र जब ठंढी श्रीर उना ये दाय वज्रणाः इसी तरह चीकण का पुछा होत्र जब चीकाणा और लुखो से दीय

र्त्त्रणाः इस माफिक जिस वोलकी पुछाहोय वो ग उसका प्रतिपच्च ये दोय वर्ज्जणा।

इति जीवराशि अजीवराशि का भेटे समास्र ॥







२६ वोलकी मर्यादा करे उनका नाम-

१ उन्निणिया विहं-शरीरपद्यणेका अंगोद्या । २ दंतणविहं-दांतण ।

३ फल विहं-वृज्का फल।

४ अभंगण विहं-शरीर पर चोपड़नेकी या लेप

करनेकी वस्तु तेल प्रमुख। ५ उवट्रण विहं-मर्दन करनेकी वस्तु पीठी प्रमुख।

६ मंज्भण विहं-स्तान करनेका पाणी प्रमुख।

७ वत्य विहं-वस्त्र, कपड़ा ।

८ विलेवण विहं-चन्दनादिक। ६ प्रप्त विहं-फूल।

१० घाभरण विहं-गहणा. दागीना ।

११ भूप विहं-धूप। १२ पेज विहं-उकाली दवा वगेरह पीगोकी वस्तु।

१३ भक्तवण विद्दं-संग्वडी पटाम. पिस्ता वर्गेरह सेवा ।

१४ उदग् विद्यं-चावल [माल] ।



पन्द्रह कर्मादान का नाम ।

१ ई गाल कम्मे—कोयला कराय के वेचने का व्यापार करे नहीं, पजावा भट्टीका कर्म क-रावे नहीं।

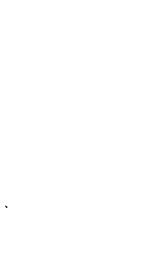
२ वण कम्मे—चनका भाड़।(वृत्त ) कटाणे का ठेका लेने देखेका व्यापारका त्याग करे।

करें ।

३ साड़ी कम्मे—गाड़ा, गाड़ी, एका, चरखा,
पींजरा वगेरह बनवाकर वेचगे के व्यापार
का त्याग करें ।

४ भाड़ी कम्मे—गाड्यां, एका, साइकल, मो-

४ भाड़ा कम्म—गाड्या, एका, साइकल, मा-टर टेक्सी, ऊँट. वेल वगेरह भाड़े फेरे नहीं तथा घर, हाट हवेली व्यापार के निमित्त भाड़ा कमाण के वास्ते तथा वेचण के वा-स्ते वणावे नहीं: लोहे की. पत्थरकी, लुग् व्यादि की लान खोदावे नहीं।



पाणीमें पिलायकर, तेल निकलायकर, वे-चनेका व्यापार करे नहीं । तथा घाएयां.

वनका व्यापार कर नहा। कल्लांको ह्याणार व करे।

कल्यांको व्यापार न करे।

निल्लं च्छ्रण कम्मे —टोघड़ा घोड़ा आदि स्त्री कराय कर वेचिएको व्यापार न करे। दविग दावणयाकम्मे —वनमें, खेतमें आग

लगावे नहीं, खेत की वाड फूँकावे नहीं।

सरदह तलाव परिसोसणया कम्मे सरवर कुण्ड, तलाव को पाणी सुकावे नहीं, ऐसा

च्यापार करे नहीं।

असइ जर्ण पोसण्या कम्मे—हिंसक जीव श्वान. विल्ली, नीनर, कुकड़ाने आपका आ-

जीविकाके वाम्ने पाले नहीं. नथा वेश्यादिक ने न पोपं. तथा उनको कुशील अग्राचार

को पड़मो द्याप न लेवे, हिंमाकारक पाप कारक के माध लोभरे वन पड़कर ज्याजको ज्यापार नहीं करे।

ं (मीठे) की गिनती तथा वजन साथ म-्रयादा करें। कार्याता करा कार्य

पादा कर 1. विश्व प्रित्ते स्वाप्त स्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

्तम्बाल—यान लाग, सुपारा, इलायचा, पान, जायफंल, जावंत्री वगेरह मुखवासकी मर्यादा करे।

६ वत्थ—वस्त्र पहरने, स्रोडने की मर्यादा गिएाती से करें।

७ कुसुम--याने फूल, श्रतर, तेल इत्यादिक जो सुंधनेमें श्रावे उसकी मर्यादा करें।

द्भवाहन--्याने गाड़ी. रथ. वर्ग्धा. तांगा.

एका, वेली, हाथी, घोड़ा. पालखी. म्याना. रेलगाड़ी, टक्सी (मोटर) रिखसा. बाइ-

सीकल, मोटर साइकल. डुंगी, न्याव, बोट,

करे।

जो बेठनेके तथा सोनेके लिये काम आरे

(६) सयग्-याने गादी, तकिया, गहेना ्छप्परपिलंग, मांचा, खुरसी, मकान <sup>बाँरे</sup>

उसकी मर्यादा करे।

मर्यादा करे।

र्यादा करे।

१० विलेपस-याने केसर, कुंकुंम, चन्दन, तैल, पीठी, लेप, सावण, सुरमी वगेरे<sup>,</sup> शरीर<sup>के</sup> विलेपन करनेकी मर्यादा करे। ११ दिशी-याने पूर्व, पश्चिम, दिवाग, उत्तर, उंची, नीची यह छव दिशीमें जाएकी

१२ श्रवंभ--याने कुर्शाल (स्त्री सेवन)की रातकी मर्यादा करे दिनका त्याग करे। १३ नाहावण--याने स्नान, मेडजन करनेकी में-

हवाइजहाज विगेरह निरंती, फिरती, व लती सब प्रकार की सवारी की मर्यादा







## १ माणाविषात्-विरम्मु वतः। 😁 दूसरे जीव को अपने समान जानकर उस

। रुक्त माळका। धारमा हा | , रुक्ट

रचा करनी, उसे दुःख न देना-मारता नहीं, ' व्यवहार से प्राणातिपात-विरमण अर्थात् सामत है। अपनी आत्मा कर्म के वश हो। दुःखी होती है ऐसा जानकर उसे कर्म बन्धन छोड़ाना और श्रास्म-गुणों की रचा कर उन वृद्धि करनी यह निश्चिय से प्राणातिपातिस्मा मत कहा जाता है।

२ मृपाधाद-विरमण वन

भसत्य-जूठ वचन न घोलना यह व्यवहाँ से मृपायाद विरमण धत है। कोई भी पीर निक चीज को श्रपनी कहनी, जीव को श्रामी

या अजीव का जाव कहना, सिद्धांती का मृट अयं करना यह सब निश्चय-मूपाबाद हैं, ई<sup>न</sup> सबा का त्याग को निश्चयमृपाबाद-विरमण <sup>हर</sup>





•



आला ही जिन गुणों का कर्ता और भोका है ऐसे स्वरूपानुपारागी परिणाम को निश्चय से भोगोपभोग-परिमाण बहु कहते हैं।

भोगोपभोग-परिमाण त्रत कहते हैं। द्ध भन्धदराड-विरमण वत । ्र विना ही प्रयोजन के अपने को पाप-कार्यों में जगाना हिंसादि करना-अनर्थद्यड है। जैसे कोई आदमी हाथ में छड़ी लेकर सौर करने को वगीचा में जाता है, चलते चलते अपनी लड़की को घुमाता हुआ वृज को पत्ती को विना ही प्रयोजन तोड़ता है, जिससे पत्ती के जोवों को तों दुःख यावत् मरण्होता है और इससे उस आदमी का कुछ भी काम नहीं निकलता। ऐसे च्यर्थ पापो' को छोड़ना व्यवहार अनर्थदगड-वि रमण वत है। जीव मिथ्यात्व, अविरति, कपाय. योग श्रादि सं शुभाशुभ कमों का वन्ध करना है जो कि सुख दुःव का कारण होता है, उन



## ११ पीरप मत ।

चार या आठ प्रहर तक सब सावद्य कर्मों का त्याग कर समता परिणाम से स्वाध्याय में <sup>प्रकृति</sup> करना व्यवहार पोपध और अपने आत्मा को ज्ञान-ध्यान से पुष्ट करना निश्चय पौपध वत कहलाता है।

## १२ द्यतिथिसंविभाग वत।

पौपध के पारने के संमाप्ति के समय या <sup>सर्वदा</sup> साधु को या साधर्मिकभाई को यथाशक्ति मोजनादि दान देना व्यवहार से अतिथिसंवि-भाग वत है। स्वजीव को. शिप्य को या गृहस्य को ज्ञान देना पढ़ाना. सिद्धांतों का श्रवण रुरना और कराना निश्चय से अतिथिसंविभाग वत है।

ये बारह व्रत कहे गये। जो जीव इन व्रतों को समकित के साथ निश्चय और व्यवहार से पत्र नेस बोछका धोकड़ा ] .१३६ ं [सिंडियाजैन-सन्बर्ध

भारण करे, उस जीवको पंचम ग्रणस्थानक व अधिकारी या देशविरति श्लावक कहते हैं। दे अर्थात् अंश स्तः विरति स्ताग्र देश-विरति व अर्थ है। सर्व प्रकार के स्वाग को सर्व-विर्

कहते हैं। यह सर्व-विरात साधु को होती है साधु के पांच महाव्रतों में इन बारह व्रतीं समावेश हो जाता है। व्यवहार और निश्र से पूर्वोक्त व्रतींका पालन करना और ज्ञान था 'वर तथा निर्जरा में खाला-परिशाम को स्थि

करना ही निश्चय-चारित्र है। इस निश्चय-चारि त्रके दो मार्ग हैं—१ उत्सर्ग २ अपवाद। उंकु

तीच्य परियाम का रहना उत्सर्ग मार्ग है औं उस उत्सर्ग को मजबून करने के लिये जो कार यों या निमित्तों की मचना की जाय यह अप बाद-मार्ग है। कहा है कि:— "मंघरणिम्म अमुद्ध दृष्हिब गियहन-देत्रपाण हि आउर-दिद्द नेयां, नं चवहियं असंघरणे॥" ्ञर्यात जब तक साषक-भावको वाधा न पहुँचे तब तक निषेध का सेवन न करना चा-हिपे और साधक-परिणाम न रह सकता हो तब

हिंगे और साधक-परिणाम न रह सकता हो तव निषेष का आचरण करे। आंत्मा-गुण की हड़ता के जिये जो किया जाय वह अपवाद माग है।

तेवीसमें बोले साधुजीका पांच महात्रत १ पहेला महात्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा अकारे जीव की हिंसा करे नहीं, करावेनहीं

अकारे जीव की हिंसा करे नहीं, करावे नहीं करतांने भलो जाएं नहीं; मन वचन काया करीं; तीन करएं, तीन जोगसे। दूसरा महात्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्र-

२ दूसरा महात्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्र-कारे भूठ बोले नहीं. बोलावे नहीं, बोलताने भलो जाणे नहीं : मन. वचन काया करी कीन करण नीन जोगसे । ३ तीसरा महावनमें साधुजी महाराज सर्वथा

भाग परस्य तान जागत र ३ तीसरा महात्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं करावे नहीं. करता ने

भलो जाएँ नहीं ; मन वचन कांग की तीन करण तीन जोगसे।

४ चोथा महात्रत में साधुजी महाराज सर्वण

प्रकारे मेंथुन सेवे नहीं; सेवावे नहीं; सेवती

११ त्रांक एक इन्यारह को-भांगा उपजे <sup>त्र</sup>

ने भलो जाए। नहीं; मन वचन कार्या करी

तीन करणः तीन जोगसे। ५ पांचवां महावतमें साधजी महाराज सर्वधा प्रकारे परिप्रह राखे नहीं रखाने नहीं; <sup>राहा</sup> ताने भलो जाएं। नहीं; मन वचन काषा करी; तीन करण, तीन जोगसे। चोवीसमें वोले भांगा ४६ को जाए पर्योः in !! !? !? !! ?! ?? ?! ?! !! 우수 수 은 음 음 을 를 즐긴 भागो ह बाँ १८ वाँ २९ वाँ ३० वाँ ईहे वाँ औ वाँ ४५ वाँ ४६ वाँ तक।

एक करण एक जोग सुं कहेणा-१ करूं नहीं मनता, २ करं नहीं वायसा, ३ करं नहीं कायसा १ कराउं नहीं मनसा, ५ कराउं नहीं वायसा, ६ कराउं नहीं कायसा, ७ ध्रणुमोटुं नहीं मनसा. इस्मोटुं नहीं वायसा, ६ ध्रणुमोटुं नहीं कायसा।

१२ श्रांक एक घारहको-भांगा उपजे नवः एक करण दोय जोग सें कहणा-१ करूं नहीं मनसा कृपयसा,२ करुं नहीं मनसा कायसा, ३

गनसा कृत्यसा, २ ५,६ नहां मनसा प्राप्ता, २ ६८६ नहीं वायसा कायसा. २ कराउं नहीं मनसा वायसा, ५ कराउं नहीं मनसा कायसा.६ वराउं नहीं वायसा कायसा. ७ धरणुमोद् नहीं मनसा वायसा, ≈ धरणुमोद् नहीं मनसा वायसा. ३ धर्माद् नहीं वायसा कायसा ।

्राष्ट्र महा पापसा पायसा । १३ झांक एक तेरह का-भागा उपने नीन एक करण तीन जीग ने कहेगा । कर्नु नहीं मनसा पापसा कापसा । कराउ नहीं मनसा अ

4,

सारुपाजन-प्रस्तापालयः] ्रभुर् विद्योग्त पोलका शाकहा

नहीं मनसा फायसा, ६ करूं नहीं घरणमोदुं नहीं वायसा कायसा. ७ कराउ' नहीं श्रगुमोद्द नहीं मनसा वायसा, = कराउं नहीं अणुमोद्दं नहीं मनसा कायसा ६ कराउं नहीं व्यणमोद्

नहीं वायसा कायसा। २३ श्रांक एक तेवीस की-भांगा उपजे तीन, दोय करण तीन जोगसे कहेणा-१ करुं नहीं कराउं नहीं मनसा वायसा कायसा, २ करूं नहीं अण्मोद् नहीं मनसा वायसा कायसा, ३ कराउं नहीं अणुमोद्धं नहीं मनसा वायसा

कायसा । ३१ श्रांक एक एकतीस को-भांगा . ऊपजे तीन; तीन करण एक जोगसे कहेणा-१ कर नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा,र करूं नहीं कराउं नहीं छाणुमादं नहीं वायसा, ३ करूं नहीं

कराउं नहीं अणमाद् नहीं कायसा । ३२ श्रांक एक वर्त्तास को-भांगा उपजे तीन.



(भेद) होती हैं: जिस में प्रत्याख्यान करने वाले

की नव सेरी वन्ध होजाती है। ७२ खुली न्हती हैं इस का वोध यन्त्र से कीजिये।

कर नहीं वरहा कर नहीं वरहा कर नहीं वरहा कराउ नहीं करहा कराउ नहीं क	10°	•		<u>-</u>		•		•	<u> </u>	F 11	-
	•	1.	1.	-	1-0	•	١	~	Ŀ	·	
	•	•	ŀ	ŀ	1 .	1-		•	·	<u>  • </u>	-
	<u>.</u>	1.		·	[~	1 .	T	•	•		
	•	<u>  •</u>	1.	-	•	•	T	•		•	ĺ
		Ŀ	~	•			Ţ٠	•	۰	•	l
	•	_			·		1.	Ī	٠	•	
	~	•	•	٠	۰	۰	1.	Ì	•	•	
कक नहीं व्यस्त कर नहीं कायसा कराऊ नहीं कायसा कराऊ नहीं कायसा कराउ नहीं कायसा पहुसांदू नहीं कायस पहुसांदू नहीं करायस	:		:			1			:	:	
	फरुं महो मनसा	कक नहीं वयसा	कर्ड नशुँकायसा	कराऊ नहीं मनसा	कराऊ नहीं ययसा	कराउ महीं कायसा	यनुमाद् मही मनसा	Manna and and	Photo Inc. Tours.	धनुमोद् मदी कावता	

Same and the same

अधिक र साई में एक मेरी वस्प होती है. बाट मंत्रये' एकी गानी हैं और सबंदर् मृत्यि मैं बहती हर जावी हैं. ७५ मुकी रहनी हैं. घर ीलु हो नद संर्थायें रक जाती हैं वे यह हैं:---

रे । र्र । द्र । द्र । द्र । प्र । प्र । द्र । ें (१ व्हारामुक्त ७२ जैसेकिन्श । ३ । ४ । ४ । है। ७१ चार १२०१० ११ १२ ११३ १४ १ देश १६ । १७ । १८ । १८ । २० । ० । २२ । <sup>२३ ।</sup> २८ । २४ । २६ । २७ । २**८ । २६ । ३०** । भ इस्। इद्या इष्टा इष्टा इष्टा इष्टा 🤃 1 કલાવા કરા કરા કરા કરા કરા કહા १९। ४८ । ४८ । ५० । ० । ५२ । ५३ । ५८ । <sup>∦8</sup>.146139142146160101 €21 <sup>१३</sup> । ६४ । ६४ । ६६ । ६७ । ६८ । ५६ । ७० । ११७२।७३।७४।७४।७६।७७।७≈। <sup>561</sup>=०।०। इस प्रकार ५२ सरा खर्ला रहती है। ६- नव स्क जाती है। एप्ट १२४ के यंत्र से देखी यह एकादश झह का विवया किया गया।

सिंहवाज़ेन-मत्पालय] १४६ [पर्यंत केल्डा में १२ झड़ के भाहों की ६ सेरी होनी ख्रपितु सर्व सेरीयें =१ हैं, ऊन में १ भड़ की सेरी, उनमें २ रुकी खुली ७, सर्व भाहों की से

रुकी १८ खुली ६३ । रुकी सेरी यह हैं यथा—११२ । १० । ११ २० । २१ । ३१ । ३२ । ४० । ४२ । ५० । ५

दश । दर । ७० । ७२ । ८० । ८१ । पर्व रा रोप ६३ खुली वे यह हैं ०० । ३ । ४ ।

शप ६३ खुताव यह ह ००। ३१४ १९८१ ६। ७। ⊏। ६।०। ११।०। १३। १८। १६। १९। १⊏। १६। ००। २२। १३। १९

१६ । १७ । १८ | १६ | ०० | २२ | २३ | १९ २५ । २६ । २७ । २८ | ३० | ०० | ३

द⊏। इहा । ०। ७१। ०। ७३। ७४। ७४। ७६। ५०। ७⊏। ४६।००। यह सर्व ६६ हुई

( 683 )										
.	•	•	•	•	۰	۰	~	~~		
-			0	•	•	~	٥	~-		
- 1	•		0	0		~	~	°		
-	•	<del>!                                    </del>	1 0	a:		°	•	°		
		. •	<del>  -</del>	•		1 °	•	°		
		<del>                                     </del>	1 ~	   ~·	1 .	i.	10	·		
,	-	<u> </u>	10	┼-	<u>;</u>	1.	0	1.		
-		<del> </del>	+-	+-	i.	<del> </del>	10			
- 2	3	1	╀.	+-	1.	10	T•			
	"	ᆜ_		<del></del> -	<del></del>	┾╌	十一	<del> </del>		
क्रम नहीं धननी प्रयुक्त	THE PERSON NAMED IN		कर्म ताहा प्रथम भावना		म राह्र कर्ण नुयस्ता क्लायस्ता	स प्राप्तः नहीं पनस्य प्रयस्त	मनामानु सन्। मनमा पद्मामम्।	तःमातः वर्गं चयस्य कामसा		

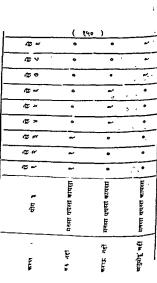


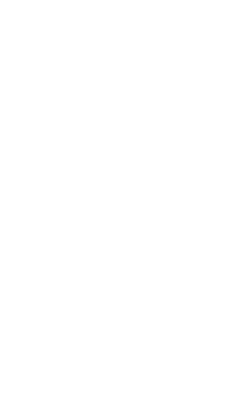
भाक्ते में तीन सेरीयें रकती है ६ खुली रहती हैं

जैसे कि— ् १।२।३।१३।१४।१५।२५।२५।२६।२७। एवं स्टब्सी।

री ना हा रहा रक्षा रूपा न्यान्दी नवा पर्व ह सकी। इसी सेपी रूट हैं जैसेकि— वावा वाक्षा पार्व 101८। हा रूपार्थ । रूपावा वावा गृही रूपार्थ । रूपार्थ । रूपार्थ । रूपावा वावा गृही रूपार्थ । रूपार्थ । रूपार्थ । रूपार्थ । रूपार्थ । वावा वावा

रार्वा यह सर्वे १८ सेरी खुकी रहती हैं इस प्रकार त्रयोदश्वें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हुआ और यह तर्व विवर्ण यन्त्र से देखिये।





ग्योस योलका योकड़ा ]` १५२' [ सेठियातेत प्रव्यात बुली सेरीये ६३ यह हैं---

। १५। १६ । १७। १८। १६ । २०। ०। । २२<sup>। २३</sup>। १५ । २६ । २७ । ० । २१ । इ० । इंश इर्रा इर्रा ११

र्द । इव १०। इह । स्रवः सर्वासर । सर्वे १०। सर्वः स्र 80 1 0 1 88 1 40 1 47 1 42 1 49 1 6 1 <sup>44</sup> 1 <sup>48 1</sup>

प्टाईकाका देश देश। देश देश | देश | देश | देश |

90 | 0 | 02 | 02 | 08 | 04 | 05 | 03 | 0 | 0 | 0 | 15 | 50 | 0 एवं ६३ । यह सर्व विवर्ण यन्त्र से देखि<sup>ये</sup>

्र । २।३।०।५१६। ७।८।१।१०। ०११<sup>९११</sup>

करा ६ मारी बाजुगायु नाही करा ६ मारी बाजुगायु नाही करा ६ नाही बाजुगायु नाही

क्यं सही कराई मही क्यं समा कराई मही क्यं समी मराइ, मधी

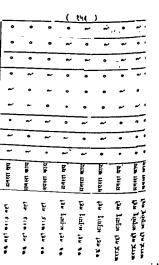
- An' AC



िरिक्षेत्र प्राचारक । १७५ | वसील बीलका की बहुत ्रे १ में १ भे १ भे १ १८ १ १६ १९ १५ १६ था भेरे १ मे मे १ ५ भे १ 129138 1481 481 581 58 1 68 1 68 1 68 1 68 1 १४१५८१ घर १६१ १६२ १६८ १६१ १८८ है। छन् १८८ १४८ १

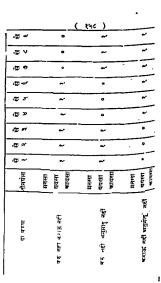
१।८१।इस प्रकार सह हा सेरीये रूपी है और छन सुसी तिरं नित्र विकित्रानुसार है। Clethie: e. f. Stolftel tel ciel क्षे १८११६ १४७ १६८, १६ १८१८ १ द्या ८ १८१ द्या हैं। इन का द्वा हुई। इन १५० वका का विस् । हैं। teletis tot satetti ten teletici

१६१५०: ५१ । ५६ १० १० १५५ (५६ १५७ १० १० १६८) 10158 154 154 155 0 1561 010 108 10 108 1 ं। इन । इह । द र। इह । दर्श पर्य ४५ लुटी सेरियें हैं और मका पिवर्ण दुन्य से देती-



वैविधानीन-प्रत्यालय ] १५७ [ पद्यीस घोलका घोकड़ा इस प्रकार २२ वें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हुआ। ६-अङ्क एक २३ का दो करण ३ योग से कहना चाहिए। करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वयसा कायसा १. करूं नहीं अनुमोट्टं नहीं मनसा वयसा कायसा २, कराऊं नहीं अनुमोर्ड नहीं मनसा घयसा कायसा ३ २३ वें अङ्क के ३ भाक्ते हैं सेरीयें नव [६] हैं। सर्व सेरीयें २७ हैं एक भान्ने की सेरीयें ६ हैं उन में ६ स्की हैं २ खुली हैं, सर्व भाहों की १= सेरीयें स्की हैं. ६ खुली हैं। रकी हुई सेरीये १= यह हैं-१।२।३।४।५।६।१०।११।१२। १६ । १७ । १= । २२ । २३ । २४ । २५ । २६ । २७। एवं १८॥ और खुर्ला मेरीये ह यह हैं-01010101010101010 ०१०१०। १३ । १४। १४। ०१०। ०।

१६।२०। २६।०।०।०।०।०।०। एवं ६ सेरिये खर्ला है। दावा यन्त्रमें पण प्रकारसे।



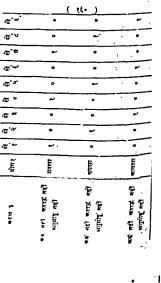
इस प्रकार २३ वें श्लंक का विवय् पूर्ण हुआ। ७-- घड़ एक ३१ का भाई -३। तीन करण एक योग से कहना। करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोर् नहीं मनसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमार नहीं वयसा २. करू नहीं कराऊ

नहीं अनुमोर्ं नहीं कायसा ३। एवं ३॥ २१ वें अङ्ग के २ भद्ग हैं सर्व सेरीयें २७ हें एक भह की ६ सेरीयें हैं उन्हों में रुकी हुई

सेरी २ हैं. खुली सेरीयें ६ हैं. सर्व भङ्गों की रुकी हुई सेरीयें ६ हैं। खुली सरीयें १= हैं। अपितु रुकी हुई संरीयें नव ६ यह हैं। यथा-

१।४।७।११।१४।१७।२१ ।२४। २७। एवं १॥ खुर्ना संरी १८ यह हैं ारा३। टापा हा वादा **हा**१०। १२ । १३ । ० । १५ । १६ । ० । १८ ।

२०।०।२२।२३।८।२५ | २६।०। एवं १८ खुली संगये हैं॥ देखो यन्त्र में पूर्ण विस्तार से



द्धा ११३२ का भाक्ते-३। तीन करण रो २ योग से कहना चाहिए। करूं नहीं गराऊं नहीं अनुमोदृं नहीं मनसा वयसा १, गरूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदृं नहीं मनसा गयसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदृं नहीं गयसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदृं नहीं गयसा कायसा ३। एवं ३॥

३२ वे ब्रङ्क के तीन भङ्ग हैं सेरीयें २७ हैं अपितु एक भागेकी सेरीयें नव हैं उनमें ६ स्की हुई हैं सर्व भङ्गों की १८ स्की है ६ खुली हैं अतः स्की हुई १८ सेरीयें यह हैं—

१।२।४।५।७।⊏।१०।१२।१३। १५।१६।१⊏।२०।२१ २३।२४।२६। २७।एवं१⊏॥खुर्लासर्गयः यह हैं-

००। २४ ।०। १५ ।०। ११ ।०० २२ । ००। २४ ।०। १५ ।०। ११ ।०० २२ । ००। २४ ।००। यह नदस्तीय वुर्ली हैं।

इसका यन्त्र में विस्तार में देखी।



मेंटियाजेन-सन्धातय ] १६० (पर्धास बोलका बोकड़ा

इस प्रकार ३२ वें छाड़ का विवर्ण पूर्ण हुआ। ६--- यङ्क ३३ का भद्ग-१। तीन करण नीन योग से कहना चाहिए। करू' नहीं कराऊ' नहीं अनुमोद्ं नहीं मनसा वयसा कायसा। एवं १॥

३३ वें श्रद्ध का भद्ग एक ही है सेरीये ६

हैं: सब ही रुकी हुई हैं, खुली कोइ भी नहीं है. जैसे कि-

११२१३।४।५।६।८।८। इन्हीं में ख़ली सेरी कोई भी नहीं है देखो यन्त्र में











	1	1	( १६६ ) 	4, 4	<u>.</u>
The second second	मा है।	<b>1</b>	Hailes	म जुल	मोनीही गुरुत, न्त्री, नव् गर
lalts .	4113	E	THE .	ं अध्यान देशे तो अधान ता अधान तारी च्यान तो	E.
unin	中部	r.	; B	ज्यार पुर्व सन्ध्री गाडी ( सम्बर्ध)	224
रिन्त्रिय	४ रुक्तां स्त प्राय्, भव	गीनोपी	*	\$	4
4114	यम			2	त्रस
HIM	नियंत्र क्रोंगेन्द्रिय प्रम	नियों पत्रं स्थिय	वशेष्टिय	2	पशंक्षिय यस
गीम	नियेन	નિયંગમી	भियोग	वनुव	मधेवा
माप	चारिक्य	प्रावदी निर्मे निर्मेशको निर्मेश श्वविभिन्नय पञ्जे निर्मे	मदी निर्मेच <sub>निर्मे</sub> च मेरेन्क्रिय	बनन्त्री (छमुन्दिम्) नन्तुष्य	गसी (मधंत्र) मनुष्य

पच्चीस बोलका चोकड़ा ] श्रथ पच्चीस क्रियाका नाम तथा भावार्थ । १ काइया कियाका २ भेदे-१ अणुवस्य कार्<sup>प</sup> पापसे नहीं निवर्तने से जागे। २ हु<sup>पुउ</sup> काइया-इन्द्रियोंके इष्ट श्रनिष्ट विषय नहीं नियर्तने से जागे। या श्रान्तना

प्रवर्तावे घणा कालसे काया बोसगयानि पाछता रहा। हुवा कायाका पुहस उम किया सामे । २ श्रद्धिगरणीया (श्रघिकरण्) क्रियाका

भेद-१ मंजीजनाहिगरिण्यान्यह मृह हथियार कमि कृदाला इत्यादि संपर्हे <sup>।</sup>

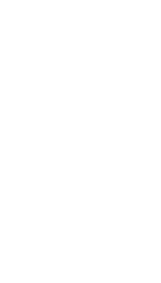
उनकी किया नागे । २ निव्यत्तमाहि <sup>र</sup> गिया-शस्त्र हथियार वरोग नया वनावे ह

मग्मात कगवे उनकी किया सागे।

पार्टामया कियाका दा भेदा-

॰ तात्र पार्टामया-तीवपर इ.प. कर्र





भाया चत्तियाका हो भेद-

र याय भाव वंकण्या-अपनी आत्माके वास्ते ठगाई करे व अपनी आत्मा का खोटा भाव दिपावे खोटा आचरण आचारे खोटा लेख लिखे।

राभाव वंकणया-परायाके वास्ते ठगाई करे, करावे, खोटा आचरण करे तथा करावे, खोटा केख लिखे तथा लिखावे। मिष्या दंसण वत्तियाका दो भेद—

१ उणा इरित मिथ्याट सण-ओझा, अधिका सर्देहे तथा पश्पे उसकी किया लागे।

२ तवाइरित मिध्यादंसण-विपरीत सर्दहे तथा परुपे उसकी किया लागे।

दिद्विया कियाका दो भेद-

१ जीव दिट्टिया-घोड़ा, हाथी, वगेरहने देख-कर नरावे या विसराव तो किया लागे।

२ अजीव दिट्टिया-चित्रामादि आभूपण देख-



मेंद्रेसहेन-प्रयालय] १८५ [पद्यीत योतका योकहा मेता विश्ववाद्या-जीव अजीव का समुद्राय

इक्ठा करना उसकी किया लागे। अपना भला पदार्ध देखकर लोगों आगे प्रशंसा करे याने पोमावतो फिरे तथा अपनी वस्तुने दुसरो सगवे तो राजी हुवे तथा विसगव तो विगजो हुवे तथा नाटक, मेला, तमासा, मनुष्यको फासी देता ( चोर भारता)

मनुष्यका फाता दता (चार मारता) देखे उसकी क्रिया लागे। १५ संहत्यिया क्रियाका दो भेद— ह १ जीव साहत्यिया—जीवने खुदरे हाथसे प-कड़ कर हुए। (मारे ) उसकी क्रिया लागे। २ अजीव साहित्यिया—तलवार, यन्दुक,

भादि पकड़ कर हुँगै ( मारे ) उसकी किया लागे। १६ नेमस्थिया किया उसका दो भेद १ जीव नेमस्थिया - जीव में जीव नांखनेस जैस पनस्पतिमें पारा ३ दे भथवा गुरु बला



६ अणाभीग वत्तियाका दो भेद-

१ अणाउत्त आयणता-असीवधान पेण से चलादिक ने प्रहेण करे वी पहिरे उसकी किया लागे।

२ अणाउत्तपम्मञ्जूषता-उपयोग विना पा-त्रादिक पुँचे उसकी कियो लागे। उपयोग विना शुन्य पूर्ण तथा अज्ञानतासे लागे। २० अणावकेख वर्तियाका दो भेदे—

१ शायशरीरश्रणवकं सवत्तिया-खुँदके श्-रीरसे पाप लागे वैसा काम करे श्रपपति करे उसकी किया लागे।

२ पर शरीर व्यशंबकीखंबित्तियो-हूसिर्राकी श्-रीरसे पाप लागे बेसा कर्म करे परपात करे उसकी किया लागे । इहलोक व परलोकसं विरुद्ध काम करें । इह लोकर्मे निंडा हुवे परलोक विगाड़े बना काम करें ।

२१ पेरजर्वात्तवाका हा अद

. -

तामदाणीसे खींच्या उन कमों का भेद च्यार तरह से करे-१ प्रकृति पुरो -२ स्थिति पर्गे, ३ अनुभाग पर्गे, ४ प्रदेश पर्गे, हप्टान्त जैसे-मेटाको 'आलोय कर लोधो वणायो जब तो प्रयोग किया लागे और पीछ लो-धाने लेकर पेठो. निमकी, खाजा इत्यादिक नाना प्रकार पर्वे वर्णाया ज्व सामुदाणी . किया लागे। ... (पहेलेके समय भेद करे तब अनुन्तर किया, ू दूजे समय तीज समय भेद करे तब पर्पर ्रक्तिया)। २५ इरियावहिंचा क्रिया-वीतरागी तथा केवली ने पहेले समय में लागे दजे समय वेदे तीजे

इति वद्यांस क्षिया समाजन

समय निकरे । ७

 <sup>(</sup>नोट)—इरियावहिया क्रिया गुभ वाका वाबीस क्रिया राम बराम बोनों हा है









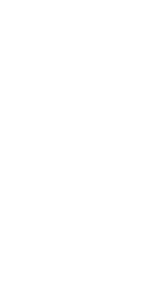














साध्यीने गृहस्थरे घरने दिये बसने धर्मकथा वार्ता धरवा तर्व

(· १२ ) स्त्रीने पिण शंका उपजे कुमील चचवानी राम **छै** ते मणी गृहस्वी चरे साधु बेसवो दूरशको घरजे । पिण जरा परामत्यो हुवे तपरी रोगी प तीनो ने बेसबी कल्पे। साम्र सूत्र दशवेंकालिक सप्त

यन छहा शाधा ५७,५८,५६० में छैं' इत्यादि सुत्रमें चली हैं साधुने गृहस्थरा घरने विषे धेसणी धरज्यो। ते मणी साध्

बोल शिक्षायणा नहीं । यक्षाण प्रमुख देना महीं । विस्तार है यही हुंडीमें छै ते ओय छेणो 🚜 इति १३ बोल 👭

अथ १४ वोल :--साधुने गृहस्परे घर मध्ये जायने माळीया प्रमुखरे विधे जार्य

नहीं केई उतरे छैं तेहनी उत्तर-साधुने स्त्री रहेती हुये ते वराण रहेथो न करेथे। साधूने पुरुष रहेता हुये ते उपाध्य रहेवं

कर्ते। साध्यीने पुरुष रहेता हुचे ते उपाध्य रहेबी न कर्ने माध्यीने स्त्री रहती हुवे ने उपाध्य रहेवी करमे। साम सूत्र 'वेर् कदा उद्देशे पढेले'। तथा साधूने गृहस्थरा घरने मध्य मा जरेंने ग्हेंचा न कच्चे। नधा साध्यीने गृहस्थना धरने मध्य

मामे नहेंने रहवा कर्त्य । साथ सूत्र खेदकरव उद्देशे पहेंहैं हैं क्ट्रा छे । ते भणी साधून गृहस्थरा घर मध्ये लुगाया रहे

हुचे ने घरमें मालियादिक में रहेणो नहीं। वेई घरमें पिण पी **छै, रहयारी धाप करेछे दोप धद्ध नहीं। वेर्ड मालिया अपुर्व** रहेंचे पिच छं रहेवारी थाप पिच करेंग्रे ॥ इति १५ बीछ ॥ "

















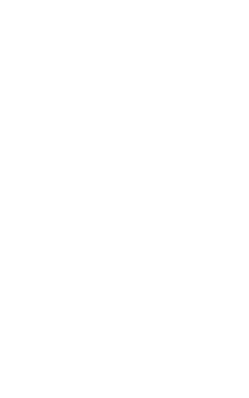








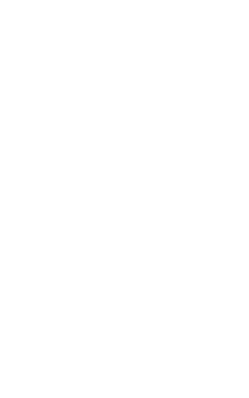
















गाम नगरमें चणी हुये तेहनी स्वयातर टालणीनहीं। 'देहने हों तो भीचरी किम जावें,पणा कोस छे तिणाएं, तेहनी शरावाळा किम मांपोजे। 'वेंद्रे आज तो सुरावण हुये नेहनी हये, स्वयान पणीपरामात्र प्रणा कोम छे ते गाम मानुष्य करे रहे छे तेहनी क्य सञ्चातर पांपे छें। साधु रहे ते गाम नगरमें सवायार टर्गो किम कहिये। हाता होयं ते विचार जोगी गृहित ए० बीछ।

## अथ ४१ वोल.—

हाथमें छाठी प्रमुख तथा भोघा प्रजणीरी डांडी बादि <sup>जन</sup> दीठ एकसु अधिक राखनी नहीं। नथा रङ्ग स्याही डोरा म्यु खरो घणो सञ्चो करणो नहीं, कई करें छै तेहनो उत्तर-ध्या-हारसूत्र उद्देसे आउमें। साठ यरसरा धिवरने श्यारे <sup>उपा</sup>-रण ओर साधुसु' अधिक राजना कक्षां । तिणमें हाधवे छड़ो रा-खनी कही बुढ़ारी अपेक्षा, रोगी, गिलानी, गोडा प्रमुख दुःखे <sup>जर्</sup> मोर साधु पिण दाधमें छड़ी राखनो तथा प्रमाण गिणतीर्छ उपिय अधिक रास्त्रे तो चौमासी इंड आवे, साम्र सूत्र—निर्सीय उद्देशे १६ में। अध फेड्छडी ओघा प्रमृत्तरी डांडी घणी सारी अधिकी राख्न मेले छे तथा स्याही, हींगलु, हरताल प्रमुखरा तथा डोरा सूत मेंण प्रमुख दश एझरह शरस् अधिक राहती रीमें छै। काई पूछे जद कहें ए खालसेका है तथा राजरा छै. इम क्हेना हिसे छ । साजूने पछेवडी प्रमुख सीवाने डीरा, <sup>हिस</sup> वाने स्याही प्रमुख, पात्रा रंगवाने होगलु प्रमुख राखणा ते रीत











( es )

हार न हुये तो घारणा ब्ययहार धापे ॥ ४॥ घारणा ब्यवहार न हुवे तो केड़ाफेड चल्यो कावे ते जीत ब्यवहार धापे॥५॥

ष पांच ध्यवहार प्रवर्त्तावतो धको ध्रमण निर्द्रश्य बाहानो बान राधक हुए साल सुत्र-ध्यवहार उद्देशे दसमें। दिवडा आगर्न ध्यवहार तो नहीं छे सूत्र ध्यवहार प्रयत्तें छे ते भणी सूत्रमें मा-घुने कार्यकरया कहा। ही ते कार्यकरया। पिण सुत्रमें कार्यकर्यः। घरज्या ते करणा नहीं। येर्ड सूत्रमें साजूने कार्य करणा गरण ते करवानी थाप करे छै, जीत व्यवहार नो नाम लेवे छै पिन

स् त्रमें घरज्यो तेहनो जीत ब्यवहार धापीजे नहीं। केई परंपराष्ठ

सेवतो शाबे पीछै सूत्रमें शाय जावे.प बोल साधूने सेवणी नहीं इम जाणे तो ते बोल छोड़ देणो। पिण मनरी टेक राखणी नहीं। जीत ब्ययहार तो आप आपरा मतमें सगलारे छैं। पर परासु' दान दयादिकरा घोळ सेवता आवे छै। फिनायकने दो<sup>ष</sup> पिण भासे नहीं त्यारी साधु-पणी किम जाये। पिण सूत्र वर-ज्या ते योल जीत व्यवहार में थापीजे नहीं ॥ इति ४६ बोल ॥

मध्यस्य बोलनी सार, हुंडी कीधी चूंपसु । कृषि चतुरभुत उदार, आगम साल देई करी ॥ १॥ अज्ञाण पणमें काय चिरुद्ध वचन आयी हुवे ।

मिच्छमि दुकड माथ, अनत सिद्धारी सावसुं ॥ २ ॥ ॥ इति मध्यम्य योजना हुडो समाप्तम् ॥





